भारतीय रेल

सितंबर 2026 | मूल्य ₹20

मुंबई लोकल

सदी पुरानी लाइफलाइन का हो रहा है कायाकल्प

मुंबईकरों को मिलेंगी 238 नई एसी ईएमयू



- **वित्त वर्ष 26-27 बजट अनुदान:** ₹2,93,030 करोड़
- **जुलाई 2026 तक खर्च:** ₹1,14,973 करोड़ (लगभग 39%)

2633+ RKM कवच 4.0	99.6+ प्रतिशत विद्युतीकरण	1340 अमृत भारत स्टेशन	142 गतिशक्ति टर्मिनल	19700+ कि.मी. सुरक्षा बाड़	5.56+ लाख युवाओं को मिला रोजगार

AAL® Autometers Alliance Ltd

Pegasus ◆ UPS®

POWERING THE **RAIL TRANSPORT** EFFICIENTLY AND INTELLIGENTLY

- POWER ELECTRONICS & PROPULSION SYSTEM
- DATA ACQUISITION AND CONTROL DEVICE
- TRACTION SWITCHGEAR AND PANELS
- DISPLAY AND PASSENGER INFORMATION SYSTEM
- UNINTERRUPTIBLE POWER SUPPLIES





MAKE IN INDIA COMPANY

ENERGY & EFFICIENCY
SAFETY & RELIABILITY

ISO 9001:2015
14001:2015
45001:2018

IRIS® Certification

C-60-63, Sector-57, Noida - 201 307 (U.P.) India, mktre@autometers.com, www.autometers.com

भारतीय रेल

रेल मंत्रालय की एकमात्र हिंदी मासिक पत्रिका

आरंभ: अगस्त-1960 | वर्ष: 67 | अंक: 02 | राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित पत्रिका | सितंबर-2026 | मूल्य: ₹20

संपादक मंडल

सतीश कुमार
अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड

मंजूषा जैन
सदस्य वित्त, रेलवे बोर्ड

संजीव नारायण माथुर
सचिव, रेलवे बोर्ड (प्रभार)

शिवाजी मारुती सुतार
कार्यकारी निदेशक, सूचना एवं प्रचार (प्रभार)

योगेश अवस्थी
संपादक

संपादकीय कार्यालय
संपादक, भारतीय रेल,
कमरा नं. 411, रेल भवन,
रायसीना रोड, नई दिल्ली-110 001
editorbhartiyarailrb@gmail.com

विज्ञापन व सदस्यता हेतु संपर्क
संजीव गुप्ता
व्यापार प्रबंधक
कमरा नं. 310, रेल भवन
रायसीना रोड, नई दिल्ली-110 001
bmpr310rb@gmail.com



मुंबई लोकल ट्रेन
भारतीय रेल
आवरण

इस पत्रिका में छपी हर सामग्री का सम्बन्ध, जब तक विशेषत: स्पष्ट न लिखा जाए, किसी सरकारी सूत्र से न समझा जाए।

© भारतीय रेल

संपादकीय

भारतीय रेल : बढ़ती क्षमता, बेहतर सफर

भारतीय रेल आज केवल पटरियों और ट्रेनों का विस्तार नहीं कर रही, बल्कि एक ऐसी आधुनिक रेल व्यवस्था तैयार कर रही है, जिसमें बढ़ती मांग के अनुरूप क्षमता, सुरक्षा और यात्री सुविधाएँ साथ-साथ विकसित हों। नई रेल लाइनें, मल्टीट्रैकिंग, आधुनिक सिग्नलिंग और उन्नत सुरक्षा तकनीक इस बदलाव की महत्त्वपूर्ण कड़ियाँ हैं।

वित्त वर्ष 2026-27 में भारतीय रेल को ₹2,93,030 करोड़ का बजट अनुदान मिला है, जिसमें से जुलाई 2026 तक ₹1,14,973 करोड़ यानी करीब 39 प्रतिशत का उपयोग किया जा चुका है। दिनांक 1 अप्रैल, 2026 तक लगभग ₹8.31 लाख करोड़ की लागत वाली 514 बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है। इनमें 169 नई लाइन, 29 गेज कन्वर्जन और 316 दोहरीकरण परियोजनाएँ शामिल हैं, जो करीब 40,000 कि.मी. क्षेत्र को कवर करती हैं।

अब ध्यान उन मार्गों पर भी है जहाँ यातायात का दबाव सबसे अधिक है। करीब 11,000 कि.मी. में फैले सात उच्च घनत्व वाले रेल मार्ग देश के लगभग 41 प्रतिशत रेल यातायात को संभालते हैं, जबकि नेटवर्क में इनकी हिस्सेदारी करीब 16 प्रतिशत है। दिल्ली–हावड़ा, हावड़ा–चेन्नई, चेन्नई–मुंबई, मुंबई–दिल्ली, दिल्ली–चेन्नई, मुंबई–हावड़ा और दिल्ली–गुवाहाटी जैसे मार्गों को चार-लाइन वाला बनाने से यात्री और माल परिवहन के लिए अतिरिक्त क्षमता उपलब्ध होगी।

मुंबई में 238 नई एसी ईएमयू रेक का निर्माण इसी व्यापक सोच का हिस्सा है। आईसीएफ चेन्नई, आरसीएफ कपूरथला और एमसीएफ रायबरेली में बनने वाली इन रेक की पहली आपूर्ति 2027 से शुरू करने और 2030 तक पूरी स्वीकृत संख्या तैयार करने की योजना है। इससे बुनियादी ढाँचे के विस्तार के साथ ट्रेनों की उपलब्धता भी सुनिश्चित होगी और यात्रियों को अधिक आधुनिक एवं आरामदायक सफर का विकल्प मिलेगा।

सुरक्षा के मोर्चे पर भी तकनीक और निवेश दोनों को गति दी गई है। दिल्ली–मुंबई और दिल्ली–हावड़ा मार्गों पर 2,633 रूट कि.मी. में कवच 4.0 सफलतापूर्वक शुरू किया जा चुका है। जून 2026 तक कवच संबंधी कार्यों पर ₹3,875 करोड़ का उपयोग हुआ है। सुरक्षा संबंधी कार्यों पर खर्च भी वित्त वर्ष 2013-14 के ₹39,200 करोड़ से बढ़कर वित्त वर्ष 2025-26 में ₹1,17,693 करोड़ हो गया है।

रेलवे की भूमिका केवल बड़े प्रोजेक्ट और तकनीक तक सीमित नहीं है। जरूरत की घड़ी में उसकी मानवीय संवेदनशीलता भी सामने आती है। हाल ही में सूरत से अहमदाबाद के बीच वंदे भारत एक्सप्रेस से जीवित हृदय का सफल परिवहन किया गया। वहीं, हावड़ा–सीएसएमटी मेल में एक गंभीर मरीज को यात्रा के दौरान ऑक्सीजन की आवश्यकता होने पर रेलवे कर्मचारियों ने विभिन्न नियंत्रण कक्षों और मेडिकल टीम के साथ समन्वय कर समय पर ऑक्सीजन सिलेंडर उपलब्ध कराया।

आपको हमारा यह अंक कैसा लगा, हमें जरूर बताएं।

विषय सूची

हर घर तिरंगा अभियान रेल मंत्री ने रेल भवन में तिरंगा रैली का किया नेतृत्व	7
ग्वालियर-चंबल क्षेत्र का रेल संपर्क हुआ और मजबूत	8
उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री और रेल मंत्री ने नेपाल बाढ़ पीड़ितों को दी श्रद्धांजलि	10



11 **रेल मंत्री ने केंद्रीय मंत्रियों को रेलवे के**
'वॉर रूम' की कार्यप्रणाली से कराया अवगत

आनंद विहार और उधना स्टेशनों पर बढ़ेगी यात्री सुविधाएँ	12
मुंबईकरों का सफर होगा और सुगम 238 एसी ईएमयू रेकों के निर्माण की तैयारी	13
देश के उच्च घनत्व वाले रेल नेटवर्क को चार-लाइन वाला बनाने की योजना	14
केंद्रीय मंत्रिमंडल ने चार राज्यों में मल्टीट्रैकिंग परियोजनाओं को दी मंजूरी	15
भारतीय रेल की क्षमता एवं यात्री सुविधाओं के विस्तार की ओर बढ़ते कदम	16

कश्मीर में बदलाव की बही बयार यूएसबीआरएल से खुल रहे मौसम में तरक्की के द्वार	18
विकास की रफ्तार पर भारतीय रेल	26
भारतीय रेल में इन्फ्रास्ट्रक्चर का महा अभियान	27
भारतीय रेल की बड़ी छलांग माल ढुलाई में नया कीर्तिमान	28
रेलवे ने दी कंटेनर ट्रेन ऑपरेटरों को बड़ी राहत, अब एक लाइसेंस, पूरे देश में परिचालन	30
वंदे भारत बनी लाइफलाइन पहली बार जीवित हृदय का सफल परिवहन	32
रेलवे की तत्परता से चलती ट्रेन में मानवता की मिसाल	32
मेक इन इंडिया का जलवा **बांग्लादेश की पटरियों पर दौड़ेंगे** कपूरथला में बने आधुनिक सुविधायुक्त रेक डिब्बे	33



34 **रेलवे ने शुरू किया 'स्वच्छ पेयजल**
अभियान'

भारतीय रेल की खाद्य गुणवत्ता पर कड़ी नजर	35
आईआरसीटीसी वॉर रूम की कार्यप्रणाली की समीक्षा	36
डिजिटल होती भारतीय रेल यात्रियों की पहली पसंद रेलवन ऐप	37
सशक्त रेलकर्मी, सुरक्षित सफर सालाना 6 लाख रेलकर्मियों को प्रशिक्षण	38
सेवा का सर्वोच्च सम्मान 15 रेल जवानों को मिला राष्ट्रपति पदक	39
आग से सुरक्षा, यात्रियों की रक्षा भारतीय रेल ने की बहुस्तरीय अग्नि सुरक्षा व्यवस्था	40
रफ्तार और सुविधा का नया तालमेल भारतीय रेल ने विभिन्न ट्रेन सेवाओं को दी मंजूरी	43
दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे ने विकसित किया अभिनव रेन वाटर इन्ग्रेस टेस्ट बेंच	45
मुंबई–अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना विद्युतीकरण कार्य ने पकड़ी रफ्तार	46
भारतीय रेल ने हर्षोल्लास के साथ मनाया स्वतंत्रता दिवस	48
अमृत स्टेशन	50
धारवाड काव्यात्मक स्मृतियों का स्टेशन *नवीन एन नवलगुंद*	57
प्रधानमंत्री संग्रहालय तकनीकी क्रांति के सहारे अतीत से संवाद *गरुड़ राहुल दिलीप*	59
नवाचार का नया ट्रैक : दक्षिण रेलवे में स्वदेशी तकनीक का दम *आर. एन. सिंह*	62
फिल्म संगीत के स्वर्ण काल की अंतिम पुरोधा : आशा भोसले *प्रदीप सरदाना*	67
वर्ष - 2027 राजपत्रित और प्रतिबंधित अवकाश	69



मुंबई को रेलवे का बड़ा इंफ्रास्ट्रक्चर बूस्ट
238 एसी लोकल और हाई-डेंसिटी कॉरिडोर पर बढ़ेगी क्षमता *राजेन्द्र बी. आकलेकर* 54



"रेलवे के इलेक्ट्रिफिकेशन का कार्य वर्ष 1925 में शुरू हुआ, लेकिन 90 वर्षों में केवल 30% रेल नेटवर्क का इलेक्ट्रिफिकेशन हुआ था। हमने बीते दशक में लगभग शत प्रतिशत काम पूरा कर दिया है, जिससे डीजल की बचत के साथ पर्यावरण संरक्षण को भी बढ़ावा मिल रहा है।

सप्तधारा की चौथी शक्ति है, गति शक्ति। देश के अंदर सीमलेस फास्ट कनेक्टिविटी पर हमें बल देना होगा। शहरों को हमें हाई स्पीड रेल से जोड़ना होगा।

भारत ने ईंधन के एक नए क्षेत्र को भी छू लिया है। देश ने पहली हाइड्रोजन से चलने वाली ट्रेन शुरू की है एवं दुनिया में हाइड्रोजन ट्रेन के क्षेत्र में भी भारत ने अपना झंडा गाड़ दिया है।

पिछले 12 वर्षों में डिफेंस प्रोडक्शन करीब 4 गुना बढ़ा। खादी और ग्राम उद्योग का उत्पादन करीब 5 गुना बढ़ा, इलेक्ट्रॉनिक मैन्युफैक्चरिंग करीब 7 गुना बढ़ा। आधुनिक रेलवे कोच का निर्माण 21 गुना बढ़ा।

2014 में करीब 9,000 फाटक ऐसे थे जो अनमैन्ड थे। हमने मिशन मोड में गत दस वर्ष में इन अनमैन्ड क्रॉसिंग को समाप्त कर दिया।

2014 से पहले हमारी ट्रेनों में जहाँ लगभग 12,000 बायो टॉयलेट लगाए गए, वहीं 2014 के बाद ट्रेनों में 3.6 लाख से ज्यादा बायो टॉयलेट लगाए गए। यानी 97% से ज्यादा बायो टॉयलेट पिछले 12 वर्षों में लगे हैं।

6,500 से अधिक स्टेशनों पर इलेक्ट्रोनिक इंटरलॉकिंग की व्यवस्था की गई है। साथ ही, 10,000 से अधिक लेवल क्रॉसिंग गेट्स को भी इंटरलॉकिंग से जोड़ा जा चुका है।"

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

माननीय प्रधानमंत्री के 15 अगस्त को लाल किले से दिए संबोधन तथा अन्य कार्यक्रमों में व्यक्त विचारों के प्रमुख अंश

हर घर तिरंगा अभियान

रेल मंत्री ने रेल भवन में तिरंगा रैली का किया नेतृत्व

भारतीय रेल में देशभक्ति पर आधारित विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन

केंद्रीय रेल, सूचना और प्रसारण एवं इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर दिनांक 14 अगस्त, 2026 को रेल भवन परिसर में तिरंगा रैली का नेतृत्व किया। रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी सतीश कुमार, बोर्ड के सदस्य, महानिदेशक और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने रैली में भाग लिया और देशभक्ति एवं राष्ट्रीय एकता की सामूहिक भावना को पुनः स्थापित किया।



भारतीय रेल 'वंदे मातरम्' के 150 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में तीसरे चरण के तहत एकीकृत रूप से राष्ट्रव्यापी 'हर घर तिरंगा' अभियान में सक्रिय रूप से भाग ले रही है। इसके तहत रेल भवन में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, ताकि इस प्रतिष्ठित राष्ट्रीय गीत के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय महत्त्व को उजागर किया जा सके।

समारोह के अंतर्गत, दिनांक 10 अगस्त, 2026 को रेल भवन में 'वंदे मातरम् की 150 वर्ष की यात्रा' विषय पर एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम ने अधिकारियों को राष्ट्रीय गीत के समृद्ध इतिहास और चिरस्थायी विरासत से परिचित होने का अवसर प्रदान किया।

रेल भवन में दिनांक 11 अगस्त, 2026 को 'देशभक्ति गीत' विषय पर एक विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक भागीदारी देखी गई और संगीत प्रस्तुतियों के माध्यम से देशभक्ति की भावना का उत्सव मनाया गया। दिनांक 14 अगस्त, 2026 को होने वाले समारोहों के एक भाग के रूप में, रेल भवन में 'वंदे मातरम्' का सामूहिक गायन भी आयोजित किया गया।

'हर घर तिरंगा' अभियान के तहत आयोजित ये उत्सव राष्ट्र की विरासत और आधुनिक एवं प्रगतिशील भारत की आकांक्षाओं के प्रति भारतीय रेल की सामूहिक भागीदारी को दर्शाते हैं।■

ग्वालियर-चंबल क्षेत्र का रेल संपर्क हुआ और मजबूत

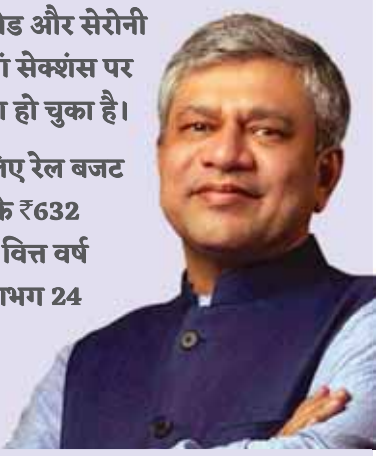
कैलारस-सबलगढ़-बीरपुर गेज-परिवर्तित रेल खंड का किया गया उद्घाटन
ग्वालियर-कैलारस रेल लाइन को बीरपुर तक विस्तारित करने को दिखाई गई हरी झंडी

केंद्रीय रेल, सूचना और प्रसारण एवं इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव, संचार और पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री ज्योतिरादित्य एम. सिंधिया और मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने दिनांक 18 अगस्त, 2026 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से मध्य प्रदेश में परिवर्तित कैलारस-सबलगढ़-बीरपुर रेल खंड का उद्घाटन किया। उन्होंने ग्वालियर-कैलारस रेल लाइन को बीरपुर तक विस्तारित करने को हरी झंडी दिखाई।

ग्वालियर-कैलारस रेल सेवा का बीरपुर तक विस्तार होने से बीरपुर, विजयपुर और सबलगढ़ को ग्वालियर से सीधा रेल संपर्क मिलेगा, जिससे ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में अधिक किफायती और सुविधाजनक यात्रा विकल्प उपलब्ध होंगे। इससे ग्वालियर में शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और रोजगार के अवसरों तक पहुँच में सुधार होगा, साथ ही क्षेत्र में स्थानीय व्यापार और क्षेत्रीय आर्थिक गतिविधियों को भी बढ़ावा मिलेगा।

रेल मंत्री ने कहा कि गेज परिवर्तन से लाभान्वित होने वाले 56 कि.मी. लंबे कैलारस-बीरपुर खंड का उद्घाटन ग्वालियर-चंबल क्षेत्र के लिए एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। इससे मुरैना जिले की बामोर, जौरा,

- **कैलारस-बीरपुर गेज परिवर्तन से मुरैना और श्योपुर जिलों के 100 से अधिक गांवों को लाभ होगा।**
- **बीरपुर-सेरोनी रोड और सेरोनी रोड-श्योपुर कलां सेक्शंस पर काम लगभग पूरा हो चुका है।**
- **मध्य प्रदेश के लिए रेल बजट वर्ष 20 09-14 के ₹632 करोड़ से बढ़कर वित्त वर्ष 2026-27 में लगभग 24 गुना की वृद्धि के साथ ₹15,188 करोड़ हुआ।**



अश्विनी वैष्णव, रेल मंत्री



अश्विनी वैष्णव, रेल मंत्री | *डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री मध्य प्रदेश* | *नरेन्द्र सिंह तोमर, विधान सभा अध्यक्ष मध्य प्रदेश*

ज्योतिरादित्य एम. सिंधिया, संचार और पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री | *कैलारस* | *कैलारस (श्रोतागण)*

ग्वालियर और चंबल क्षेत्र की विविध रेल परियोजनाओं का वर्चुअल माध्यम से उद्घाटन करते हुए रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव, संचार और पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री ज्योतिरादित्य एम. सिंधिया तथा मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव

शिवपुर और कराहल तहसीलों के 100 से अधिक गांवों के लोगों को लाभ होगा।

रेल मंत्री ने बताया कि रेल संपर्क को प्राथमिकता के आधार पर आगे श्योपुर कलां और अंततः कोटा तक बढ़ाया जाएगा, जिससे यह क्षेत्र प्रमुख शैक्षणिक और औद्योगिक केंद्रों से जुड़ जाएगा। उन्होंने कहा कि 117 कि.मी. लंबे बिरलानगर-बीरपुर खंड पर काम हाल के वर्षों में तेजी से आगे बढ़ा है। इस क्षेत्र के विभिन्न खंडों के चालू होने की प्रक्रिया का विवरण इस प्रकार हैं।

खंड	लंबाई	यात्रियों और यातायात के लिए खोला गया
बिरलानगर - रायरू	11 कि.मी.	मई 2023
रायरू - सुमावली	22 कि.मी.	अगस्त 2023
सुमावली - जौरा	14 कि.मी.	नवंबर 2023
जौरा - कैलारस	14 कि.मी.	फरवरी 2024
कैलारस - सबलगढ़	29 कि.मी.	वर्ष 2025
सबलगढ़ - बीरपुर	27 कि.मी.	वर्ष 2026

रेल मंत्री ने कहा कि बीरपुर से सेरोनी रोड (37 कि.मी.) और सेरोनी रोड से श्योपुर कलां (33 कि.मी.) तक के अगले खंड का काम लगभग पूरा हो चुका है। ग्वालियर-श्योपुर कलां रेलवे लाइन अगले कुछ महीनों में तैयार हो जाएगी और यात्रियों के लिए उपलब्ध हो जाएगी। मंत्री ने कहा कि यह परियोजना कई महत्त्वपूर्ण स्टेशनों को आपस में जोड़ेगी और मध्य प्रदेश में रेल अवसंरचना के विकास में योगदान देगी।

मध्य प्रदेश के लिए रेल बजट वर्ष 2009-14 के ₹632 करोड़ से बढ़कर वित्त वर्ष 2026-27 में लगभग 24 गुना की वृद्धि के साथ ₹15,188 करोड़ हो गया है। उन्होंने बताया कि मध्य प्रदेश में लगभग ₹1.55 लाख करोड़ की रेल परियोजनाएँ वर्तमान में चल रही हैं। राज्य



कैलारस रेलवे स्टेशन पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित अतिथिगण

में 80 स्टेशनों का पुनर्विकास किया जा रहा है, राज्य को आपस में जोड़ने वाली पांच वंदे भारत ट्रेनें चल रही हैं और सात अमृत भारत ट्रेनें शुरू की जा रही हैं।

रेल मंत्री ने कहा कि मध्य प्रदेश में कई नई प्रमुख परियोजनाएँ शुरू की गई हैं, जिनमें मनमाड-इंदौर नई लाइन और राज्य भर में कई तीसरी और चौथी लाइन की परियोजनाएँ शामिल हैं। वर्तमान सरकार के तीसरे कार्यकाल के दौरान मध्य प्रदेश से संबंधित स्वीकृत परियोजनाओं की कुल लागत लगभग ₹64,512 करोड़ है।

केंन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा कि ग्वालियर-चंबल क्षेत्र के लिए यह एक ऐतिहासिक दिन है। उन्होंने कैलारस से बीरपुर तक रेलवे लाइन के विस्तार को इस क्षेत्र के लिए एक नई शुरुआत बताया। उन्होंने कहा कि यह यात्रा, ग्वालियर, बामोर, सुमाओली, जौरा और कैलारस से बीरपुर तक विस्तारित हो रही है और आगे इसका विस्तार श्योपुर और अंततः कोटा तक किया जाएगा।

इस अवसर पर मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, राज्य के विधान सभा अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर व अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।■

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री ने निशातपुरा स्टेशन पर दो ट्रेनों के ठहराव का किया शुभारंभ

पश्चिम मध्य रेलवे के निशातपुरा (भोपाल) स्टेशन पर दिनांक 28 जुलाई, 2026 को डॉ. अंबेडकर नगर - श्री माता वैष्णो देवी कटरा मालवा एक्सप्रेस एवं जबलपुर-वेरावल एक्सप्रेस ट्रेनों के नियमित ठहराव का शुभारंभ एक भव्य समारोह के रूप में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उनके साथ कार्यक्रम में भोपाल सांसद, स्थानीय विधायकगण, महापौर तथा बड़ी संख्या में स्थानीय जनप्रतिनिधि एवं नागरिक उपस्थित रहे।■



उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री और रेल मंत्री ने नेपाल बाढ़ पीड़ितों को दी श्रद्धांजलि

सादे समारोह में नेपालगंज रोड-नानपारा-बहराइच ब्रॉड गेज रेल खंड की शुरुआत

चार रेलगाड़ियों को मिला नेपालगंज रोड स्टेशन तक विस्तार

जिससे सीमावर्ती इलाकों में विकास को बढ़ावा मिलेगा



योगी आदित्यनाथ, मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश

अश्विनी वैष्णव, रेल मंत्री

नेपालगंज रोड-नानपारा-बहराइच रेल खंड के आमान परिवर्तन और विद्युतीकरण का उद्घाटन करते हुए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ तथा रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव

दिनांक 31 अगस्त, 2026 को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव, डुमरियागंज के सांसद जगदंबिका पाल, बहराइच के सांसद डॉ. आनंद कुमार गोंड तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों के साथ नेपालगंज रोड-नानपारा-बहराइच रेल खंड के आमान परिवर्तन और विद्युतीकरण का उद्घाटन किया। लगभग ₹730 करोड़ की लागत से 56.15 कि.मी. लंबे इस खंड को ब्रॉड गेज में बदला गया और इसका विद्युतीकरण किया गया। चार मौजूदा रेलगाड़ियों की सेवाओं को भी नेपालगंज रोड तक बढ़ाया गया। इस कार्यक्रम की शुरुआत नेपाल में हाल ही में आई बाढ़ के पीड़ितों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के साथ हुई, जिसमें कार्यक्रम में शामिल सभी लोगों ने दो मिनट का मौन रखा।

पड़ोसी देश नेपाल की परिस्थितियों पर चिंता जताते हुए, रेल मंत्री ने कहा कि भारत और नेपाल के बीच गहरे सांस्कृतिक संबंध हैं। उन्होंने नेपाल में प्राकृतिक आपदा से प्रभावित परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की और कहा कि भारत सरकार सहायता के लिए हरसंभव प्रयास कर रही है। रेल मंत्री ने बताया कि प्रभावित इलाकों से बचाकर भारत लाए जा रहे यात्रियों के लिए रेलवे भी व्यवस्थाएं कर रही है। उन्हें उनके गंतव्य तक पहुँचाने हेतु विशेष कोच और दूसरी आवश्यक सुविधाओं की व्यवस्था की है। रेल मंत्री ने यह भी कहा कि रेलवे बोर्ड विभिन्न क्षेत्रीय रेलवे, जिला एवं राज्य प्रशासनों तथा विदेश मंत्रालय के साथ मिलकर काम कर रहा है ताकि नेपाल की परिस्थितियों से प्रभावित यात्रियों की सुरक्षित आवाजाही और वापसी सुनिश्चित की जा सके।

नेपालगंज रोड-नानपारा-बहराइच मीटर-गेज रेल खंड का निर्माण मूल रूप से 1886 में किया गया था। आमान परिवर्तन और विद्युतीकरण का कार्य पूरा होने के बाद, यह खंड अब ब्रॉड गेज रेलवे नेटवर्क का एक अभिन्न हिस्सा बन गया है। इससे बहराइच, रिसिया, मटेरा, नानपारा, बाबागंज और नेपालगंज रोड स्टेशनों को बेहतर कनेक्टिविटी हासिल हो रही है।

उद्घाटन किए जा रहे इस रेलवे खंड के बारे में बोलते हुए, रेल मंत्री ने कहा कि नेपालगंज रोड-नानपारा-बहराइच खंड का आमान परिवर्तन अब देश के बड़े रेलवे नेटवर्क से जुड़ गया है। उन्होंने कहा कि देश भर में ब्रॉड-गेज परिवर्तन कार्यक्रम पूरा होने वाला है।

यात्रियों के लिए कनेक्टिविटी को और बेहतर बनाने हेतु, रेल मंत्रालय ने 14213/14214 वाराणसी–बहराइच एक्सप्रेस, 15132/15131 वाराणसी सिटी–गोरखपुर एक्सप्रेस और 75109/75110 व 75111/75112 गोंडा–बहराइच रेलगाड़ियों की दो जोड़ियों की सेवाओं को नेपालगंज रोड तक बढ़ाने की मंजूरी दे दी है। बेहतर कनेक्टिविटी से पड़ोसी देश नेपाल के लोगों को भी लाभ होगा,

खासकर उन लोगों को जो रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, व्यापार और दूसरे कार्यों के लिए सीमावर्ती इलाकों में आते-जाते हैं।

आदित्यनाथ ने कहा कि इस रेल खंड का उद्घाटन और चार नई रेलगाड़ियों की सेवाओं की शुरुआत इस इलाके के लोगों के दशकों पुराने सपने के साकार होने जैसा है। उन्होंने कहा कि इस नई रेल कनेक्टिविटी से बहराइच, रुपईडीहा और नेपालगंज के बीच संपर्क मजबूत होगा तथा सीमा के दोनों ओर के लोगों को अधिक सुविधा मिलेगी।

आकांक्षी जिले बहराइच के सीमावर्ती इलाके में आमान परिवर्तन परियोजना के पूरा होने से इस क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास को काफी गति मिलने की उम्मीद है। सीधा ब्रॉड गेज संपर्क स्थानीय उत्पादों को बड़े बाजारों तक बेहतर पहुँच प्रदान करेगा और सीमावर्ती इलाकों तथा उत्तर प्रदेश एवं उसके बाहर के प्रमुख शहरों के बीच आर्थिक संबंधों को मजबूत करेगा।

रेल मंत्री ने कहा कि पूरे उत्तर प्रदेश, खासकर पूर्वांचल इलाके में रेलवे नेटवर्क को मजबूत करने हेतु व्यापक पैमाने पर योजना बनाई जा रही है। उन्होंने बताया कि जिन जगहों पर पहले से दोहरी लाइनें हैं, वहाँ तीसरी और चौथी लाइनें जोड़कर सात बड़े रेलवे नेटवर्क को मजबूत किया जा रहा है। उन्होंने पूर्वांचल को सेवा प्रदान करने वाले दिल्ली-गाजियाबाद-मुरादाबाद-सीतापुर-बुढ़वल-गोंडा-गोरखपुर नेटवर्क का उल्लेख किया और कहा कि दिल्ली से गोंडा वाले खंड को पहले ही मंजूरी मिल चुकी है।

रेल मंत्री ने कहा कि हाई-स्पीड रेल कनेक्टिविटी के विकास से राज्य की रेल कनेक्टिविटी में बड़ा बदलाव आएगा। प्रस्तावित हाई-स्पीड रेल कनेक्टिविटी का उल्लेख करते हुए, उन्होंने ने कहा कि यात्रा में लगने वाले समय में उल्लेखनीय कमी आएगी। उन्होंने बताया कि दिल्ली-आगरा की यात्रा में 58 मिनट, दिल्ली-कानपुर में 1 घंटा 45 मिनट, दिल्ली-लखनऊ में 2 घंटे 12 मिनट और दिल्ली-प्रयागराज की यात्रा में लगभग तीन घंटे लगेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि दिल्ली-वाराणसी की यात्रा में लगभग साढ़े तीन घंटे लगेंगे।

रेल मंत्री ने यह भी बताया कि प्रस्तावित कनेक्टिविटी को आगे चलकर पटना तक बढ़ाया जाएगा। उन्होंने कहा कि दिल्ली और पटना के बीच 1,170 कि.मी. की यात्रा लगभग साढ़े चार घंटे में पूरी की जा सकेगी। नेपालगंज रोड-नानपारा-बहराइच रेल खंड का पूरा होना और लंबी दूरी की रेलगाड़ियों की सेवाओं का विस्तार, सीमावर्ती इलाके में रेल कनेक्टिविटी को सुदृढ़ करने की दिशा में एक अहम उपलब्धि है।■

रेल मंत्री ने केंद्रीय मंत्रियों को रेलवे के 'वॉर रूम' की कार्यप्रणाली से कराया अवगत



केंद्रीय रेल, सूचना और प्रसारण एवं इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने संसदीय कार्य एवं अल्पसंख्यक कार्य मंत्री किरेन रिजिजू तथा श्रम एवं रोजगार एवं युवा कार्य एवं खेल मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया को रेलवे के 'वॉर रूम' की कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी दी।

दौरे के दौरान मंत्री ने बताया कि 'वॉर रूम' में रेलवे स्टेशनों के लाइव फीड, एआई आधारित प्रणालियों और परिचालन संबंधी आंकड़ों का उपयोग रेलवे गतिविधियों की निगरानी, यात्रियों की आवाजाही पर नजर रखने तथा समय पर निर्णय लेने में किया जाता है।

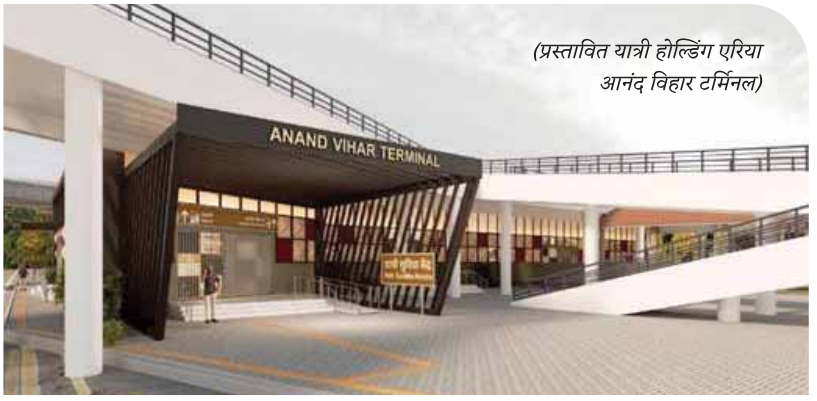
प्रमुख विशेषताएं

- 'वॉर रूम' से रेलवे स्टेशनों के प्लेटफॉर्म, फुट ओवर ब्रिज और स्टेशन के बाहर के क्षेत्रों की लाइव फीड देखी जा सकती है।
- नई दिल्ली और हजरत निजामुद्दीन जैसे स्टेशनों की लाइव फीड की केंद्रीय स्तर से निगरानी की जा सकती है।
- अधिकारी किसी विशेष स्थान की स्थिति को विस्तार से देखने के लिए संबंधित कैमरा फीड को जूम कर सकते हैं।
- एआई आधारित प्रणाली दिए गए निर्देशों के आधार पर किसी विशेष स्थान पर हुई घटना से संबंधित जानकारी उपलब्ध करा सकती है, जिससे अधिकारियों को घटनाओं को तेजी से समझने में मदद मिलती है।
- त्योहारों, भीड़भाड़ वाले समय और अधिक यात्री आवागमन वाले अवसरों पर 'वॉर रूम' के माध्यम से विभिन्न स्टेशनों की गतिविधियों और यात्रियों की बदलती आवाजाही पर नजर रखी जा सकती है।
- यह प्रणाली ट्रेनों की आवाजाही और देरी की भी निगरानी करती है तथा अधिकारियों को यह पहचानने में मदद करती है कि कौन-सी ट्रेन विलंबित है और देरी का कारण क्या है।
- वास्तविक समय में उपलब्ध यह जानकारी रेलवे टीमों को स्थिति का आकलन करने और आगे की देरी को रोकने के लिए आवश्यक कार्रवाई तय करने में मदद करती है।■

आनंद विहार और उधना स्टेशनों पर बढ़ेगी यात्री सुविधाएँ

त्योहारों के दौरान भीड़ प्रबंधन और यात्रियों की अधिक सुरक्षित एवं सुव्यवस्थित आवाजाही सुनिश्चित करेंगे यात्री सुविधा केंद्र

केंद्रीय रेल, सूचना और प्रसारण एवं इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने दिनांक 14 अगस्त, 2026 को नई दिल्ली स्थित रेल भवन से आनंद विहार टर्मिनल और उधना रेलवे स्टेशन पर यात्री होल्डिंग एरिया परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा की। बैठक में रेल राज्य मंत्री वी. सोमन्ना भी उपस्थित थे। इस समीक्षा में चल रहे कामों में तेजी लाने, साइट से जुड़ी चुनौतियों का समाधान करने और सुविधाओं को समय पर पूरा करने पर जोर दिया गया। इसमें सिविल कार्य, अवरोधों को हटाना, उपयोगिता कार्यों को स्थानांतरित करना, संरचनात्मक कार्य, यात्री सुविधाएँ और अन्य संबंधित सुविधाएँ भी शामिल थीं। आगामी प्रमुख त्योहारों की भीड़ से पहले यात्री सुविधा केंद्र को पूरा किया जाना है ताकि यात्रियों के लिए सुरक्षित, अधिक व्यवस्थित और सुविधाजनक व्यवस्था की जा सके।



(प्रस्तावित यात्री होल्डिंग एरिया आनंद विहार टर्मिनल)

यात्री सुविधा केंद्र (पैसेंजर होल्डिंग एरिया) उन यात्रियों के लिए विशेष स्थान उपलब्ध कराने के उद्देश्य से विकसित किए जा रहे हैं जिनके पास टिकट नहीं है और जो प्रतीक्षा कर रहे हैं। इससे व्यस्त समय में स्टेशन प्लेटफॉर्म, आवागमन क्षेत्रों और स्टेशन के प्रवेश द्वारों पर भीड़ कम करने में मदद मिलेगी। इन सुविधाओं का उद्देश्य यात्रियों की सुचारू आवाजाही सुनिश्चित करना और स्टेशन/प्लेटफॉर्म क्षेत्र में प्रवेश करने से पहले उन्हें आरामदायक प्रतीक्षा वातावरण प्रदान करना है।

इन केंद्रों में पर्याप्त स्थान वाले ढके हुए प्रतीक्षालय एवं बैठने की व्यवस्था, अलग-अलग टिकट काउंटर, पुरुषों और महिलाओं के लिए शौचालय और वॉशरूम, पीने का पानी और अन्य आवश्यक यात्री सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएंगी। इसके अलावा, पब्लिक एड्रेस और यात्री सूचना प्रणाली, सीसीटीवी निगरानी और सुरक्षा व्यवस्था, पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था, बिजली और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सुविधाएँ, डिस्प्ले बोर्ड, साइनबोर्ड, यात्रियों के लिए सुव्यवस्थित आवागमन और फर्नीचर भी उपलब्ध कराए जा रहे हैं।


(प्रस्तावित यात्री होल्डिंग एरिया उधना रेलवे स्टेशन)

आनंद विहार टर्मिनल

आनंद विहार टर्मिनल पर यात्री सुविधा केंद्र का विकास दो चरणों में किया जा रहा है। पहले चरण में लगभग 4,000 यात्रियों के लिए व्यवस्थित स्थान उपलब्ध कराया जाएगा। इसकी नींव, प्लिंथ बीम, संरचनात्मक स्टील निर्माण तथा अन्य संबंधित कार्य तेजी से प्रगति पर हैं।

दूसरे चरण से सुविधा की यात्री-संचालन क्षमता में और मजबूती आएगी, जिसके पूरा होने पर यह लगभग 7,000 यात्रियों को समायोजित करने में सक्षम हो जाएगी।

उधना रेलवे स्टेशन

उधना रेलवे स्टेशन पर यात्री सुविधा केंद्र में एक समय में लगभग 15,000 यात्रियों को ठहराने की योजना है। इस दिशा में महत्त्वपूर्ण प्रगति पहले ही हासिल की जा चुकी है।

पूरा होने के बाद, उधना स्टेशन होल्डिंग एरिया और प्लेटफॉर्म के बीच बेहतर संपर्क प्रदान करेगा, जिससे यात्रियों की व्यवस्थित आवाजाही और स्टेशन परिसर में यात्रियों की भीड़ का बेहतर प्रबंधन हो सकेगा।■

मुंबईकरों का सफर होगा और सुगम
238 एसी ईएमयू रेकों के निर्माण की तैयारी

मुंबई में प्रतिदिन 3234 उपनगरीय सेवाएँ प्रदान करती है भारतीय रेल

केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा है कि रेल मंत्रालय ने अपनी उत्पादन इकाइयों—इंटीग्रल कोच फैक्टरी (आईसीएफ) चेन्नई, रेल कोच फैक्टरी (आरसीएफ) कपूरथला और मॉडर्न कोच फैक्टरी (एमसीएफ) रायबरेली—के माध्यम से 238 एसी ईएमयू रेकों के निर्माण को प्राथमिकता दी है। यह कदम मुंबई शहरी परिवहन परियोजना (एमयूटीपी) के तहत इंफ्रास्ट्रक्चर शुरू होने के साथ-साथ रोलिंग स्टॉक की समय पर उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए उठाया गया है।

एक अनुमानित प्रोडक्शन प्रोग्राम के अनुसार, आईसीएफ द्वारा 120 एसी ईएमयू रेक, आरसीएफ द्वारा 71 रेक और एमसीएफ द्वारा 47 रेक बनाए जाएंगे, जिससे कुल संख्या 238 रेक हो जाएगी। भारतीय रेल की उत्पादन इकाइयों में वातानुकूलित ईएमयू, वंदे भारत ट्रेनसेट और वंदे मेट्रो ट्रेनसेट सहित आधुनिक यात्री रोलिंग स्टॉक के निर्माण की प्रमाणित क्षमता है। रेलवे बोर्ड ने मौजूदा और प्रमाणित आरडीएसओ/आईसीएफ स्पेसिफिकेशन्स पर स्वीकृत एसी ईएमयू रेकों की खरीद को मंजूरी दे दी है, जिससे रोलिंग स्टॉक के तेजी से निर्माण और आपूर्ति में सुविधा होगी। इनकी आपूर्ति 2027 से शुरू करने की योजना है, जबकि 2030 तक सभी स्वीकृत ट्रेनसेट का निर्माण पूरा कर लिया जाएगा। 2027 में पहली ट्रेनसेट मिलने और 2030 तक पूरी आवश्यकता का निर्माण कार्य पूरा होने



से नए रेल नेटवर्क की शुरुआत और ट्रेनों के शामिल होने के बीच का अंतर खत्म होगा, जिससे नए इंफ्रास्ट्रक्चर का पूरा लाभ उठाया जा सकेगा।

यहाँ पर उल्लेखनीय है कि वर्तमान में, पश्चिम रेलवे और मध्य रेल द्वारा एसी ईएमयू सेवाओं सहित 3234 ईएमयू लोकल सेवाएँ संचालित की जाती हैं। पश्चिम रेलवे 133 एसी सेवाओं सहित 1414 सेवाएँ संचालित करता है, जबकि मध्य रेलवे 94 एसी सेवाओं सहित 1820 सेवाएँ संचालित करता है, जो मुंबई, ठाणे, कल्याण, विरार और पनवेल के यात्रियों की जरूरतों को पूरा करती हैं।■



देश के उच्च घनत्व वाले रेल नेटवर्क को चार-लाइन वाला बनाने की योजना

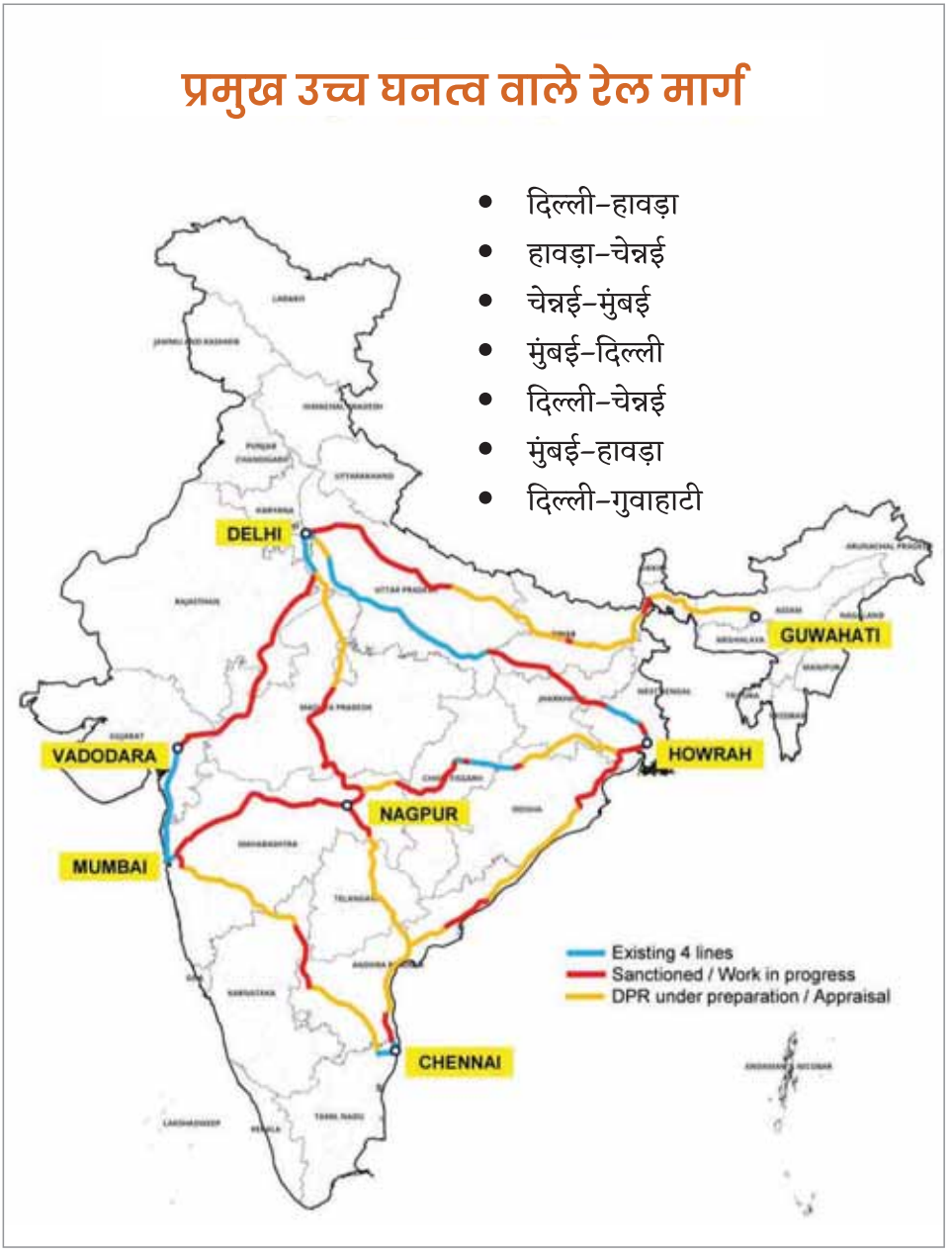
रेल मंत्री ने साझा की विस्तृत जानकारी

केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने भारत के सात उच्च घनत्व वाले रेल मार्गों के विस्तार की व्यापकता और महत्त्व को रेखांकित किया। करीब 11,000 कि.मी. में फैले ये मार्ग देश के कुल रेल यातायात का लगभग 41 प्रतिशत संभालते हैं, जबकि पूरे रेल नेटवर्क में इनकी हिस्सेदारी करीब 16 प्रतिशत है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय रेल इन मार्गों को चार-लाइन वाला बनाने की दिशा में आगे बढ़ रही है। इससे देश के प्रमुख यात्री और माल ढुलाई मार्गों पर अतिरिक्त क्षमता उपलब्ध होगी और भविष्य की बढ़ती परिवहन आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद मिलेगी।

इन मार्गों पर अतिरिक्त रेल लाइनों के निर्माण से अधिक ट्रेनों के संचालन की सुविधा मिलेगी तथा यात्री और मालगाड़ियों के बीच परिचालन संबंधी टकराव कम करने में मदद मिलेगी। इससे व्यस्त रेल मार्गों पर परिचालन में अधिक लचीलापन और विश्वसनीयता आएगी।

मंत्री ने रेल परिवहन के आर्थिक और पर्यावरणीय लाभों को भी रेखांकित किया। अधिक क्षमता वाले रेल नेटवर्क से परिवहन लागत कम करने, ऊर्जा दक्षता बढ़ाने और स्वच्छ एवं टिकाऊ परिवहन को प्रोत्साहित करने में मदद मिलेगी।



उच्च घनत्व वाले इन मार्गों का विस्तार भारतीय रेल को भविष्य की यात्री और माल ढुलाई आवश्यकताओं के लिए तैयार करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। यह पहल अधिक क्षमता, बेहतर कनेक्टिविटी और कुशल एवं पर्यावरण-अनुकूल परिवहन व्यवस्था के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।■

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने चार राज्यों में मल्टीट्रैकिंग परियोजनाओं को दी मंजूरी

वर्तमान रेल नेटवर्क में लगभग 410 कि.मी. की होगी वृद्धि

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल की आर्थिक मामलों की समिति ने दिनांक 19 अगस्त, 2026 को रेल मंत्रालय की लगभग ₹9,450 करोड़ की कुल लागत वाली चार परियोजनाओं को मंजूरी दी है, जिन्हें 2030-31 तक पूरा किया जाना है इन परियोजनाओं में शामिल हैं :

लागत : ₹9,450 करोड़

रेलवे नेटवर्क में लगभग 410 कि.मी. की वृद्धि होगी

लाभान्वित राज्य

पश्चिम बंगाल, ओडिशा, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश

लगभग **6,448** गांवों की कनेक्टिविटी में होगा सुधार



- खड़गपुर - भद्रक (रानीताल) चौथी लाइन - 173 कि.मी. (पश्चिम बंगाल और ओडिशा)
- भद्रक - हरिदासपुर चौथी लाइन - 75 कि.मी. (ओडिशा)
- गुम्मिडिपुंडी - गुडुर तीसरी और चौथी लाइन - 90 कि.मी. (आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु)
- कटक – पारादीप (बडाबन्धा) तीसरी और चौथी लाइन - 72 कि.मी. (ओडिशा)

बढ़ी हुई लाइन क्षमता से आवागमन में उल्लेखनीय सुधार होगा, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय रेल की परिचालन दक्षता और सेवा विश्वसनीयता में वृद्धि होगी। इन बहु-ट्रैकिंग प्रस्तावों से परिचालन के सुव्यवस्थित होने और भीड़भाड़ में कमी आने की उम्मीद है। ये परियोजनाएँ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नए भारत के विजन के अनुरूप हैं, जिसका उद्देश्य क्षेत्र के व्यापक विकास के माध्यम से इस क्षेत्र के लोगों को आत्मनिर्भर बनाना है, जिससे उनके लिए रोजगार/स्वरोजगार के अवसर बढ़ेंगे।

ये परियोजनाएँ प्रधानमंत्री गति शक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान के अंतर्गत बनाई गई हैं, जिनका मुख्य उद्देश्य एकीकृत योजना और हितधारकों के परामर्श के माध्यम से मल्टी मॉडल कनेक्टिविटी और लॉजिस्टिक दक्षता को बढ़ाना है। इन परियोजनाओं से लोगों, वस्तुओं और सेवाओं की निर्बाध आवाजाही सुनिश्चित होगी।

पश्चिम बंगाल, ओडिशा, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश राज्यों के 8 जिलों को कवर करने वाली ये 4 परियोजनाएँ भारतीय रेल के वर्तमान नेटवर्क को लगभग 410 कि.मी. तक बढ़ा देंगी। प्रस्तावित मल्टी-ट्रैकिंग परियोजनाओं से लगभग 6,448 गांवों की कनेक्टिविटी में सुधार होगा, जिनकी आबादी लगभग 60 लाख है।

प्रस्तावित क्षमता वृद्धि से देश भर के कई प्रमुख पर्यटन स्थलों तक रेल कनेक्टिविटी में सुधार होगा, जिसमें कुलडीहा वन्यजीव अभयारण्य, भितरकनिका राष्ट्रीय उद्यान, मां भद्रकाली मंदिर, मां धमराई मंदिर, पंचलिंगेश्वर मंदिर, तलसारी-उदयपुर और चांदीपुर समुद्र तट, पुलिकट झील, नेलपट्टू पक्षी अभयारण्य, भगवान वीरराघव पेरुमल मंदिर, गदा कुजंगा जगन्नाथ मंदिर, सरला मंदिर, धबलेश्वर मंदिर, ललितगिरि (बौद्ध स्थल) आदि शामिल हैं।

प्रस्तावित परियोजनाएँ कोयला, लौह अयस्क, सीमेंट, लोहा और इस्पात, कंटेनर, ऑटोमोबाइल, अनाज आदि जैसी वस्तुओं के परिवहन के लिए आवश्यक मार्ग हैं। क्षमता वृद्धि कार्यों से प्रति वर्ष 76 मिलियन टन माल ढुलाई की अतिरिक्त क्षमता प्राप्त होगी।

भारतीय रेल के पर्यावरण के अनुकूल और ऊर्जा कुशल परिवहन माध्यम होने के कारण यह जलवायु लक्ष्यों को प्राप्त करने और देश की लॉजिस्टिक्स लागत को कम करने में सहायक होगी। साथ ही, यह तेल आयात (लगभग 13 करोड़ लीटर) को कम करेगी और कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन (लगभग 65 करोड़ किलोग्राम) को घटाएगी, जो 2.60 करोड़ वृक्षारोपण के बराबर है।■

भारतीय रेल की क्षमता एवं यात्री सुविधाओं के विस्तार की ओर बढ़ते कदम

विभिन्न रेल परियोजनाओं को दिखाई गई हरी झंडी

विशाखापत्तनम कोचिंग यार्ड का पुनर्निर्माण

महत्त्वपूर्ण बिंदु

- लागत ₹299 करोड़
- मौजूदा छह प्लेटफॉर्मों को चौड़ा करना, 6 नए प्लेटफॉर्म एवं 6 अतिरिक्त लाइनें जोड़ना शामिल
- स्टेशन के पूर्वी हिस्से में नया प्रवेश द्वार, इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग, सतही पार्किंग एवं कुशल आवागमन



भारतीय रेल ने यात्री सुविधाओं एवं परिचालन दक्षता को बेहतर बनाने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम उठाते हुए, दक्षिण तटीय रेलवे के विशाखापत्तनम कोचिंग यार्ड के पुनर्निर्माण के लिए ₹299 करोड़ की मंजूरी प्रदान की है। विशाखापट्टनम रेलवे स्टेशन एक प्रमुख कोचिंग टर्मिनल है, जहाँ प्रतिदिन लगभग 80,000 यात्री आते-जाते हैं और औसतन 113 ट्रेनें संचालित होती हैं।

क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि एवं यात्री-केंद्रित अवसंरचना कार्य के अंतर्गत निम्न शामिल हैं :

- लाइन लूप लाइनों को हटाना तथा पॉइंट क्षेत्रीय रेलवे को पुनर्व्यवस्थित करना।
- मौजूदा छह प्लेटफॉर्म का चौड़ीकरण।
- यात्रियों के लिए आधुनिक सुविधाओं से युक्त छह अतिरिक्त प्लेटफॉर्म का निर्माण।
- छह अतिरिक्त रेलवे लाइनों का निर्माण।
- यात्रियों के आवागमन एवं सुविधा में सुधार के लिए चौड़े किए गए प्लेटफॉर्मों पर रैंप, लिफ्ट और एस्केलेटर सहित यात्री सुविधाओं का विकास।
- स्टेशन के पूर्वी हिस्से में एक नए प्रवेश द्वार का निर्माण एवं यात्री आरक्षण प्रणाली का स्थानांतरण।
- विशाखापत्तनम स्टेशन यार्ड में इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग लगाना, साथ ही समतल पार्किंग सुविधाओं का विकास और एक कुशल परिसंचरण क्षेत्र योजना का विकास।

परिचालन दक्षता एवं यात्री सुविधा में बढ़ोतरी

पुनर्निर्माण परियोजना परिचालन दक्षता में उल्लेखनीय सुधार करेगी, क्योंकि इससे कोचिंग यार्ड के भीतर कम भीड़भाड़ होगी, प्लेटफॉर्म की उपलब्धता बढ़ेगी और ट्रेनों की आवाजाही अधिक सुचारु होगी। यह अतिरिक्त अवसंरचना विशाखापत्तनम स्टेशन को यात्रियों की बढ़ती मांग को संभालने में सक्षम बनाएगी, साथ ही समयपालन में सुधार करेगी और ट्रेनों के ठहराव को कम करेगी।■

दक्षिण मध्य रेलवे के वाडी-रायचूर खंड पर इलेक्ट्रिक ट्रैक्शन अपग्रेडेशन परियोजना

भारतीय रेल ने दक्षिण मध्य रेलवे के वाडी-रायचूर खंड पर इलेक्ट्रिक ट्रैक्शन सिस्टम को 1×25 केवी से 2×25 केवी में उन्नत करने के लिए ₹220 करोड़ की परियोजना को मंजूरी दी है। यह परियोजना 102 रूट कि.मी. (204 ट्रैक कि.मी.) के डबल-लाइन खंड को कवर करती है।

वाडी-रायचूर खंड हाई डेंसिटी नेटवर्क (एचडीएन) रूट-7 का हिस्सा है, जो मुंबई-पुणे-वाडी-रायचूर-गुंटकल-कडपा-रेनिगुंटा-चेन्नई को जोड़ता है।

2×25 केवी इलेक्ट्रिक ट्रैक्शन सिस्टम को अपनाने से मौजूदा इलेक्ट्रिक ट्रैक्शन इंफ्रास्ट्रक्चर मजबूत होगा और यात्री एवं माल ढुलाई में वृद्धि के साथ इस खंड की क्षमता में सुधार होगा। उन्नत प्रणाली से परिचालन दक्षता बढ़ेगी और साथ ही इस रणनीतिक रूप से महत्त्वपूर्ण कॉरिडोर पर विश्वसनीय ट्रेन संचालन सुनिश्चित होगा।■



दानापुर और फतुहा मल्टीट्रैकिंग परियोजना

भारतीय रेल ने पूर्व मध्य रेलवे के 29 कि.मी. लंबे दानापुर से फतुहा खंड पर ₹976 करोड़ की लागत से मल्टीट्रैक बिछाने की मंजूरी दी है। इस परियोजना से पटना रेल कॉरिडोर के सबसे व्यस्त खंडों में से एक पर भीड़ कम होगी और यात्री एवं माल ढुलाई सेवाओं में भारी वृद्धि की संभावना बनेगी।

स्वीकृत कार्य में तीन घटक शामिल हैं। दानापुर और पटना के बीच तीसरी और चौथी लाइन बिछाई जाएगी। राजेंद्र नगर और पटना साहिब के बीच तीसरी लाइन बिछाई जाएगी। पटना साहिब और फतुहा के बीच तीसरी और चौथी लाइन बिछाई जाएगी। इन अतिरिक्त लाइनों से पटना क्षेत्र में यातायात जाम कम होगा, देरी कम होगी और समय की पाबंदी में सुधार होगा। परियोजना के संचालन के पहले वर्ष में, प्रतिदिन 22 अतिरिक्त यात्री ट्रेनें और 18 अतिरिक्त मालगाड़ियाँ चल सकेंगी। इससे प्रति वर्ष 52 लाख टन अतिरिक्त माल ढुलाई की क्षमता भी बढ़ेगी।

यह परियोजना दिल्ली, दीन दयाल उपाध्याय जंक्शन, पटना, किउल, भागलपुर, खन्ना और हावड़ा मार्ग पर चौगुनी रेल सुविधा शुरू करने की पहल का हिस्सा है। यह मार्ग भारतीय रेल के ऊर्जा, खनिज और सीमेंट कॉरिडोर के अंतर्गत आता है। मजबूत किया गया यह खंड बक्सर जिले के चौसा में बनने वाले 2120 मेगावाट के थर्मल पावर प्लांट के लिए भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, जो भारी मात्रा में कच्चे माल की रेल ढुलाई पर निर्भर करेगा।■



इज्जतनगर मंडल के 660 कि.मी. मार्ग पर कवच वर्जन 4.0 लगाने की मंजूरी दी



भारतीय रेल ने उत्तर पूर्व रेलवे के इज्जतनगर मंडल के 660 कि.मी. मार्ग पर ₹295 करोड़ की अनुमानित लागत से कवच वर्जन 4.0 प्रावधान को मंजूरी दे दी है। इस कार्य को "भारतीय रेल के शेष खंडों पर लॉन्ग-टर्म इवोल्यूशन (LTE) के संचार बैकबोन के साथ कवच उपलब्ध कराने" नामक व्यापक परियोजना के तहत मंजूरी दी गई है। कवच संस्करण 4.0 के प्रावधान से चिन्हित रेलवे खंडों पर सुरक्षा अवसंरचना को और मजबूत किया जाएगा।■

गुजरात के गेरतपुर-अहमदाबाद खंड पर 4 लेन की आरओबी का निर्माण

भारतीय रेल ने पश्चिम रेलवे के गेरतपुर-अहमदाबाद खंड पर लेवल क्रॉसिंग संख्या 305 पर चार लेन वाले रोड ओवर ब्रिज के निर्माण को मंजूरी दे दी है। इस परियोजना के लिए ₹153 करोड़ की लागत स्वीकृत की गई है। यह ब्रिज घनी आबादी वाले शहरी क्षेत्र में स्थित है, जिसके लिए लंबे अप्रोच और एक बड़े निर्माण की आवश्यकता है। रेलवे ब्रिज की कुल लंबाई 106 मीटर होगी। इसमें 53 मीटर के दो संयुक्त गर्डर शामिल होंगे। इसके बाद 150 मीटर का वायडक्ट बनेगा। रेलवे अप्रोच की लंबाई 595 मीटर होगी।

नए ओवरब्रिज के बनने से सड़क उपयोगकर्ताओं को लेवल क्रॉसिंग पर इंतजार करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। इससे रेलवे लाइन के ऊपर से वाहनों का आवागमन चौबीसों घंटे निर्बाध रहेगा।■

कश्मीर में बदलाव की बही बयार

यूएसबीआरएल से खुल रहे मौसम में तरक्की के द्वार

किसानों और लघु एवं मध्यम उद्यमों को मिल रहे है नए बाजार

- **जम्मू-कश्मीर से सेब, सूखे मेवे, पश्मीना शॉल और हस्तशिल्प राष्ट्रीय बाजारों तक पहुँच रहे हैं, जिससे स्थानीय लोगों के लिए आर्थिक अवसर बढ़ रहे हैं**
- **जम्मू-कश्मीर के सांबा जिले में गति शक्ति मल्टी-मॉडल कार्गो टर्मिनल (जीसीटी) का शुभारम्भ किया गया; कठुआ, अनंतनाग और जम्मू में जीसीटी के लिए सैद्धांतिक मंजूरी दी गई**
- **रणनीतिक 190 कि.मी. लंबी जम्मू/रियासी-पुंछ नई रेल लाइन के लिए फाइनल लोकेशन सर्वे को मंजूरी दी गई, जम्मू-कश्मीर के सीमावर्ती क्षेत्र में रेल संपर्क को मिली मजबूती**

कश्मीर घाटी को शेष भारत से जोड़ने के लिए, उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेल लिंक (यूएसबीआरएल) परियोजना (272 कि.मी.) शुरू की गई है। यूएसबीआरएल परियोजना में जम्मू-कश्मीर के उधमपुर, रियासी, रामबन, श्रीनगर, अनंतनाग, पुलवामा, बडगाम और बारामूला जिलों को शामिल किया गया है।

यह स्वतंत्रता के बाद देश में शुरू की गई सबसे कठिन नई रेलवे लाइन परियोजनाओं में से एक है। इसका भूभाग युवा हिमालय या 'नवीन वलित पर्वत' से होकर गुजरता है, जो भूवैज्ञानिक आश्चर्यों और असंख्य समस्याओं से भरा है। इस परियोजना में, रेलवे ने जम्मू-कश्मीर के रियासी जिले में चिनाब नदी पर दुनिया का सबसे ऊँचा रेलवे ब्रिज बनाया है। प्रतिष्ठित चिनाब ब्रिज 1315 मीटर लंबा है, जिसका मेहराब 467 मीटर चौड़ा है और नदी तल से इसकी ऊँचाई 359 मीटर है। इस परियोजना में भारतीय रेल का पहला केबल-स्टे

272 *कि.मी. उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेल लिंक परियोजना शुरू की गई है।*

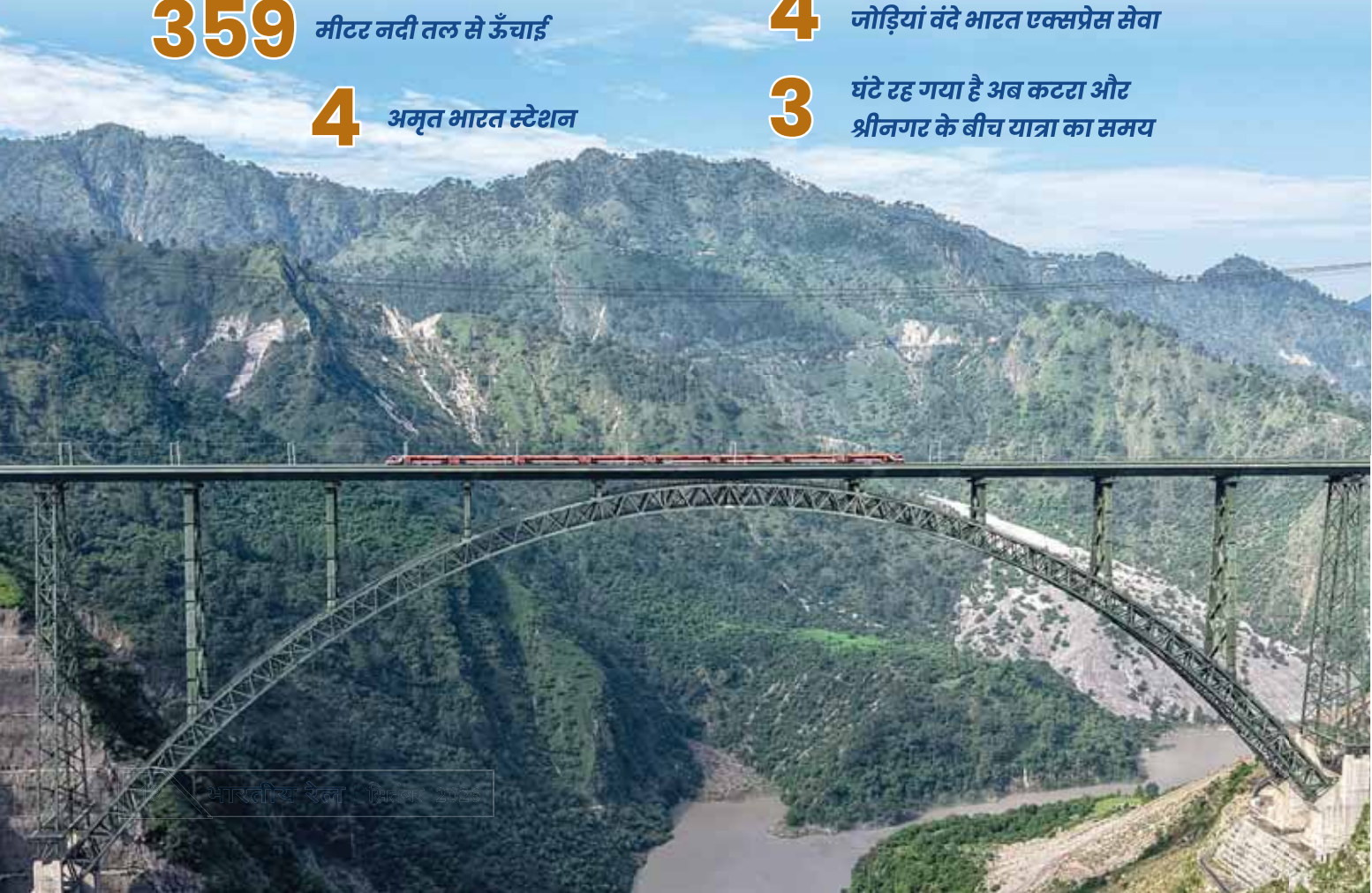
359 *मीटर नदी तल से ऊँचाई*

4 *अमृत भारत स्टेशन*

100% *रेल विद्युतीकरण*

4 *जोड़ियां वंदे भारत एक्सप्रेस सेवा*

3 *घंटे रह गया है अब कटरा और श्रीनगर के बीच यात्रा का समय*



ब्रिज अंजी खड्ड पर बनाया गया है। यह 473 मीटर लंबा असममित केबल-स्टे ब्रिज है, जिसमें 193 मीटर ऊँचा एक ही स्तंभ है और इसका आकार उल्टा "Y" जैसा है।

रेल संपर्क प्रदान करने के अलावा, लगभग 215 कि.मी. (एक सुरंग और 320 ब्रिजों सहित) लंबी सड़कों का निर्माण किया गया है, जिनका उपयोग स्थानीय लोग करते हैं।

इस संपूर्ण रेल परियोजना में सुरंगों और खुले मार्गों में ओवरहेड कंडक्टर प्रणाली का उपयोग करके विद्युतीकरण किया गया है। कश्मीर घाटी क्षेत्र की शेष भारतीय रेल नेटवर्क से सर्वकालिक, विश्वसनीय और आरामदायक रेल कनेक्टिविटी से पर्यटन को काफी बढ़ावा मिलेगा। इस परियोजना के चालू होने के बाद, कटरा और श्रीनगर के बीच यात्रा का समय घटकर लगभग 3 घंटे रह गया है।

यूएसबीआरएल परियोजना ने इस क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। इसका रेलवे नेटवर्क से एकीकरण कच्चे माल और तैयार माल के परिवहन को सुगम बनाने में सहायक रहा है, जिससे क्षेत्र में लघु एवं मध्यम आकार के उद्यमों के विकास को बढ़ावा मिला है। किसान और स्थानीय व्यवसाय अब सेब, सूखे मेवे, पश्मीना शॉल और हस्तशिल्प जैसे अपने विशिष्ट कश्मीरी उत्पाद को घाटी से बाहर बड़े बाजारों तक पहुँच प्राप्त करके बेच पा रहे हैं। और आर्थिक विविधता को बढ़ावा मिल रहा है। जम्मू-कश्मीर में रेल संपर्क को बेहतर बनाने के लिए, निम्नलिखित फाइनल लोकेशन सर्वे (एफएलएस) को मंजूरी दी गई है :

परियोजना का नाम	स्थिति
जालंधर कैंट. - जम्मू तवी (216 कि.मी.) तीसरी लाइन	विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार कर ली गई है।
जम्मू - श्री माता वैष्णो देवी कटरा अतिरिक्त लाइन (78 कि.मी.)	डीपीआर तैयार करने के लिए एफएलएस को मंजूरी दे दी गई है। फील्ड सर्वे शुरू कर दिया गया है।
जम्मू/रियासी – पुंछ नई लाइन (190 कि.मी.)	डीपीआर तैयार करने के लिए एफएलएस को मंजूरी दे दी गई है। फील्ड सर्वे शुरू कर दिया गया है।

डीपीआर तैयार करने के लिए एफएलएस को मंजूरी दे दी गई है। फील्ड सर्वे शुरू कर दिया गया है।

डीपीआर तैयार होने के बाद, परियोजना के लिए राज्य सरकारों सहित विभिन्न हितधारकों के साथ परामर्श और नीति आयोग, वित्त मंत्रालय आदि से मूल्यांकन जैसे आवश्यक अनुमोदनों की आवश्यकता होती है। चूंकि हितधारकों के साथ परामर्श एक सतत और गतिशील प्रक्रिया है, इसलिए सटीक समयसीमा तय नहीं की जा सकती।■

अमृत भारत स्टेशन

अब तक इस योजना के अंतर्गत विकास के लिए 1,340 स्टेशनों की पहचान की गई है, जिनमें से 4 स्टेशन जम्मू-कश्मीर में स्थित हैं। स्टेशनों के नाम निम्नलिखित हैं : बडगाम, जम्मू तवी, शहीद कैप्टन तुषार महाजन, श्री माता वैष्णो देवी कटरा।

जम्मू-कश्मीर के स्टेशनों में विकास कार्य तेजी से चल रहा है और स्टेशनों की प्रगति नीचे दी गई है:

- **बडगाम स्टेशन :** स्टेशन के आवागमन क्षेत्र, पार्किंग और पहुँच मार्ग के सुधार का कार्य पूरा हो चुका है। 12 मीटर चौड़े फुट ओवर ब्रिज का निर्माण, स्टेशन भवन का सुधार और बुकिंग काउंटरों के साथ नए प्रतीक्षालय और एग्जीक्यूटिव लाउंज का निर्माण कार्य शुरू हो चुका है।
- **जम्मू तवी स्टेशन :** दूसरे प्रवेश द्वार पर नए स्टेशन भवन का निर्माण, आवागमन क्षेत्र का विकास, पार्किंग, नए प्लेटफॉर्म, प्लेटफॉर्म शेल्टर, विद्युत उप-स्टेशन और प्रवेश रैंप का कार्य पूर्ण हो चुका है। मुख्य प्रवेश द्वार पर पुराने स्टेशन भवन को ध्वस्त करने, फुट ओवर ब्रिज और एयर कॉनकोर्स का कार्य शुरू हो चुका है।



- **शहीद कप्तान तुषार महाजन स्टेशन :** स्टेशन भवन, आवागमन क्षेत्र, पार्किंग, पहुँच मार्ग, शौचालय, प्रतीक्षा कक्ष, प्रवेश द्वार और साइनबोर्ड के सुधार का कार्य पूर्ण हो चुका है। प्लेटफॉर्म शेल्टर, प्लेटफॉर्म की सतह में सुधार और 6 मीटर चौड़े फुट ओवर ब्रिज का कार्य भी शुरू हो चुका है।
- **श्री माता वैष्णो देवी कटरा स्टेशन :** इसकी मास्टर प्लानिंग चरण में है।

जम्मू-कश्मीर एक ही क्षेत्रीय रेलवे, यानी उत्तर रेलवे के अधिकार क्षेत्र में आता है। इस क्षेत्रीय रेलवे के लिए पिछले पांच वित्तीय वर्षों और वर्तमान वित्तीय वर्ष के लिए ₹7,944 करोड़ का आवंटन किया गया है, जिसमें से अब तक (जून 2026 तक) ₹5,622 करोड़ का व्यय हो चुका है।■

आरओबी/आरयूबी

लेवल क्रॉसिंग (एलसी) के स्थान पर रोड ओवर ब्रिज (आरओबी)/रोड अंडर ब्रिज (आरयूबी) के निर्माण कार्यों की स्वीकृति भारतीय रेल की एक सतत और गतिशील प्रक्रिया है। इन कार्यों को प्राथमिकता दी जाती है और ट्रेन संचालन में सुरक्षा, ट्रेनों की सुगमता, सड़क उपयोगकर्ताओं पर प्रभाव और व्यवहार्यता आदि के आधार पर इन्हें शुरू किया जाता है।

वर्ष 2004-14 और 2014-26 (मई 26 तक) की अवधि के दौरान भारतीय रेल पर निर्मित आरओबी/आरयूबी की संख्या निम्नानुसार है :

अवधि	निर्मित आरओबी/ आरयूबी की संख्या
2004-14	4,148
2014-26 (मई 2026 तक)	14,451 (जम्म-कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश में 16 संख्याएं)

दिनांक 1 जून, 2026 तक, भारतीय रेल पर लगभग ₹1,17,492 करोड़ की लागत से 4,993 आरओबी/आरयूबी कार्यों को स्वीकृत किया गया है, जो योजना और निष्पादन के विभिन्न चरणों में हैं।

जम्मू-कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश में 195 रोड ओवर ब्रिज (आरओबी)/रोड अंडर ब्रिज (आरयूबी) मौजूद हैं। इसके अलावा, जम्मू-कश्मीर में लगभग ₹87 करोड़ की लागत से 2 आरओबी परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है, जो योजना और कार्यान्वयन के विभिन्न चरणों में हैं।

इसके अलावा, रेलवे ने काम में तेजी लाने के लिए निम्नलिखित उपाय किए हैं :

- सुचारु निष्पादन सुनिश्चित करने के लिए सामान्य व्यवस्था आरेख (जीएडी) को अंतिम रूप देने से पहले संबंधित राज्य सरकार/सड़क स्वामित्व प्राधिकरण के साथ संयुक्त सर्वेक्षण कर लिया गया है।
- कार्यों से संबंधित विभिन्न मुद्दों को हल करने के लिए रेलवे और राज्य सरकार के अधिकारियों की आवधिक बैठकें हो चुकी हैं।
- अनुमोदन में देरी से बचने के लिए, रेलवे खंड पर सड़क की लंबाई, तिरछापन और चौड़ाई के विभिन्न संयोजनों के लिए ऊपरी और निचली संरचना के रेखाचित्रों का मानकीकरण कर लिया गया है। इसे एक संकलन के रूप में जारी किया गया है, जिसे त्वरित योजना के लिए रेलवे लाइनों पर बने ओवरब्रिज के लिए सीधे अपनाया जा सकता है।

जम्मू-कश्मीर उत्तर रेलवे के अधिकार क्षेत्र में आता है। इस क्षेत्रीय रेलवे को वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए योजना मद पीएच-30 के अंतर्गत कुल ₹763 करोड़ आवंटित किए गए हैं। वित्त वर्ष 2026-27 के दौरान (मई 2026 तक) इस क्षेत्रीय रेलवे ने पीएच-30 के अंतर्गत ₹229 करोड़ व्यय किया है।■

जम्मू-कश्मीर में 100 प्रतिशत रेल विद्युतीकरण



भारतीय रेल में रेल नेटवर्क के विद्युतीकरण का कार्य मिशन मोड में शुरू किया गया है। अब तक, ब्रॉड गेज (बीजी) नेटवर्क का लगभग 99.6 प्रतिशत विद्युतीकरण हो चुका है। शेष नेटवर्क के विद्युतीकरण का कार्य जारी है। वर्ष 2014-26 के दौरान और वर्ष 2014 से पहले किए गए विद्युतीकरण का विवरण इस प्रकार है :

अवधि	मार्ग कि.मी.
2014 से पहले (लगभग 60 वर्ष)	21,801
2014-26	48,072

जम्मू-कश्मीर में, मौजूदा संपूर्ण बीजी नेटवर्क का विद्युतीकरण हो चुका है। इसके अलावा, सभी नई लाइन/मल्टी-ट्रैकिंग परियोजनाओं को विद्युतीकरण के साथ स्वीकृत और निर्मित किया जा रहा है।■

गति शक्ति मल्टी-मॉडल कार्गो टर्मिनल



निजी निवेश के माध्यम से कार्गो टर्मिनलों की स्थापना को प्रोत्साहित करने के लिए, 'गति शक्ति मल्टी-मॉडल कार्गो टर्मिनल (जीसीटी)' नीति शुरू की गई है। जीसीटी की जगह उद्योग की मांग, कार्गो यातायात की क्षमता, रेलवे बुनियादी ढाँचे की उपलब्धता और क्षेत्र की समग्र लॉजिस्टिक्स क्षमता के आधार पर तय की जाती है। अब तक, 142 गति शक्ति कार्गो टर्मिनल (जीसीटी) चालू हो चुके हैं, जिनमें जम्मू-कश्मीर के सांबा जिले में स्थित 1 जीसीटी भी शामिल है। इन 142 चालू जीसीटी की अनुमानित माल ढुलाई क्षमता 224 मिलियन टन प्रति वर्ष (एमटीपीए) है। इस नीति के माध्यम से इन जीसीटी में लगभग ₹10,000 करोड़ का निजी निवेश आकर्षित हुआ है। वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान इन जीसीटी में 146 मीट्रिक टन माल की ढुलाई हुई।

इसके अतिरिक्त, जम्मू-कश्मीर के तीन स्थानों यानी कठुआ, अनंतनाग और जम्मू जिलों सहित 310 और स्थानों पर गति शक्ति कार्गो टर्मिनल (जीसीटी) के विकास के लिए सैद्धांतिक अनुमोदन (आईपीए) प्रदान किए गए हैं।■

सिग्नल प्रणाली को मजबूत बनाना

भारतीय रेल अपनी सिग्नल प्रणाली के मौजूदा बुनियादी ढाँचे का निरंतर आधुनिकीकरण कर रहा है :

पुरानी यांत्रिक सिग्नल व्यवस्था के स्थान पर केंद्रीकृत संचालन वाले विद्युत/इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग सिस्टम दिनांक 30.06.2026 तक 6671 स्टेशनों पर स्थापित किए गए हैं, जिनमें से भारतीय रेल के 3954 स्टेशनों पर इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग सिस्टम लगाए गए हैं। इनमें पिछले 5 वर्षों के दौरान जम्मू-कश्मीर के पांच जिलों (सांबा-1, रियासी-4, रामबन-3, कठुआ-1 और जम्मू-2) के 11 इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग स्टेशन शामिल हैं।

भारतीय रेल पर 30.06.2026 तक 6671 स्टेशनों पर विद्युत माध्यमों से ट्रैक पर यात्रियों की उपस्थिति की पुष्टि करके सुरक्षा बढ़ाने के लिए स्टेशनों की पूर्ण ट्रैक सर्किटिंग की व्यवस्था की गई है, जिसमें पिछले 5 वर्षों के दौरान जम्मू और कश्मीर के पांच जिलों (सांबा-1, रियासी-4, रामबन-3, कठुआ-1 और जम्मू-2) के 11 स्टेशन शामिल हैं।

ब्लॉक सेक्शन की स्वचालित निकासी के लिए एक्सल काउंटर बीपीएसी (ब्लॉक प्रूविंग एक्सल काउंटर) लगाए गए हैं, ताकि अगली ट्रेन को लाइन क्लियर करने से पहले मैन्युअल हस्तक्षेप के बिना सभी ट्रेनों का आगमन सुनिश्चित किया जा सके और मानवीय हस्तक्षेप को कम किया जा सके। पिछले 5 वर्षों में जम्मू-कश्मीर के पांच जिलों (सांबा-1, रियासी-4, रामबन-3, कठुआ-1 और जम्मू-2) के 11 स्टेशनों सहित भारतीय रेल के 6085 ब्लॉक सेक्शनों पर 30.06.2026 तक ये सिस्टम लगाए जा चुके हैं।

कवच

- जम्मू-कश्मीर से गुजरने वाले निम्नलिखित खंडों पर लगभग 401 कि.मी. मार्ग के लिए कवच संस्करण 4.0 कार्यों को मंजूरी दी गई है :
- कठुआ-जम्मू तवी (76 रूट कि.मी.),
- जम्मू तवी-श्री माता वैष्णो देवी कटरा (78 रूट कि.मी.),
- कटरा - बनिहाल (112 कि.मी.),
- बनिहाल-बारामूला (135 रूट कि.मी.)।■

जम्मू-कश्मीर में संचालित ट्रेन सेवाएँ

भारतीय रेल ने वंदे भारत एक्सप्रेस की निम्नलिखित 4 जोड़ियां शुरू की हैं, जो जम्मू-कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश के अधिकार क्षेत्र में स्थित जम्मू तवी, श्री माता वैष्णो देवी कटरा और बडगाम जैसे महत्त्वपूर्ण स्टेशनों के यात्रियों को अपनी सेवाएँ मुहैया कराती हैं।

ट्रेन संख्या एवं नाम
26405/26406 अमृतसर-श्री माता वैष्णो देवी कटरा वंदे भारत एक्सप्रेस
26401/26402 जम्मू तवी-श्रीनगर वंदे भारत एक्सप्रेस
26403/26404 जम्मू तवी-श्रीनगर वंदे भारत एक्सप्रेस
22477/22478 नई दिल्ली-श्री माता वैष्णो देवी कटरा वंदे भारत एक्सप्रेस

इसके अलावा, श्री माता वैष्णो देवी कटरा और बड़गाम के बीच ट्रेन सेवा शुरू करने का निर्णय लिया गया है, यह सेवा 14687/14688 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-बडगाम एक्सप्रेस से दी जाएगी। इनके अलावा, भारतीय रेल ने एमसीटीएम उधमपुर तक निम्नलिखित सेवाएँ प्रदान करने की तैयारी की है।

ट्रेन संख्या एवं नाम
12549/12550 दुर्ग-जम्मू तवी एक्सप्रेस का उधमपुर तक विस्तार
22941/22942 इंदौर-जम्मू तवी एक्सप्रेस का उधमपुर तक विस्तार
18215/18216 दुर्ग-जम्मू तवी एक्सप्रेस का उधमपुर तक विस्तार

तदनुसार, जम्मू तवी स्टेशन तक वर्तमान में 114 ट्रेनें जाती हैं, जबकि एमसीटीएम उधमपुर स्टेशन तक 58 ट्रेनें चलती हैं। इसी प्रकार, श्री माता वैष्णो देवी कटरा स्टेशन पर 46 ट्रेनें, श्रीनगर पर 16 ट्रेनें और बडगाम पर 19 ट्रेनें चलती हैं। इन स्टेशनों पर चलने वाली ट्रेनों की सूची इस प्रकार है :

जम्मू तवी स्टेशन पर रुकने वाली ट्रेनें

ट्रेन संख्या और नाम
26401 जम्मू तवी-श्रीनगर वंदे भारत एक्सप्रेस
26402 श्रीनगर-जम्मू तवी वंदे भारत एक्सप्रेस
26403 जम्मू तवी-श्रीनगर वंदे भारत एक्सप्रेस
26404 श्रीनगर-जम्मू तवी वंदे भारत एक्सप्रेस
26405 अमृतसर-श्री माता वैष्णो देवी कटरा वंदे भारत एक्सप्रेस
26406 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-अमृतसर वंदे भारत एक्सप्रेस
22477 नई दिल्ली-श्री माता वैष्णो देवी कटरा वंदे भारत एक्सप्रेस
22478 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-नई दिल्ली वंदे भारत एक्सप्रेस
22439 नई दिल्ली-श्री माता वैष्णो देवी कटरा वंदे भारत एक्सप्रेस
22440 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-नई दिल्ली वंदे भारत एक्सप्रेस
12425 नई दिल्ली-जम्मू तवी राजधानी एक्सप्रेस
12426 जम्मू तवी-नई दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस
12265 दिल्ली सराय रोहिल्ला-जम्मू तवी दुरंतो एक्सप्रेस
12266 जम्मू तवी-दिल्ली सराय रोहिल्ला दुरंतो एक्सप्रेस
11077 पुणे जंक्शन-जम्मू तवी एक्सप्रेस
11078 जम्मू तवी-पुणे जंक्शन एक्सप्रेस
11449 जबलपुर-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
11450 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-जबलपुर एक्सप्रेस



12207 काठगोदाम-जम्मू तवी गरीब रथ एक्सप्रेस
12208 जम्मू तवी-काठगोदाम गरीब रथ एक्सप्रेस
12237 वाराणसी-जम्मू तवी एक्सप्रेस
12238 जम्मू तवी-वाराणसी एक्सप्रेस
12355 पटना-जम्मू तवी एक्सप्रेस
12356 जम्मू तवी-पटना एक्सप्रेस
12413 अजमेर-जम्मू तवी एक्सप्रेस
12414 जम्मू तवी-अजमेर एक्सप्रेस
12445 नई दिल्ली-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
12446 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-नई दिल्ली एक्सप्रेस
12469 कानपुर सेंट्रल-जम्मू तवी एक्सप्रेस
12470 जम्मू तवी-कानपुर सेंट्रल एक्सप्रेस
12471 बांद्रा (टी)-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
12472 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-बांद्रा (टी) एक्सप्रेस
12473 गांधीधाम-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
12474 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-गांधीधाम एक्सप्रेस
12475 हापा-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
12476 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-हापा एक्सप्रेस
12477 जामनगर-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
12478 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-जामनगर एक्सप्रेस
12549 दुर्ग-एमसीटीएम उधमपुर एक्सप्रेस
12550 एमसीटीएम उधमपुर-दुर्ग एक्सप्रेस
12587 गोरखपुर जंक्शन-जम्मू तवी एक्सप्रेस
12588 जम्मू तवी-गोरखपुर जंक्शन एक्सप्रेस
12751 हजूर साहिब नांदेड़-जम्मू तवी एक्सप्रेस
12752 जम्मू तवी-हजूर साहिब नांदेड़ एक्सप्रेस
12919 डॉ. अंबेडकर नगर-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
12920 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-डॉ. अम्बेडकर नगर एक्सप्रेस
13041 हावड़ा-जम्मू तवी एक्सप्रेस
13042 जम्मू तवी-हावड़ा एक्सप्रेस
13151 कोलकाता-जम्मू तवी एक्सप्रेस
13152 जम्मू तवी-कोलकाता एक्सप्रेस
14503 कालका-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
14504 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-कालका एक्सप्रेस
14605 योग नगरी ऋषिकेश-जम्मू तवी एक्सप्रेस
14606 जम्मू तवी-योग नगरी ऋषिकेश एक्सप्रेस
14609 योग नगरी ऋषिकेश-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
14610 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-योग नगरी ऋषिकेश एक्सप्रेस
14611 गाजीपुर सिटी-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
14612 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-गाजीपुर सिटी एक्सप्रेस
14661 बाड़मेर-जम्मू तवी एक्सप्रेस
14662 जम्मू तवी-बाड़मेर एक्सप्रेस
14691 बरौनी-जम्मू तवी एक्सप्रेस
14692 जम्मू तवी-बरौनी एक्सप्रेस

14803 भगत की कोठी-जम्मू तवी एक्सप्रेस
14804 जम्मू तवी-भगत की कोठी एक्सप्रेस
15097 भागलपुर-जम्मू तवी एक्सप्रेस
15098 जम्मू तवी-भागलपुर एक्सप्रेस
15651 गुवाहाटी-जम्मू तवी एक्सप्रेस
15652 जम्मू तवी-गुवाहाटी एक्सप्रेस
15653 गुवाहाटी-जम्मू तवी एक्सप्रेस
15654 जम्मू तवी-गुवाहाटी एक्सप्रेस
15655 कामाख्या-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
15656 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-कामाख्या एक्सप्रेस
16031 एमजीआर चेन्नई सेंट्रल-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
16032 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-एमजीआर चेन्नई सेंट्रल एक्सप्रेस
16317 कन्याकुमारी-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
16318 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-कन्याकुमारी एक्सप्रेस
16787 तिरुनेलवेली जं.-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
16788 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-तिरुनेलवेली जंक्शन एक्सप्रेस
18101 टाटानगर जं.-जम्मू तवी एक्सप्रेस
18102 जम्मू तवी-टाटानगर जंक्शन एक्सप्रेस
18309 संबलपुर-जम्मू तवी एक्सप्रेस
18310 जम्मू तवी-संबलपुर एक्सप्रेस
19027 बांद्रा (टी)-जम्मू तवी एक्सप्रेस
19028 जम्मू तवी-बांद्रा (टी) एक्सप्रेस
19107 भावनगर-एमसीटीएम उधमपुर एक्सप्रेस
19108 एमसीटीएम उधमपुर-भावनगर एक्सप्रेस
19223 साबरमती-जम्मू तवी एक्सप्रेस
19224 जम्मू तवी-साबरमती एक्सप्रेस
19415 साबरमती-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
19416 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-साबरमती एक्सप्रेस
19803 कोटा-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
19804 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-कोटा एक्सप्रेस
20433 सूबेदारगंज-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
20434 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-सूबेदारगंज एक्सप्रेस
20847 दुर्ग-एमसीटीएम उधमपुर एक्सप्रेस
20848 एमसीटीएम उधमपुर-दुर्ग एक्सप्रेस
20985 कोटा-एमसीटीएम उधमपुर एक्सप्रेस
20986 एमसीटीएम उधमपुर-कोटा एक्सप्रेस
22317 सियालदह-जम्मू तवी एक्सप्रेस
22318 जम्मू तवी-सियालदह एक्सप्रेस
22401 दिल्ली सराय रोहिल्ला-एमसीटीएम उधमपुर एक्सप्रेस
22402 एमसीटीएम उधमपुर-दिल्ली सराय रोहिल्ला एक्सप्रेस
22431 सूबेदारगंज-एमसीटीएम उधमपुर एक्सप्रेस
22432 एमसीटीएम उधमपुर-सूबेदारगंज एक्सप्रेस
22461 नई दिल्ली-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
22462 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-नई दिल्ली एक्सप्रेस

22705 तिरूपति-जम्मू तवी एक्सप्रेस
22706 जम्मू तवी-तिरुपति एक्सप्रेस
22941 इंदौर-एमसीटीएम उधमपुर एक्सप्रेस
22942 एमसीटीएम उधमपुर-इंदौर एक्सप्रेस
74906 एमसीटीएम उधमपुर-पठानकोट डेमू
74907 पठानकोट-एमसीटीएम उधमपुर डेमू
74909 पठानकोट-एमसीटीएम उधमपुर डेमू
74910 एमसीटीएम उधमपुर-पठानकोट डेमू

एमसीटीएम उधमपुर स्टेशन पर चलने वाली ट्रेनें

ट्रेन संख्या और नाम
26401 जम्मू तवी-श्रीनगर वंदे भारत एक्सप्रेस
26402 श्रीनगर-जम्मू तवी वंदे भारत एक्सप्रेस
26403 जम्मू तवी-श्रीनगर वंदे भारत एक्सप्रेस
26404 श्रीनगर-जम्मू तवी वंदे भारत एक्सप्रेस
22477 नई दिल्ली-श्री माता वैष्णो देवी कटरा वंदे भारत एक्सप्रेस
22478 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-नई दिल्ली वंदे भारत एक्सप्रेस
11449 जबलपुर-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
11450 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-जबलपुर एक्सप्रेस
12445 नई दिल्ली-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
12446 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-नई दिल्ली एक्सप्रेस
12471 बांद्रा (टी)-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
12472 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-बांद्रा (टी) एक्सप्रेस
12473 गांधीधाम-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
12474 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-गांधीधाम एक्सप्रेस
12475 हापा-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
12476 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-हापा एक्सप्रेस
12477 जामनगर-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
12478 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-जामनगर एक्सप्रेस
12549 दुर्ग-एमसीटीएम उधमपुर एक्सप्रेस
12550 एमसीटीएम उधमपुर-दुर्ग एक्सप्रेस
12919 डॉ. अंबेडकर नगर-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
12920 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-डॉ. अम्बेडकर नगर एक्सप्रेस
14503 कालका-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
14504 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-कालका एक्सप्रेस
14609 योग नगरी ऋषिकेश-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
14610 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-योग नगरी ऋषिकेश एक्सप्रेस
15655 कामाख्या-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
15656 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-कामाख्या एक्सप्रेस
16031 एमजीआर चेन्नई सेंट्रल-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
16032 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-एमजीआर चेन्नई सेंट्रल एक्सप्रेस
16317 कन्याकुमारी-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
16318 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-कन्याकुमारी एक्सप्रेस
16787 तिरुनेलवेली-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
16788 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-तिरुनेलवेली एक्सप्रेस
19107 भावनगर-एमसीटीएम उधमपुर एक्सप्रेस
19108 एमसीटीएम उधमपुर-भावनगर एक्सप्रेस
19415 साबरमती-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
19416 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-साबरमती एक्सप्रेस
19803 कोटा-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
19804 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-कोटा एक्सप्रेस
20433 सूबेदारगंज-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
20434 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-सूबेदारगंज एक्सप्रेस
20847 दुर्ग-एमसीटीएम उधमपुर एक्सप्रेस
20848 एमसीटीएम उधमपुर-दुर्ग एक्सप्रेस
20985 कोटा-एमसीटीएम उधमपुर एक्सप्रेस
20986 एमसीटीएम उधमपुर-कोटा एक्सप्रेस
22401 दिल्ली सराय रोहिल्ला-एमसीटीएम उधमपुर एक्सप्रेस
22402 एमसीटीएम उधमपुर-दिल्ली सराय रोहिल्ला एक्सप्रेस
22431 सूबेदारगंज-एमसीटीएम उधमपुर एक्सप्रेस
22432 एमसीटीएम उधमपुर-सूबेदारगंज एक्सप्रेस
22461 नई दिल्ली-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
22462 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-नई दिल्ली एक्सप्रेस
22941 इंदौर-एमसीटीएम उधमपुर एक्सप्रेस
22942 एमसीटीएम उधमपुर-इंदौर एक्सप्रेस
74906 एमसीटीएम उधमपुर-पठानकोट डेमू
74907 पठानकोट-एमसीटीएम उधमपुर डेमू
74909 पठानकोट-एमसीटीएम उधमपुर डेमू
74910 एमसीटीएम उधमपुर-पठानकोट डेमू

श्री माता वैष्णो देवी कटरा स्टेशन आने-जाने वाली ट्रेनें

ट्रेन संख्या और नाम
22439 नई दिल्ली-श्री माता वैष्णो देवी कटरा वंदे भारत एक्सप्रेस
22440 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-नई दिल्ली वंदे भारत एक्सप्रेस
26405 अमृतसर-श्री माता वैष्णो देवी कटरा वंदे भारत एक्सप्रेस
26406 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-अमृतसर वंदे भारत एक्सप्रेस
22477 नई दिल्ली-श्री माता वैष्णो देवी कटरा वंदे भारत एक्सप्रेस
22478 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-नई दिल्ली वंदे भारत एक्सप्रेस
11449 जबलपुर-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
11450 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-जबलपुर एक्सप्रेस
12445 नई दिल्ली-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
12446 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-नई दिल्ली एक्सप्रेस
12471 बांद्रा (टी)-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
12472 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-बांद्रा (टी) एक्सप्रेस
12473 गांधीधाम-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
12474 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-गांधीधाम बीजी एक्सप्रेस
12475 हापा-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
12476 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-हापा एक्सप्रेस

12477 जामनगर-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
12478 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-जामनगर एक्सप्रेस
12919 डॉ. अंबेडकर नगर-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
12920 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-डॉ. अम्बेडकर नगर एक्सप्रेस
14503 कालका-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
14504 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-कालका एक्सप्रेस
14609 योग नगरी ऋषिकेश-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
14610 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-योग नगरी ऋषिकेश एक्सप्रेस
14611 गाजीपुर सिटी-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
14612 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-गाजीपुर सिटी एक्सप्रेस
15655 कामाख्या-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
15656 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-कामाख्या एक्सप्रेस
16031 एमजीआर चेन्नई सेंट्रल-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
16032 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-एमजीआर चेन्नई सेंट्रल एक्सप्रेस
16317 कन्याकुमारी-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
16318 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-कन्याकुमारी एक्सप्रेस
16787 तिरुनेलवेली जंक्शन-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
16788 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-तिरुनेलवेली जंक्शन एक्सप्रेस
19415 साबरमती-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
19416 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-साबरमती एक्सप्रेस
19803 कोटा-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
19804 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-कोटा एक्सप्रेस
20433 सूबेदारगंज-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
20434 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-सूबेदारगंज एक्सप्रेस
22461 नई दिल्ली-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस
22462 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-नई दिल्ली एक्सप्रेस
26401 जम्मू तवी-श्रीनगर वंदे भारत एक्सप्रेस
26402 श्रीनगर-जम्मू तवी वंदे भारत एक्सप्रेस
26403 जम्मू तवी-श्रीनगर वंदे भारत एक्सप्रेस
26404 श्रीनगर-जम्मू तवी वंदे भारत एक्सप्रेस

बडगाम स्टेशन पर रूकने वाली ट्रेनें

ट्रेन संख्या और नाम
64651 संगलदान-बारामूला मेमू
64652 बारामुला-संगलदान मेमू
74613 बडगाम - बारामूला डेमू
74614 बारामूला -बनिहाल डेमू
74615 बनिहाल - बारामूला डेमू
74617 बनिहाल -बडगाम डेमू
74618 बारामूला - बडगाम डेमू
74619 संगलदान-बारामूला डेमू
74620 बारामुला-संगलदान डेमू
74621 बडगाम - बारामूला डेमू
74622 बारामूला -बनिहाल डेमू
74623 बनिहाल - बारामूला डेमू
74624 बारामूला - बडगाम डेमू
74625 बनिहाल - बारामूला डेमू
74626 बारामूला -बनिहाल डेमू
74628 बडगाम - बनिहाल डेमू
74630 बारामूला - बडगाम डेमू
74631 बडगाम - बारामूला डेमू
74632 बारामूला - बडगाम डेमू

श्रीनगर स्टेशन पर आने-जाने वाली ट्रेनें

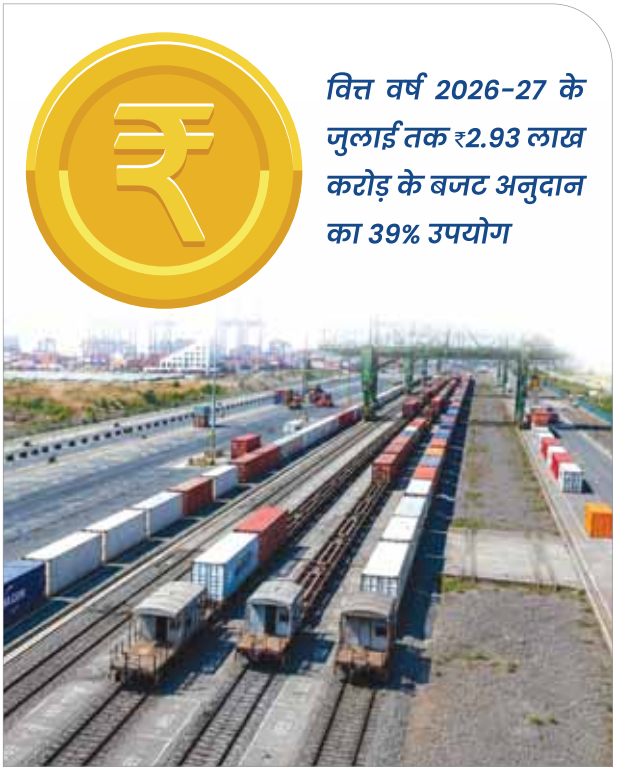
ट्रेन संख्या और नाम
26401 जम्मू तवी-श्रीनगर वंदे भारत एक्सप्रेस
26402 श्रीनगर-जम्मू तवी वंदे भारत एक्सप्रेस
26403 जम्मू तवी-श्रीनगर वंदे भारत एक्सप्रेस
26404 श्रीनगर-जम्मू तवी वंदे भारत एक्सप्रेस
64651 संगलदान-बारामूला मेमू
64652 बारामुला-संगलदान मेमू
74614 बारामूला - बनिहाल डेमू
74615 बनिहाल - बारामूला डेमू
74617 बनिहाल - बडगाम डेमू
74619 संगलदान-बारामूला डेमू
74620 बारामुला-संगलदान डेमू
74622 बारामूला - बनिहाल डेमू
74623 बनिहाल - बारामूला डेमू
74625 बनिहाल - बारामूला डेमू
74626 बारामूला - बनिहाल डेमू
74628 बडगाम - बनिहाल डेमू

भारतीय रेल
पत्रिका

अब
सोविनियर शॉप
राष्ट्रीय रेल संग्रहालय
चाणक्यपुरी, नई दिल्ली में भी उपलब्ध है

विकास की रफ्तार पर भारतीय रेल

₹1.14 लाख करोड़ का निवेश



वित्त वर्ष 2026-27 के कुल ₹2,93,030 करोड़ के बजट अनुदान में से, जुलाई 2026 तक ₹1,14,973 करोड़ (लगभग 39%) का खर्च किया जा चुका है। भारतीय रेल में संरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती है। पिछले कुछ वर्षों में उठाए गए विभिन्न सुरक्षा उपायों के परिणामस्वरूप, दुर्घटनाओं की संख्या में भारी कमी आई है।

भारतीय रेल में संरक्षा से संबंधित गतिविधियों पर खर्च पिछले कुछ वर्षों में इस प्रकार बढ़ा है :-

वित्त वर्ष	सुरक्षा संबंधी गतिविधियों पर व्यय/बजट
2013-14	39,200
2022-23	87,336
2023-24	1,01,662
2024-25	1,14,022
2025-26	1,17,693
2026-27	1,20,389

(₹करोड़ में)

रेलवे का वित्तीय अनुशासन मजबूत,

ऋण सेवा में स्थिरता और ब्याज भार में कमी

भारतीय रेल वित्त निगम (आईआरएफसी) भारतीय रेल की समर्पित बाजार ऋण लेने वाली समर्पित संगठन है। इसका प्राथमिक व्यवसाय रोलिंग स्टॉक परिसंपत्तियों, रेलवे अवसंरचना परियोजनाओं का वित्तपोषण और उन्हें रेलवे को पट्टे पर देना है। इसके अलावा, आईआरएफसी के पास अन्य संस्थाओं को ऋण देने का अधिकार है, जिनके पास रेलवे के लिए विद्युत उत्पादन और ट्रांसमिशन, खनन, ईंधन, कोयला, वेयरहाउसिंग, दूरसंचार, होटल और खानपान सेवा आदि फॉरवर्ड और बैकवर्ड लिंकेज हैं।

सरकार ने हाल के वर्षों के दौरान सकल बजटीय सहायता से रेलवे को पर्याप्त सहायता प्रदान की है, जिसका उपयोग अवसंरचना परियोजनाओं और चल स्टॉक के लिए किया गया है। इन्हें पहले अतिरिक्त बजटीय संसाधनों के माध्यम से वित्तपोषित किया जाता था।

भारतीय रेल द्वारा पिछले 5 वर्षों के दौरान आईआरएफसी और वित्त मंत्रालय को पट्टे शुल्क के मूलधन पुनर्भुगतान और ब्याज के भुगतान का विवरण इस प्रकार है :

वित्त वर्ष	मूलधन पुनर्भुगतान	ब्याज भुगतान	कुल
2021-22	14,192	14,510	28,702
2022-23	16,922	17,267	34,189
2023-24	20,084	17,946	38,030
2024-25	23,938	21,630	45,568
2025-26	24,853	21,685	46,538

(₹करोड़ में)



कोविड महामारी के बावजूद पिछले कुछ वर्षों में ऋण सेवा स्थिर रखी गई है।■

भारतीय रेल में इन्फ्रास्ट्रक्चर का महा अभियान

₹8.31 लाख करोड़ की लागत से बनेगा 40,000 कि.मी. क्षेत्र का नेटवर्क, 514 इन्फ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं को मिली मंजूरी

क्षमता वृद्धि और बुनियादी ढाँचे का विस्तार

भारतीय रेल द्वारा पिछले 12 वर्षों में रेलवे नेटवर्क की क्षमता बढ़ाने का कार्य बड़े पैमाने पर किया गया है। भारतीय रेल में नई लाइनों के निर्माण और कमीशनिंग का विवरण नीचे दिया गया है :

अवधि	नई लाइनें शुरू	नए ट्रैक का औसत कमीशनिंग
2009-14	7,599 कि.मी.	4.2 कि.मी./दिन
2014-26	36,429 कि.मी.	8.32 कि.मी./दिन (लगभग 2 गुना)

दिनांक 1 अप्रैल, 2026 तक, भारतीय रेल में कुल 40,000 कि.मी. लंबाई वाले 514 रेलवे इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स (169 नई लाइन, 29 गेज कन्वर्जन और 316 दोहरीकरण) को मंजूरी दी गई है, जिनकी लागत लगभग ₹8.31 लाख करोड़ है। इसका विवरण इस प्रकार है :-

श्रेणी	परियोजनाओं की संख्या	कुल लंबाई (कि.मी.) NL/GC/ DL (km)	मार्च '26 तक परिचालन में लाई गई लंबाई (कि.मी.)	मार्च '26 तक कुल व्यय (₹करोड़ में)
नई लाइनें	169	16,634	3,361	1,57,572
गेज परिवर्तन	29	3,987	3,045	24,227
दोहरीकरण	316	19,379	6,177	1,23,454
कुल	514	40,000	12,583	3,05,253

भारतीय रेल की गति क्षमता में वृद्धि

ट्रेनों की गति बढ़ाना एक निरंतर प्रयास और सतत प्रक्रिया है, जो पटरियों, सिग्नलिंग प्रणाली, ओएचई, उच्च शक्ति वाले लोकोमोटिव, आधुनिक कोचों आदि के अपग्रेडेशन पर निर्भर करती है।

पिछले 12 वर्षों में गति क्षमता बढ़ाने के लिए भारतीय रेल ट्रैक को अपग्रेड करने और सुधार का कार्य बड़े पैमाने पर किया गया है। ट्रैक अपग्रेड के उपायों में 60 किलोग्राम वाली पटरियों का उपयोग, चौड़े बेस वाले कंक्रीट स्लीपर, थिक वेब स्विच, वेल्डेबल सीएमएस क्रॉसिंग, लंबे रेल पैनल, एच-बीम स्लीपर, आधुनिक ट्रैक नवीनीकरण और रखरखाव मशीनें आदि शामिल हैं।



उपर्युक्त उपायों के परिणामस्वरूप रेल खंडों की गति क्षमता में काफी वृद्धि हुई है। वर्ष 2014 की तुलना में वर्ष 2026 में गति क्षमता का विवरण इस प्रकार है :

सेक्शनल गति (कि.मी./घंटा)	2014	2014 (%)	2026	2026 (%)
	ट्रैक कि.मी.	%	ट्रैक कि.मी.	%
130 और उससे अधिक	5,036	6.3	24,173	22.5
110 - 130	26,409	33.3	62,482	58.1
< 110 (110 से कम)	47,897	60.4	20,897	19.4
कुल	**79,342**	**100**	**1,07,552**	**100**

यह देखा जा सकता है कि भारतीय रेल के लगभग 81% रेलवे ट्रैक को 110 कि.मी./घंटा और उससे अधिक की गति के लिए अपग्रेड कर दिया गया है।

इसके अलावा, 'मिशन रफ्तार' के तहत स्वर्ण चतुर्भुज (गोल्डन क्वाड्रिलैटरल) के दो प्रमुख मार्गों यानी नई दिल्ली - मुंबई और नई दिल्ली - हावड़ा की गति क्षमता को 160 कि.मी./घंटा तक बढ़ाने का कार्य शुरू किया गया है।■

भारतीय रेल की बड़ी छलांग : माल ढुलाई में नया कीर्तिमान

डीएफसी और जीसीटी के विस्तार से माल ढुलाई में तेज वृद्धि; वित्त वर्ष 2025-26 में हुई 1,670 मिलियन टन

भारतीय रेल में माल परिवहन, क्षेत्रीय संपर्क और रेल की माल ढुलाई हिस्सेदारी बढ़ाने के लिए भारतीय रेल ने बहुआयामी रणनीति अपनाई है। इसके अंतर्गत माल ढुलाई की दक्षता बढ़ाने, निर्बाध क्षेत्रीय संपर्क सुनिश्चित करने तथा फर्स्ट और लास्ट माइल कनेक्टिविटी को मजबूत करने के लिए कई पहल की गई हैं। प्रमुख पहलों को नीचे वर्गीकृत किया गया है –



माल ढुलाई (मिलियन टन में)

टर्मिनल विकास- भारतीय रेल ने माल टर्मिनलों की क्षमता बढ़ाने के लिए दोहरी रणनीति अपनाई है। इसके अंतर्गत गति शक्ति मल्टी-मॉडल कार्गो टर्मिनल (जीसीटी) नीति के माध्यम से आधुनिक निजी माल टर्मिनलों को बढ़ावा दिया जा रहा है और रेलवे के स्वामित्व वाले माल शेड का उन्नयन किया जा रहा है।

निजी निवेश के माध्यम से माल ढुलाई टर्मिनलों की स्थापना को बढ़ावा देने के लिए जीसीटी नीति शुरू की गई है। जीसीटी के स्थान को उद्योगों की मांग, संभावित माल यातायात, उपलब्ध रेल अवसंरचना और संबंधित क्षेत्र की समग्र लॉजिस्टिक्स क्षमता के आधार पर तय किया जाता है।

अब तक 142 गति शक्ति कार्गो टर्मिनल चालू किए जा चुके हैं। इनकी अनुमानित माल ढुलाई क्षमता 224 मीट्रिक टन प्रतिवर्ष है। इन टर्मिनलों के माध्यम से लगभग ₹10,000 करोड़ का निजी निवेश आकर्षित हुआ है। वर्ष 2025-26 में इन टर्मिनलों से 146 मिलियन टन माल की ढुलाई की गई।

वैगन निवेश योजनाएं : रेलवे ने निजी क्षेत्र को वैगनों में निवेश के लिए विभिन्न योजनाएं लागू की हैं। इनमें सीमेंट, तेल, इस्पात और फ्लाई ऐश जैसी वस्तुओं के परिवहन के लिए विशेष वैगनों की व्यवस्था भी शामिल है। अब तक लगभग 275 विशेष प्रयोजन रेक और 397 सामान्य प्रयोजन रेक परिचालन में हैं। इससे सीमेंट, फ्लाई ऐश, इस्पात उत्पाद, लौह अयस्क और कोयले जैसी वस्तुओं के रेल परिवहन में हिस्सेदारी बढ़ने की उम्मीद है। इसके अलावा, ऑटोमोबाइल परिवहन के लिए भी एक अलग योजना लागू है। इसके अंतर्गत उद्योगों के स्वामित्व वाले लगभग 54 रेक परिचालन में हैं। संयुक्त पार्सल उत्पाद-रैपिड कार्गो सेवा (जेपीपी-आरसीएस) योजना के अंतर्गत ग्राहकों को आवश्यकता आधारित लॉजिस्टिक्स और डोर-टू-डोर पार्सल सेवा उपलब्ध कराई जा रही है। इस योजना में वर्चुअल एग्रीगेशन प्लेटफॉर्म के माध्यम से ऑनलाइन बुकिंग की सुविधा भी दी गई है।

रेल मंत्रालय के सार्वजनिक उपक्रम कॉनकॉर दिल्ली-कोलकाता और मुंबई-कोलकाता मार्गों पर जेपीपी-आरसीएस के अंतर्गत डोर-टू-डोर पार्सल सेवाएँ उपलब्ध करा रहा है। सोनिक गुड्स शेड में भी पायलट परियोजना के रूप में ऐसी ही सेवा शुरू की गई है।

समर्पित माल गलियारे (डीएफसी) : रेल मंत्रालय ने दो समर्पित माल गलियारों का निर्माण किया है। इनमें पूर्वी समर्पित माल गलियारा

(ईडीएफसी) लुधियाना से सोननगर तक 1,337 कि.मी. तथा पश्चिमी समर्पित माल गलियारा (डब्ल्यूडीएफसी) दादरी से जवाहरलाल नेहरू पोर्ट टर्मिनल (जेएनपीटी) तक 1,506 कि.मी. लंबा है। दोनों समर्पित माल गलियारे पूरी तरह चालू हो चुके हैं।

इन गलियारों पर प्रतिदिन औसतन 443 मालगाड़ियों का संचालन किया जा रहा है। समर्पित माल गलियारा के शुरू होने से माल ढुलाई की मात्रा में लगातार वृद्धि हुई है। इसके साथ ही ट्रेनों की औसत गति बढ़ी है, परिचालन में लगने वाला समय कम हुआ है और सेवाओं की विश्वसनीयता बेहतर हुई है। माल यातायात को डीएफसी पर स्थानांतरित किए जाने से पारंपरिक रेल नेटवर्क पर अतिरिक्त क्षमता उपलब्ध हुई है। इससे भारतीय रेल को अधिक मालगाड़ियाँ और यात्री ट्रेनें चलाने में मदद मिली है।

समर्पित माल गलियारा- डीएफसी परियोजना से परिवहन और लॉजिस्टिक्स क्षेत्र को भी लाभ मिलेगा। इसके माध्यम से डबल स्टैक कंटेनर ट्रेनों, अधिक एक्सल लोड वाली मालगाड़ियों का संचालन आसान होगा, पश्चिमी बंदरगाहों से उत्तर भारत तक तेज पहुँच सुनिश्चित होगी और डीएफसी मार्ग के साथ नए माल टर्मिनलों तथा उद्योगों से बेहतर संपर्क विकसित होगा। केंद्रीय बजट 2026 में डंकुनी से सूरत तक नए समर्पित माल गलियारे की घोषणा की गई है। इसके लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार और अद्यतन करने का कार्य शुरू कर दिया गया है।

इन पहलों के परिणामस्वरूप पिछले कुछ वर्षों में माल ढुलाई और राजस्व में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। वर्ष 2014 से भारतीय रेल की माल ढुलाई का विवरण इस प्रकार है :

वित्त वर्ष	माल लदान (मिलियन टन में)
2014-15	1098
2015-16	1104
2016-17	1109
2017-18	1162
2018-19	1223
2019-20	1210
2020-21	1233
2021-22	1418
2022-23	1512
2023-24	1591
2024-25	1617
2025-26	1670

वित्त वर्ष 2025-26 में भारतीय रेल की माल ढुलाई बढ़कर 1,670 मिलियन टन हो गई।■

गत वर्ष की अपेक्षा 9% की माल ढुलाई में वृद्धि

जुलाई 2026 में 141 मिलियन टन से ज्यादा माल ढुलाई

भारतीय रेल ने जुलाई 2026 के दौरान अपना मजबूत संचालनात्मक निष्पादन जारी रखा। इसने माल ढुलाई और यात्री सेवा दोनों क्षेत्रों में अच्छी वृद्धि दर्ज की। ज्यादा माल ढुलाई, यात्रियों के आवागमन में बढ़ोतरी, बेहतर राजस्व अर्जन और आवश्यक वस्तुओं की बढ़ी हुई आवाजाही, आर्थिक वृद्धि को समर्थन करने, लॉजिस्टिक सुविधाओं को मजबूत करने और पूरे देश में भरोसेमंद आवागमन की सुविधा प्रदान करने में भारतीय रेल की महत्त्वपूर्ण भूमिका को दर्शाते हैं। भारतीय रेल ने जुलाई 2026 में 141.3 मिलियन टन माल ढुलाई की, जबकि पिछले साल इसी महीने में 129.7 मिलियन टन माल ढुलाई हुई थी, जो 9% की बढ़ोतरी दर्शाता है।

जुलाई 2026 के दौरान कई बड़े कमोडिटी समूहों ने साल-दर-साल अच्छी वृद्धि दर्ज की। लौह अयस्क की ढुलाई में 22.2%, कोयले में 11.5%, अनाज में 11.5%, फर्टिलाइजर में 12% और बाकी दूसरे सामान में 12.1% की बढ़ोतरी हुई, जो इंफ्रास्ट्रक्चर, विनिर्माण और कृषि क्षेत्र से मजबूत मांग को दिखाता है। थर्मल पावर संयंत्रों में कोयले की मांग बढ़ने के साथ, भारतीय रेल ने पिछले साल इसी महीने की तुलना में जुलाई में विद्युत संयंत्रों को घरेलू कोयले की आपूर्ति 20% बढ़ा दी।



माल ढुलाई में बढ़ोतरी की वजह से जुलाई 2025 में माल ढुलाई से ₹1,137 करोड़ का अतिरिक्त राजस्व अर्जित हुआ, जो 8% की बढ़ोतरी है। क्षेत्रीय रेलवे में, पूर्व-मध्य रेलवे (33%), पूर्व रेलवे (33%), पश्चिम-मध्य रेलवे (23%) और दक्षिण-पूर्व रेलवे (10.33%) ने माल ढुलाई से प्राप्त राजस्व में अच्छी बढ़ोतरी दर्ज की।

जुलाई 2026 में भारतीय रेल ने 63.35 करोड़ पैसेंजरों को ढोया, जबकि पिछले साल इसी महीने में यह संख्या 62.19 करोड़ थी। उपनगरीय और गैर-उपनगरीय, दोनों क्षेत्रों में पैसेंजर ट्रैफिक बढ़ता रहा, जो देश भर में रेल यात्रा के लिए बढ़ती पसंद को दिखाता है।■

रेलवे ने दी कंटेनर ट्रेन ऑपरेटरों को बड़ी राहत

अब एक लाइसेंस, पूरे देश में परिचालन

परिवहन लागत और प्रदूषण में आएगी कमी, सड़कों पर भीड़भाड़ में राहत तथा उद्योग, विशेषकर एमएसएमई को होगा लाभ



भारतीय रेल ने अपने नेटवर्क पर कंटेनर ट्रेनों के परिचालन के लिए ऑपरेटरों को अनुमति देने संबंधी मॉडल कन्सेशन एग्रीमेंट (एमसीए) में संशोधनों को मंजूरी दी है। स्वीकृत संशोधनों के तहत अब कंटेनर ट्रेन ऑपरेटरों (सीटीओ) को अलग-अलग मार्ग श्रेणियों के लिए पृथक अनुमति और शुल्क की मौजूदा व्यवस्था के स्थान पर ₹25 करोड़ के एकसमान पंजीकरण शुल्क के साथ सिंगल ऑल इंडिया लाइसेंस के आधार पर भारतीय रेल नेटवर्क के सभी मार्गों पर कंटेनर ट्रेनों का परिचालन करने की अनुमति होगी।

सभी मार्गों के लिए एकल लाइसेंस

स्वीकृत संशोधनों के तहत लाइसेंस की वर्तमान मार्ग-वार श्रेणीकरण व्यवस्था समाप्त कर दी जाएगी। रेल मंत्रालय की स्वीकृति के अधीन, कंटेनर ट्रेन ऑपरेटरों को सिंगल ऑल इंडिया लाइसेंस प्रदान किया जाएगा, जिससे वे भारतीय रेल नेटवर्क के सभी मार्गों पर कंटेनर ट्रेनों का परिचालन कर सकेंगे।

एकसमान पंजीकरण शुल्क

विभिन्न मार्ग श्रेणियों के लिए अलग-अलग पंजीकरण शुल्क लेने की मौजूदा व्यवस्था समाप्त कर दी गई है। अब प्रत्येक आवेदक को भारतीय रेल नेटवर्क के सभी मार्गों पर परिचालन के लिए ₹25 करोड़ का अप्रतिदेय एकसमान पंजीकरण शुल्क जमा करना होगा।

लाइसेंस विस्तार पर कोई शुल्क नहीं

स्वीकृत संशोधनों के अनुसार, कंटेनर ट्रेन ऑपरेटर को दी गई अनुमति की अवधि समाप्त होने के बाद उसे आगे 20 वर्षों के लिए बढ़ाया जा सकेगा। यह विस्तार सक्षम प्राधिकारी द्वारा ऑपरेटर के आवेदन तथा उसके संतोषजनक प्रदर्शन के आधार पर प्रदान किया जाएगा। इस विस्तार अथवा भविष्य में उसी ऑपरेटर को दिए जाने वाले किसी भी अन्य विस्तार के लिए कोई विस्तार शुल्क नहीं लिया जाएगा।

मौजूदा ऑपरेटरों को राहत

कैटेगरी-I लाइसेंसधारी ऑपरेटर अपनी वर्तमान श्रेणी के अंतर्गत अपनी कन्सेशन अवधि समाप्त होने तक परिचालन जारी रख सकेंगे। नई लाइसेंस व्यवस्था के तहत नवीनीकरण या विस्तार के समय उनसे कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा।

कैटेगरी-II, III और IV के ऑपरेटर भी अपनी वर्तमान श्रेणियों के अंतर्गत अपनी कन्सेशन अवधि पूरी होने तक परिचालन जारी रख सकेंगे। नई लाइसेंस व्यवस्था के तहत नवीनीकरण या विस्तार के लिए उन्हें ₹15 करोड़ का भुगतान करना होगा। यह राशि नए ₹25 करोड़ के शुल्क और पहले से जमा किए गए ₹10 करोड़ के बीच का अंतर है। यह राशि अप्रतिदेय होगी।

ये ऑपरेटर अपनी 20 वर्ष की कन्सेशन अवधि पूरी होने से पहले भी नई लाइसेंस व्यवस्था में स्थानांतरित होने का विकल्प चुन सकते हैं। ऐसी स्थिति में भी उन्हें ₹15 करोड़ का ही भुगतान करना होगा।

उद्योग को लाभ

एक समान पंजीकरण शुल्क तथा लाइसेंस विस्तार शुल्क समाप्त किए जाने से ऑपरेटरों के नियामकीय एवं अनुपालन संबंधी खर्चों में कमी आएगी तथा अनुमोदन प्रक्रिया सरल होगी। सरल लाइसेंसिंग व्यवस्था से निजी क्षेत्र की अधिक भागीदारी को बढ़ावा मिलेगा तथा कंटेनर ट्रेन परिचालन का विस्तार होगा, जिससे देशभर में रेल आधारित माल परिवहन को प्रोत्साहन मिलेगा। कंटेनर परिवहन में रेल के अधिक उपयोग से उद्योग, विशेषकर सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई), की लॉजिस्टिक्स लागत कम होगी, क्योंकि उन्हें अधिक दक्ष और लागत-प्रभावी माल परिवहन का विकल्प उपलब्ध होगा।

कंटेनर यातायात का सड़क से रेल की ओर अधिक स्थानांतरण होने से राष्ट्रीय राजमार्गों पर भीड़भाड़ कम होगी, ईंधन की खपत घटेगी तथा कार्बन उत्सर्जन में कमी आएगी, जिससे अधिक टिकाऊ माल परिवहन व्यवस्था को बढ़ावा मिलेगा।

स्वीकृत संशोधनों का उद्देश्य भारतीय रेल नेटवर्क पर कंटेनर ट्रेन ऑपरेटरों के लिए एक सरल और एकरूप लाइसेंसिंग व्यवस्था स्थापित करना है। इन सुधारों से अनुमोदन प्रक्रिया अधिक सुव्यवस्थित होगी तथा मॉडल कन्सेशन एग्रीमेंट के अंतर्गत कंटेनर ट्रेन परिचालन के लिए एक समान नियामकीय ढाँचा उपलब्ध होगा।■



वंदे भारत बनी लाइफलाइन : पहली बार जीवित हृदय का सफल परिवहन

सूरत से अहमदाबाद तक जीवनरक्षक मिशन को बनाया संभव



दिनांक 31 जुलाई, 2026 को भारतीय रेल ने स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल करते हुए पहली बार वंदे भारत एक्सप्रेस के माध्यम से जीवित हृदय (Live Heart) का सफलतापूर्वक परिवहन किया। सूरत से अहमदाबाद तक हृदय को ट्रेन संख्या 20901 मुंबई सेंट्रल–गांधीनगर कैपिटल वंदे भारत एक्सप्रेस से सुरक्षित एवं निर्धारित समय में पहुँचाया गया। इस हृदय का प्रत्यारोपण यू.एन. मेहता इंस्टीट्यूट ऑफ कार्डियोलॉजी एंड रिसर्च सेंटर, अहमदाबाद में किया जाएगा।

यह अत्यंत संवेदनशील और समयबद्ध जीवनरक्षक अभियान भारतीय रेल, गुजरात राज्य पुलिस, रेलवे सुरक्षा बल तथा चिकित्सा टीमों के बीच उत्कृष्ट समन्वय का उदाहरण रहा। हृदय को अस्पताल तक सुरक्षित एवं निर्बाध रूप से पहुँचाने के लिए RPF और पुलिस द्वारा ग्रीन कॉरिडोर बनाया गया।

मंडल रेल प्रबंधक वेद प्रकाश ने वंदे भारत एक्सप्रेस की गति, समयपालन और विश्वसनीयता ने इस जीवनरक्षक अभियान को सफल बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारतीय रेल केवल यात्रियों और माल के परिवहन तक सीमित नहीं है, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर आपातकालीन एवं जीवनरक्षक स्वास्थ्य सेवाओं में भी महत्त्वपूर्ण सहयोगी की भूमिका निभा रही है।■

रेलवे की तत्परता से चलती ट्रेन में मानवता की मिसाल

गंभीर मरीज को समय पर मिला ऑक्सीजन सिलेंडर, सुरक्षित जारी रही यात्रा

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के नागपुर मंडल ने मानवीय संवेदनशीलता और त्वरित समन्वय का परिचय देते हुए ट्रेन संख्या 12809 हावड़ा–सीएसएमटी मेल में यात्रा कर रही 65 वर्षीय गंभीर मरीज के लिए समय पर मेडिकल ऑक्सीजन सिलेंडर की व्यवस्था की।

दिनांक 21 जुलाई, 2026 को सुनीता अपने परिजनों के साथ ट्रेन के कोच A2 में यात्रा कर रही थीं। उन्हें निरंतर ऑक्सीजन की आवश्यकता थी। नागपुर स्टेशन से ट्रेन के रवाना होने के बाद नियमित टिकट जाँच के दौरान परिजनों ने ट्रेन कैप्टन एवं उप मुख्य टिकट निरीक्षक, नागपुर राजेश मिश्रा को बताया कि उपलब्ध सिलेंडर में केवल कुछ घंटे की ऑक्सीजन शेष है।

स्थिति की गंभीरता को देखते हुए उन्होंने तत्काल नागपुर कमर्शियल कंट्रोल से संपर्क कर अगले स्टेशन पर ऑक्सीजन सिलेंडर उपलब्ध कराने के प्रयास किए। नागपुर में तत्काल व्यवस्था संभव नहीं होने पर रायपुर कमर्शियल कंट्रोल, स्टेशन अधिकारियों और मेडिकल टीम के साथ समन्वय किया गया। प्रारंभिक व्यावहारिक कठिनाइयों के बावजूद लगातार प्रयासों से रायपुर में आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित की गई। ट्रेन के रायपुर स्टेशन पहुँचते ही टीम ने मेडिकल ऑक्सीजन सिलेंडर कोच तक पहुँचाया कर उसे तुरंत स्थापित किया। समय पर सहायता मिलने से उनकी ऑक्सीजन आपूर्ति बनी रही और वे सुरक्षित रूप से अपनी यात्रा जारी रख सकीं।

इस पूरी कार्रवाई में रेलवे के विभिन्न विभागों के बीच प्रभावी समन्वय और त्वरित निर्णय महत्त्वपूर्ण रहे। मरीज के परिजनों ने रेलवे कर्मचारियों की तत्परता और संवेदनशीलता के लिए आभार व्यक्त किया।■



मेक इन इंडिया का जलवा : बांग्लादेश की पटरियों पर दौड़ेंगे कपूरथला में बने आधुनिक सुविधायुक्त रेक डिब्बे



रेल डिब्बा कारखाना, कपूरथला, दिनांक 12 अगस्त, 2026 को बांग्लादेश रेलवे के लिए 19 एलएचबी ब्रॉड गेज रेल डिब्बों वाले पहले रेक के रोल-आउट के साथ एक और महत्त्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करने जा रहा है।

इस रेक में 3 AC स्लीपर कार, 3 AC चेयर कार, 11 नॉन-AC चेयर कार तथा 2 पावर कार शामिल हैं। इन रेल डिब्बों में कई विशिष्ट डिजाइन विशेषताओं एवं संशोधनों को शामिल किया गया है, जिनमें से अनेक LHB प्रकार के डिब्बों में पहली बार विकसित किए गए हैं।

इन कोचों को बांग्लादेश रेलवे की परिचालन एवं यात्री आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विशेष रूप से कस्टमाइज किया गया है। इनमें यात्रियों की सुविधा के लिए विशेष रूप से डिजाइन की गई रिक्लाइनिंग चेयर, स्टेनलेस स्टील आर्मरेस्ट एवं स्टेनलेस स्टील फुटरेस्ट तथा सीटों को कई पोजीशन में रिक्लाइन करने की सुविधा प्रदान की गई है।

कोचों में यात्रियों की सुविधा एवं सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए अनेक आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध कराई गई हैं, जिनमें AC कोचों में पंखे, इंटीग्रेटेड CCTV सर्विलांस सिस्टम, पैसेंजर अलार्म सिस्टम, आंशिक रूप से खुलने वाली खिड़कियाँ, बेबी केयर रूम तथा प्रार्थना कक्ष शामिल हैं। विशिष्ट परिचालन परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए कोचों की रूफ स्ट्रक्चर को भी मजबूत किया गया है, ताकि पीक ट्रैफिक अवधि के दौरान छत पर यात्रियों के अतिरिक्त भार को सहन किया जा सके।

इन कोचों की एक प्रमुख तकनीकी विशेषता यूरोपीय मानक EN 15227 के अनुरूप Crashworthy Design Provisions का समावेश है। इसके लिए कार बॉडी शेल के व्यापक पुनः डिजाइन की आवश्यकता पड़ी, जिससे टक्कर की स्थिति में बेहतर प्रदर्शन तथा यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। इन कोचों की विद्युत प्रणाली को भी विशेष रूप से 415 V ऑपरेशन के लिए डिजाइन किया गया है, जबकि भारतीय रेल के कोचों में सामान्यतः 750 V प्रणाली का उपयोग किया जाता है।



RCF और बांग्लादेश रेलवे के बीच सहयोग की शुरुआत 2015-16 में 120 LHB ब्रॉड गेज यात्री कोचों की सफल आपूर्ति के साथ हुई थी। इस सफल साझेदारी को आगे बढ़ाते हुए बांग्लादेश रेलवे ने वर्ष 2024 में एक बार फिर RITES के माध्यम से RCF को सात विभिन्न प्रकार के 200 ब्रॉड गेज यात्री कोचों के निर्माण एवं आपूर्ति का प्रतिष्ठित ऑर्डर प्रदान किया।■

रेलवे ने शुरू किया 'स्वच्छ पेयजल अभियान'

टंकियों और फिल्टरों की होगी सघन सफाई

दिनांक 24 अगस्त, 2026 को भारतीय रेल ने स्टेशनों पर यात्रियों के लिए सुरक्षित और स्वच्छ पेयजल की निरंतर उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए पानी की टंकियों और फिल्टरों की सफाई और उन्हें कीटाणु मुक्त बनाने के लिए विशेष स्वच्छता अभियान शुरू किया है।

यह पहल भारतीय रेल में पेयजल गुणवत्ता प्रबंधन को सुदृढ़ करने के लिए बनाई गई व्यापक कार्य योजना का हिस्सा है। इस कार्य योजना में संपूर्ण पेयजल प्रणाली के नियमित निरीक्षण और रखरखाव पर जोर दिया गया है। इसमें पाइपलाइन के अंत में जल परीक्षण के साथ स्रोत और उपभोग स्थल दोनों पर जल गुणवत्ता परीक्षण करने पर भी बल दिया गया है।

क्षेत्रीय रेलवे इस अभियान के दौरान जल स्रोतों, उपचार एवं निस्पंदन संयंत्रों, भूमिगत और ओवरहेड टैंक, पीवीसी टैंक, जल बूथ, नलों और जल वितरण बिंदुओं का व्यापक निरीक्षण करेगी। सभी पानी की टंकियों को खाली करके उनकी सफाई के बाद कीटाणुरहित किया जाएगा। इसके अलावा, वेंट और ओवरफ्लो बिंदुओं को पक्षियों, जानवरों और शैवाल से बचाने के लिए उचित सुरक्षा उपाय भी किए जाएंगे। उन स्थानों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा जहाँ पीने के पानी के लिए हैंडपंप और बोरवेल का उपयोग किया जा रहा है। क्षेत्रीय रेलवे यह सुनिश्चित करेगा कि इनसे प्राप्त जल पीने के लिए सुरक्षित हो।

जल गुणवत्ता प्रबंधन को सुदृढ़ बनाना

रेलवे बोर्ड ने व्यापक कार्य योजना के अंतर्गत, क्षेत्रीय रेलवे को वाटर कूलर और जल शोधन प्रणालियों का व्यापक निरीक्षण करने की सलाह दी है। कूलरों में लगे पानी के टैंक की पूरी तरह सफाई की जाएगी, कूलरों, पाइपलाइनों और नलों में होने वाले रिसावों को तुरंत ठीक किया जाएगा और वाटर कूलर वितरण क्षेत्रों के आसपास शत प्रतिशत स्वच्छता सुनिश्चित की जाएगी।

वाटर कूलर के लिए यूवी/आरओ प्रणालियों की उचित जाँच की जाएगी और आवश्यकतानुसार उन्हें उपलब्ध कराया जाएगा। निर्धारित रखरखाव, सर्विसिंग, मरम्मत और फिल्टर कैंडल्स तथा अन्य घटकों का समय पर प्रतिस्थापन किया जाएगा। नई या प्रतिस्थापन यूवी/आरओ प्रणालियाँ, उनकी स्थिति और आवश्यकता के आधार पर, मिशन मोड में लगाई जाएंगी।

सफाई और गुणवत्ता निगरानी के लिए निर्धारित उपाय पानी बेचने वाली मशीनों पर भी लागू होंगे ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि



इन सुविधाओं के माध्यम से वितरित पेयजल आवश्यक सुरक्षा और स्वच्छता मानकों को पूरा करता है।

अधिकारी चिन्हित स्थानों से लिए गए जल नमूनों का भौतिक, रासायनिक और जीवाणु परीक्षण करेंगे, जिनमें स्रोत, उपचार के बाद के निकास द्वार, टैंक, कूलर, वेंडिंग मशीन और नल या बूथ शामिल हैं दैनिक आधार पर अवशिष्ट क्लोरीन की निगरानी भी की जाएगी और आवश्यकता पड़ने पर तत्काल पुनः क्लोरीनीकरण या अन्य सुधारात्मक कार्रवाई की जाएगी।

बुनियादी ढाँचे की निगरानी और सुधारात्मक कार्रवाई

रेलवे बोर्ड ने क्षेत्रीय रेलवे को निर्देश दिया है कि वे मौजूदा ओवरहेड और अंडरग्राउंड टैंक के प्रतिस्थापन और नए टैंक के निर्माण के लिए स्वीकृत कार्यों की निगरानी करें और उनमें तेजी लाएं। इन स्वीकृत कार्यों का सारांश भी तैयार किया जाएगा और जहाँ भी आवश्यक होगा, नए अनुमोदन की प्रक्रिया शुरू की जाएगी।

पेयजल आपूर्ति श्रृंखला के विभिन्न चरणों में संदूषण की पहचान और रोकथाम के लिए, स्रोत और नल दोनों स्थानों पर विभिन्न स्थितियों के लिए उपयुक्त प्रणालियों पर भी काम किया जा रहा है।

इस कार्य योजना में रेलवे कॉलोनियों और कार्यस्थलों में पेयजल अवसंरचना के लिए भी इसी तरह के उपायों की परिकल्पना की गई है, जिससे सुरक्षित और स्वच्छ पेयजल पर ध्यान यात्री क्षेत्रों से परे भी विस्तारित हो सके।■

भारतीय रेल की खाद्य गुणवत्ता पर कड़ी नजर

खाद्य गुणवत्ता में लापरवाही पर ₹5.13 करोड़ जुर्माना, 54 को नोटिस और 6 अनुबंध समाप्त

भारतीय रेल औसतन प्रति वर्ष लगभग 58 करोड़ थाली भोजन परोसती है। भोजन की गुणवत्ता से संबंधित शिकायतें औसतन केवल 0.0008 प्रतिशत ही मिलती हैं। पिछले तीन वर्षों में प्राप्त शिकायतों के आधार पर आईआरसीटीसी ने उचित दंडात्मक कार्रवाई की है। जिसमें भोजन की गुणवत्ता और स्वच्छता के उल्लंघन के लिए ₹5.13 करोड़ का जुर्माना लगाना, 54 कारण बताओ नोटिस जारी करना, 6 अनुबंध समाप्त करना और लाइसेंसधारियों पर प्रतिबंध लगाना शामिल है। प्रतिबंधित लाइसेंसधारियों की सूची आईआरसीटीसी की वेबसाइट पर प्रकाशित है।



खाद्य सुरक्षा अधिकारियों सहित रेलवे/ आईआरसीटीसी अधिकारी गुणवत्ता, स्वच्छता, सुरक्षा और नियामक अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए नियमित और औचक निरीक्षण करते हैं। इन निरीक्षणों में खाद्य सुरक्षा, कर्मचारियों की तैनाती, उपकरणों का रखरखाव, स्वच्छता और निर्धारित मानकों का पालन जैसे प्रमुख पहलुओं को शामिल किया जाता है। साथ ही खाद्य पदार्थों के प्रबंधन, भंडारण और तैयारी में सर्वोत्तम प्रथाओं को बढ़ावा दिया जाता है।

भारतीय रेल निर्धारित मानदंडों के अनुसार यात्रियों को उच्च गुणवत्ता और स्वच्छता युक्त खाद्य पदार्थ उपलब्ध कराने का निरंतर प्रयास करता है। गुणवत्ता, स्वच्छता और खाद्य सुरक्षा में सुधार के लिए निम्नलिखित उपाय किए गए हैं :

- निर्धारित बेस किचन से भोजन की आपूर्ति।
- चिन्हित स्थानों पर आधुनिक बेस किचन की स्थापना।
- भोजन तैयार करने की प्रक्रिया की तत्क्षण और बेहतर निगरानी के लिए बेस किचन में सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएंगे।
- खाद्य उत्पादन के लिए लोकप्रिय और ब्रांडेड कच्चे माल का चयन और उपयोग।
- खाद्य सुरक्षा और स्वच्छता तौर-तरीकों की निगरानी के लिए मुख्य रसोईघरों में खाद्य सुरक्षा पर्यवेक्षकों की तैनाती।
- ट्रेनों में आईआरसीटीसी के पर्यवेक्षकों की तैनाती।
- ट्रेनों में भोजन के पैकेटों पर क्यूआर कोड लगाने से खाद्य सुरक्षा, पारदर्शिता और यात्रियों में जागरूकता बढ़ाने में मदद मिलेगी। क्यूआर कोड के माध्यम से यात्रियों को पैकिंग की तारीख, लाइसेंसधारक का नाम और एफएसएसएआई लाइसेंस नंबर जैसी जानकारी मिलेगी।
- बेस किचन और पैंट्री कारों में नियमित रूप से गहन सफाई और समय-समय पर कीट नियंत्रण।
- खाद्य सुरक्षा मानकों के अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए एफएसएसएआई का अनिवार्य प्रमाणन।
- खानपान कर्मचारियों का आईआरसीटीसी नियमित प्रशिक्षण आयोजित करता है, जिसमें ग्राहक सेवा क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जैसे कि संचार, विनम्र व्यवहार, सेवा मानक, व्यक्तिगत साज-सज्जा और स्वच्छता।
- पैंट्री कारों और बेस किचन में भोजन की स्वच्छता और गुणवत्ता की जाँच के लिए तृतीय पक्ष ऑडिट किया जाता है। ग्राहक संतुष्टि सर्वेक्षण भी आयोजित किया जाता है।■



आईआरसीटीसी वॉर रूम की कार्यप्रणाली की समीक्षा



रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं सीईओ सतीश कुमार ने दिनांक 24 अगस्त, 2026 को आईआरसीटीसी कार्यालय में आईआरसीटीसी वॉर रूम के कामकाज की समीक्षा की। उन्होंने खान-पान सेवाओं की गुणवत्ता एवं स्वच्छता बेहतर बनाने के लिए यात्री फीडबैक, रसोई की निगरानी, निरीक्षण व्यवस्था और शिकायतों के त्वरित निस्तारण को और प्रभावी बनाने के निर्देश दिए।

समीक्षा के दौरान सतीश कुमार ने निगरानी एवं फीडबैक से जुड़ी टीम के साथ बातचीत की और मौजूदा व्यवस्थाओं को अधिक जवाबदेह, तकनीक आधारित तथा परिणामोन्मुख बनाने पर जोर दिया। उन्होंने 'रेल मदद' इंटरफेस को अधिक स्वचालित बनाने के निर्देश दिए, ताकि यात्री एक क्लिक के माध्यम से अपनी शिकायत दर्ज करा सकें। शिकायतों की सूक्ष्म निगरानी के साथ-साथ आवश्यकता पड़ने पर यात्रियों से सीधे संपर्क कर उनकी समस्याओं को समझने और समाधान सुनिश्चित करने पर भी बल दिया गया।

रसोई की वास्तविक समय में निगरानी को मजबूत करने के लिए मौजूदा कैमरा व्यवस्था में विस्तार करने के निर्देश दिए गए। कच्चे माल के भंडारण क्षेत्र में अतिरिक्त कैमरे और एक पीटीजेड (पैन-टिल्ट-जूम) कैमरा लगाने को कहा गया। दक्षिण मध्य रेलवे के अनंतपुर स्थित एक रसोई में निरीक्षण और वीडियो निगरानी के दौरान पाई गई कमियों पर सुधारात्मक कार्रवाई के निर्देश दिए गए। रोटी और पराठा बनाने की पूरी प्रक्रिया की भी विशेष समीक्षा करने को कहा गया।

तृतीय-पक्ष निरीक्षण एजेंसियों की जवाबदेही तय करने और लगातार खराब प्रदर्शन करने वाली एजेंसियों के विरुद्ध कार्रवाई, आवश्यकता पड़ने पर उन्हें सूची से हटाने पर जोर दिया गया। चूहे, कॉकरोच जैसी कमियों की पहचान के लिए एआई आधारित निगरानी प्रणालियों के उपयोग के साथ चेतावनी और सुधारात्मक कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए।

समीक्षा का उद्देश्य रेलवे की खान-पान सेवाओं में गुणवत्ता, स्वच्छता, जवाबदेही और यात्री संतुष्टि को लगातार बेहतर बनाना है।■



वर्तमान में, देश भर में कार्यरत रेल नीर संयंत्रों से सभी महत्त्वपूर्ण ट्रेनों और स्टेशनों पर बोतलबंद किए गए पेयजल 'रेल नीर' की मांग पूरी की जा रही है। आईआरसीटीसी को भारतीय रेल पर रेल नीर की आवश्यकता और मांग के अनुसार चिन्हित स्थानों पर रेल नीर संयंत्र स्थापित करने का कार्य सौंपा गया है। 'रेल नीर' प्लांट (पीपीपी मॉडल) स्थापित करने की अनुमानित लागत प्रतिदिन 1,00,000 बोतलों की क्षमता वाले प्लांट के लिए लगभग ₹10 करोड़ है। भूमि की लागत को छोड़कर, इसमें प्री-इंजीनियर्ड बिल्डिंग (पीईबी) शेड का निर्माण, प्लांट और मशीनरी की स्थापना शामिल है।

देश भर में कार्यरत 19 रेल नीर संयंत्रों का विवरण निम्नलिखित है :

संयंत्र	राज्य
नांगलोई	दिल्ली
दानापुर	बिहार
अंबरनाथ, नागपुर, भुसावल	महाराष्ट्र
पलुर	तमिलनाडु
मनेरी, मंडीदीप	मध्य प्रदेश
अमेठी, हापुड़	उत्तर प्रदेश
ऊना	हिमाचल प्रदेश
जागीरोड	असम
संकराइल	पश्चिम बंगाल
कोटा	राजस्थान
साणंद	गुजरात
भुवनेश्वर	ओडिशा
बिलासपुर	छत्तीसगढ
सिम्हाद्री, विजयवाड़ा	आंध्र प्रदेश

डिजिटल होती भारतीय रेल - यात्रियों की पहली पसंद

रेलवन ऐप

प्रतिदिन औसतन 10 लाख टिकट बुकिंग का बना रिकॉर्ड

आरक्षित और अनारक्षित टिकटों की डिजिटल खरीद को बढ़ावा देने के उद्देश्य से रेलवे ने दिनांक 1 जुलाई, 2025 को रेलवन RailOne ऐप लॉन्च किया है।

यह ऐप भारतीय रेल की सभी सार्वजनिक सेवाओं जैसे आरक्षित टिकट, अनारक्षित टिकट, प्लेटफॉर्म टिकट, ट्रेन पूछताछ, पीएनआर पूछताछ, रेल सहायता आदि को एक ही प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध कराता है।

ऐप सिंगल-साइन-ऑन (एसएसओ) सुविधा के माध्यम से उपयोगकर्ताओं को कई सेवाओं का लाभ उठाने में सक्षम बनाता है, जिससे रेलवे के कई एप्लिकेशन डाउनलोड करने और कई पासवर्ड याद रखने की आवश्यकता समाप्त हो जाती है।



राष्ट्रीय रेल पूछताछ प्रणाली



वर्ष 2000 में शुरू की गई राष्ट्रीय रेल पूछताछ प्रणाली (एनटीईएस) यात्रियों को लगभग वास्तविक समय में ट्रेनों की जानकारी प्रदान करती है, जिसमें आगमन/प्रस्थान की स्थिति और ट्रेन कार्यक्रम शामिल हैं। यह जानकारी पूछताछ काउंटरों, एनटीईएस वेबसाइट, मोबाइल एप्लिकेशन (एंड्रॉइड और आईओएस) और राष्ट्रव्यापी रेल पूछताछ संख्या 139 जैसे विभिन्न माध्यमों से उपलब्ध है। इसकी प्रमुख विशेषताओं में 'अपनी ट्रेन ढूंढें', 'लाइव स्टेशन', 'ट्रेन कार्यक्रम' और 'स्टेशनों के बीच ट्रेनें' शामिल हैं, जिससे यात्री आसानी से प्रामाणिक और विश्वसनीय जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। एनटीईएस मोबाइल एप्लिकेशन अक्टूबर 2014 (एंड्रॉइड) और अक्टूबर 2015 (आईओएस) में लॉन्च किया गया था, जिसने दिनांक 1 अगस्त, 2026 तक एंड्रॉइड पर 4.5 करोड़ से अधिक और आईओएस पर 16 लाख से अधिक डाउनलोड दर्ज किए हैं। एनटीईएस वर्तमान में लगभग 80,000 उपयोगकर्ताओं को संभालता है और प्रतिदिन 6 करोड़ से अधिक पूछताछों का निष्पादन करता है। यात्रियों द्वारा इसकी व्यापक रूप से सराहना की गई है।

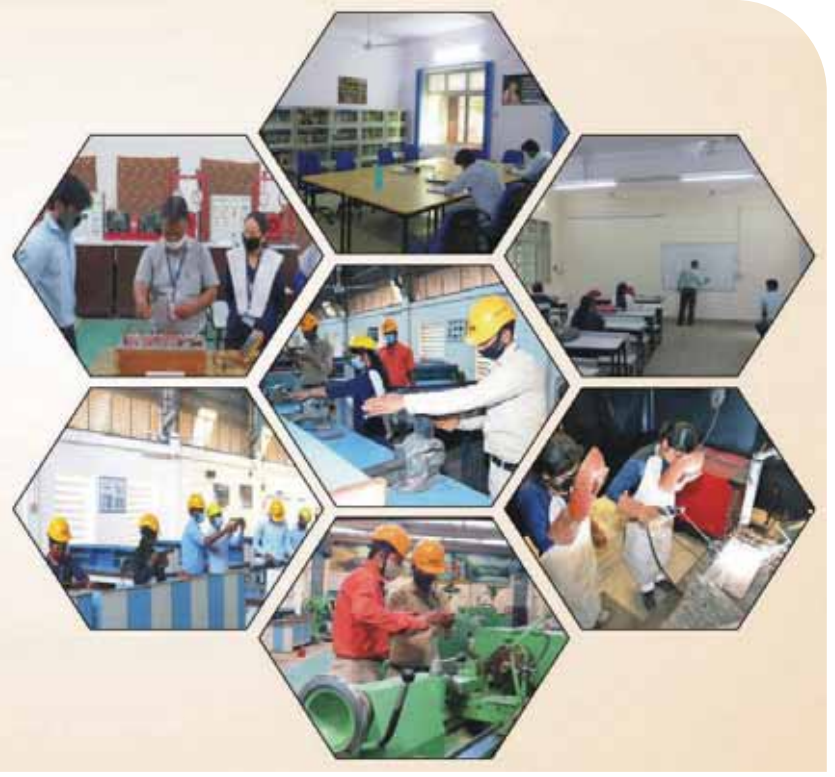
राष्ट्रीय ट्रेन पूछताछ प्रणाली (एनटीईएस) की शुरुआत से यात्रियों को वेबसाइट, मोबाइल एप्लिकेशन और रेल पूछताछ संख्या 139 सहित कई डिजिटल प्लेटफॉर्मों के माध्यम से ट्रेनों के संचालन की सटीक और लगभग वास्तविक समय की जानकारी आसानी से उपलब्ध हो जाती है।

ट्रेन रद्द होने की स्थिति में ऑनलाइन ई-टिकटिंग सिस्टम एनजीईटी (नेक्स्ट जेनरेशन ई-टिकटिंग) ट्रेन के निर्धारित प्रस्थान समय के तुरंत बाद स्वतः ही रिफंड की प्रक्रिया शुरू कर देता है और लागू रिफंड यात्री के बैंक खाते में जमा कर दिया जाता है। ट्रेन रद्द होने से संबंधित स्वचालित रिफंड की सुविधा फिलहाल केवल ऑनलाइन बुक किए गए ई-टिकटों के लिए उपलब्ध है और काउंटर टिकटों के लिए उपलब्ध नहीं है। ऐसे मामलों में काउंटर टिकटधारक यात्री को निकटतम पीआरएस काउंटर पर जाना होगा।

वर्तमान में आरक्षित टिकटों में से लगभग 89% ऑनलाइन बुक किए जाते हैं, जबकि 2013-14 में यह आंकड़ा लगभग 49% था। काउंटर के अलावा अन्य माध्यमों से बुक किए गए अनारक्षित टिकटों की संख्या बढ़कर लगभग 39 प्रतिशत हो गई है।■

सशक्त रेलकर्मी, सुरक्षित सफर

सालाना 6 लाख रेलकर्मियों को प्रशिक्षण



भारतीय रेल ने व्यवस्थित क्षमता निर्माण और एडवांस्ड ट्रेनिंग के माध्यम से रेल कर्मियों की कार्य उत्पादकता, प्रेरणा और पेशेवर योग्यताओं को बढ़ाने के लिए कई उपाय किए हैं। भारतीय रेल में क्षमता निर्माण और कौशल को बेहतर और संस्थागत प्रक्रिया है, जिसे एक अच्छी तरह से स्थापित प्रशिक्षण ढाँचे का समर्थन प्राप्त है।

भारतीय रेल ने कर्मचारियों की स्किलिंग, री-स्किलिंग और अप-स्किलिंग सुनिश्चित करने के लिए करियर के अलग-अलग चरणों में ट्रेनिंग देने वाला एक व्यापक ट्रेनिंग सिस्टम तैयार किया है। इसके लिए बड़े पैमाने पर ट्रेनिंग इंफ्रास्ट्रक्चर बनाया गया है, जिसमें सेंट्रलाइज्ड ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट्स, मल्टी-डिसिप्लिनरी जोनल ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट्स, मल्टी-डिसिप्लिनरी डिविजनल ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट्स और विशेष प्रशिक्षण केंद्र शामिल हैं। ये सेंटर सर्विस के अलग-अलग चरणों में इंडक्शन, रिफ्रेशर, प्रमोशन और टेक्निकल ट्रेनिंग प्रोग्राम चलाते हैं। साथ ही, माल ढुलाई से जुड़े कामों में लगे कर्मचारियों के लिए भी ट्रेनिंग की व्यवस्था करते हैं।

भारतीय रेल का उद्देश्य हमेशा से ही संरचित प्रशिक्षण कार्यक्रमों, मल्टी-मॉडल लॉजिस्टिक्स और उभरती प्रौद्योगिकियों के माध्यम से कार्यबल की क्षमताओं को बढ़ाते हुए एक आधुनिक, कुशल और एकीकृत रेलवे माल भाड़ा व लॉजिस्टिक्स इकोसिस्टम प्रदान करना रहा है, जिससे कुशल, सुरक्षित और सतत परिवहन सेवाएँ सुनिश्चित की जा सकें।

प्रशिक्षण मॉड्यूल कर्मचारियों की क्षमताओं को मजबूत करने और रेलकर्मियों को आधुनिक, तकनीक-गहन रेलवे परिचालन—जैसे माल परिचालन का डिजिटलीकरण, बहु-मॉडल लॉजिस्टिक्स अवधारणाएं, उपभोक्ता-केंद्रित माल ढुलाई सेवाएँ और अन्य परिचालन आवश्यकताओं के लिए आवश्यक कौशलों से लैस करने के लिए डिजाइन किए गए हैं। रेलवे संचालन और रखरखाव में नई प्रौद्योगिकियों को शामिल करने के लिए इन मॉड्यूलों को समय-समय पर अपडेट भी किया जाता है।

इसके अलावा, भारतीय रेल के कर्मचारी अपने करियर के अलग-अलग चरणों में इंडक्शन, प्रमोशन, रिफ्रेशर, स्पेशलाइज्ड और टेक्निकल ट्रेनिंग प्रोग्राम से गुजरते हैं। संबंधित कैटेगरी के कर्मचारियों के लिए ट्रेनिंग के सिलेबस में फ्रेट ऑपरेशन, लॉजिस्टिक्स और उनके काम से जुड़े अन्य ऑपरेशनल और सुरक्षा संबंधी पहलू शामिल होते हैं।

इन कार्यक्रमों के तहत हर साल लगभग छह लाख रेल कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया जाता है, जिससे लगातार क्षमता विकास और पेशेवर दक्षता में वृद्धि होती है।

भारतीय रेल अपने प्रमुख केंद्रीकृत प्रशिक्षण संस्थानों और गति शक्ति विश्वविद्यालय के माध्यम से लॉजिस्टिक्स ऑपरेटरों, टर्मिनल ऑपरेटरों और कंटेनर ट्रेन ऑपरेटरों के लिए 'रेल परिचालन', 'वाणिज्यिक प्रबंधन' और 'रेल परिचालन से परिचय' में समर्पित प्रशिक्षण और प्रमाणन कार्यक्रम प्रदान करती है। इसमें कोल इंडिया लिमिटेड, नेशनल थर्मल पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड, स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड, डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड, भारतीय खाद्य निगम और केंद्रीय भंडारण निगम सहित विभिन्न सार्वजनिक

क्षेत्र के उपक्रम और संबद्ध संगठन शामिल हैं, जो रेल-आधारित माल परिवहन और लॉजिस्टिक्स में अधिक दक्षता को बढ़ावा देते हैं।

इसके अलावा, गति शक्ति विश्वविद्यालय ने भारतीय कंटेनर निगम लिमिटेड के अधिकारियों के लिए एक विशेष मैनेजमेंट डेवलपमेंट प्रोग्राम और पोर्ट-लेड डेवलपमेंट पर क्षमता विकास कार्यशाला तथा रक्षा बलों, इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड और गुजरात इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट बोर्ड जैसे संगठनों के लिए लॉजिस्टिक्स पर विभिन्न कार्यकारी प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किए हैं। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य संरचित कार्यकारी क्षमता विकास पहलों के माध्यम से लॉजिस्टिक्स, आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन और आधुनिक परिवहन प्रणालियों में नेतृत्व क्षमताओं, प्रबंधकीय कौशलों और विषय विशेषज्ञता को बढ़ाना है।

भारतीय रेल उभरती परिचालन आवश्यकताओं, तकनीकी प्रगति और संगठनात्मक प्राथमिकताओं के अनुरूप समय-समय पर अपनी आवश्यकताओं की समीक्षा करती है। क्षेत्रीय इकाइयों, प्रशिक्षण संस्थानों और तकनीकी निदेशालयों के साथ निरंतर संवाद के माध्यम से उभरती हुई दक्षता संबंधी आवश्यकताओं की पहचान की जाती है। इन आकलनों के आधार पर, रेलवे कर्मियों को कुशल माल ढुलाई और लॉजिस्टिक्स परिचालन के लिए आवश्यक कौशलों से लैस करने हेतु प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों और दक्षता विकास कार्यक्रमों को संशोधित और सुदृढ़ किया जाता है।

भारतीय रेल में प्रशिक्षण कार्यक्रम विभिन्न श्रेणियों के रेल कर्मचारियों की कार्यात्मक और दक्षता संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिजाइन किए गए हैं। उभरती प्रौद्योगिकियों, परिचालन संबंधी जरूरतों और समकालीन कौशल आवश्यकताओं के अनुरूप इनकी समय-समय पर समीक्षा और अपडेट किया जाता है। इसके अलावा, एकरूपता, योग्यता-आधारित शिक्षण और बेहतर प्रशिक्षण परिणामों को सुनिश्चित करने के लिए पूरे भारतीय रेल में प्रशिक्षण मॉड्यूलों के मानकीकरण की दिशा में निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। साथ ही, भारतीय रेल क्षमता विकास को मजबूत करने और राष्ट्रीय कौशल विकास प्रयासों के साथ तालमेल को बढ़ावा देने के लिए कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय (एमएसडीई) के साथ विभिन्न कौशल विकास पहलों पर सक्रिय रूप से जुड़ा हुआ है।

भारतीय रेल भविष्य की स्किल जरूरतों को पूरा करने के लिए अपने ट्रेनिंग सिस्टम को लगातार मजबूत कर रहा है। इन उपायों में ट्रेनिंग मॉड्यूल में समय-समय पर बदलाव और उन्हें स्टैंडर्ड बनाना, डिजिटल लर्निंग प्लेटफॉर्म को जोड़ना, क्षमता-आधारित ट्रेनिंग, नई टेक्नोलॉजी से परिचित कराना, ट्रेनिंग इंफ्रास्ट्रक्चर को आधुनिक बनाना, फैकल्टी की क्षमता बढ़ाना और सेंट्रलाइज्ड ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट, मल्टी-डिसिप्लिनरी जोनल ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट और मल्टी-डिसिप्लिनरी डिविजनल ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट के जरिए लगातार क्षमता विकास करना शामिल है।■

सेवा का सर्वोच्च सम्मान

15 रेल जवानों को मिला राष्ट्रपति पदक

राष्ट्रपति ने दिनांक 14 अगस्त, 2026 को आरपीएफ/आरपीएसएफ के निम्नलिखित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को 'विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति पदक (पीएसएम)' तथा 'सराहनीय सेवा के लिए पदक (एमएसएम)' प्रदान किए हैं :

विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति पदक



राजेश लाल
सहायक सुरक्षा आयुक्त
रेलवे बोर्ड

सराहनीय सेवा के लिए पदक

- सत्य प्रकाश, प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त, पूर्वोत्तर रेलवे
- सी. एस. चेंगप्पा, सहायक सुरक्षा आयुक्त, दक्षिण रेलवे
- कृष्ण कुमार मिश्रा, सहायक सुरक्षा आयुक्त, पूर्वोत्तर रेलवे
- विवेक वर्मा, सहायक सुरक्षा आयुक्त, उत्तर मध्य रेलवे
- मोनी तारो, निरीक्षक, रेलवे सुरक्षा विशेष बल
- बरुण प्रसाद लहेरी, निरीक्षक, रेलवे सुरक्षा विशेष बल
- एच. के. दोड्डैया, उप निरीक्षक, दक्षिण पश्चिम रेलवे
- कैलाश प्रसाद, उप निरीक्षक, पूर्वोत्तर रेलवे
- नरेश कुमार, उप निरीक्षक, उत्तर रेलवे
- गुरु प्रसाद नागरीकांति, उप निरीक्षक, दक्षिण मध्य रेलवे
- राम प्रसाद मीणा, सहायक उप निरीक्षक (एमटी), रेलवे सुरक्षा विशेष बल
- ई. अरुण मोली, सहायक उप निरीक्षक, दक्षिण रेलवे
- विकास कुमार, सहायक उप निरीक्षक, उत्तर मध्य रेलवे
- नीरज अहलावत, सहायक उप निरीक्षक, उत्तर रेलवे
- शंकर शिवस्वामी एडले, प्रधान आरक्षक, मध्य रेल

आग से सुरक्षा, यात्रियों की रक्षा

भारतीय रेल ने की बहुस्तरीय अग्नि सुरक्षा व्यवस्था

आपात स्थिति में भारतीय रेल की प्राथमिकता लोगों की जान बचाना, घायलों को तत्काल चिकित्सा सहायता देना और फंसे यात्रियों को राहत पहुँचाना है : रेल मंत्री

- **प्रत्येक कोच में कम से कम दो अग्निशामक यंत्र, पैंट्री कारों में वॉटर मिस्ट अग्निशामक यंत्र और यात्री आपातकालीन संचार सुविधाएँ कोच की सुरक्षा को मजबूत करती हैं**
- **इंटीग्रेटेड रेल मदद हेल्पलाइन 139 यात्रियों के लिए आपातकालीन सहायता तक त्वरित पहुँच सक्षम बनाती है**
- **177 दुर्घटना राहत ट्रेनें, 100 ब्रेकडाउन क्रेन और 170 चिकित्सा राहत इकाइयां रेलवे की आपातकालीन प्रतिक्रिया क्षमता को मजबूत करती हैं**

भारतीय रेल स्टेशनों और ट्रेनों में आकस्मिक कारणों से लगने वाली आग सहित सभी संभावित खतरों से निपटने के लिए, अपने सभी क्षेत्रीय रेलवे में रोकथाम, तैयारी, त्वरित कार्रवाई और राहत कार्यों में लगातार जुटी हुई है।

रेलवे स्टेशनों पर किए गए महत्त्वपूर्ण अग्नि सुरक्षा उपाय

- आग लगने की स्थिति में उपयोग के लिए रेलवे स्टेशनों पर पोर्टेबल अग्निशामक यंत्र (फायर एक्सटिंग्विशर) उपलब्ध कराए गए हैं।
- आग लगने की स्थिति में उपयोग के लिए रेलवे स्टेशनों पर रेत और पानी से भरी आग बुझाने वाली बाल्टियाँ भी उपलब्ध कराई गई हैं।
- भारतीय रेल यह सुनिश्चित करती है कि उसके फ्रंटलाइन कर्मचारी अग्निशामन (फायर फाइटिंग), प्राथमिक चिकित्सा (फर्स्ट एड) और आपदा प्रबंधन का प्रशिक्षण लेकर आपात स्थितियों से निपटने के लिए हमेशा तैयार रहें। इन विषयों को स्टेशन मैनेजर, ट्रेन मैनेजर (गार्ड), कमर्शियल-कम-टिकट क्लर्क, लोको पायलट, असिस्टेंट लोको पायलट आदि जैसे फ्रंटलाइन कर्मचारियों के प्रशिक्षण मॉड्यूल में शामिल किया गया है।



- भारतीय रेल आपदा प्रबंधन संस्थान (आईआरआईडीएम), जो एक विशेष प्रशिक्षण संस्थान है, महत्त्वपूर्ण शुरुआती समय (गोल्डन ऑवर) में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले पहले प्रतिक्रियाकर्ताओं यानी ट्रेन क्रू और ऑन-बोर्ड कर्मचारियों (जैसे ट्रेन टिकट परीक्षक, एसी कोच स्टाफ और एस्कॉर्टिंग स्टाफ) को प्रशिक्षित करने के लिए अग्निशामन, प्राथमिक चिकित्सा, ट्रॉमा मैनेजमेंट आदि में नियमित पाठ्यक्रम संचालित करता है।
- रेलवे स्टेशनों और नियंत्रण कक्षों के अधिकारियों के लिए निकटतम दमकल विभाग, पुलिस, चिकित्सा सुविधाओं, एम्बुलेंस, जिला प्रशासन, राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ), राज्य आपदा मोचन बल (एसडीआरएफ) आदि से संपर्क करने हेतु उचित संचार प्रोटोकॉल निर्धारित किए गए हैं। उनके संपर्क नंबर सभी संबंधित रेलवे अधिकारियों को उपलब्ध करा दिए गए हैं।
- बड़े रेलवे स्टेशनों पर रिले रूम और इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग रूम में ऑटोमैटिक फायर अलार्म लगाए जा रहे हैं।
- रेलवे स्टेशनों पर स्टेशन मास्टर के लिए कंट्रोल फोन की व्यवस्था होती है, ताकि ओवरहेड इक्विपमेंट (ओएचई) में आग लगने की स्थिति में ओएचई की बिजली आपूर्ति को तुरंत काटा जा सके।
- रेलवे स्टेशनों पर लगे पब्लिक एड्रेस सिस्टम (सार्वजनिक घोषणा प्रणाली) का उपयोग आग जैसी आपात स्थिति में लोगों को बाहर निकालने के लिए मार्गदर्शन करने हेतु किया जा सकता है।

- यात्रियों और आम जनता को ज्वलनशील वस्तुएं न ले जाने के महत्त्व के प्रति जागरूक करने के लिए लगातार घोषणाएं की जाती हैं।
- बड़े रेलवे स्टेशनों पर यात्रियों के सामान की स्कैनिंग की जाती है।
- विशेष अवधियों के दौरान यात्रियों द्वारा ज्वलनशील सामग्री ले जाने से रोकने के लिए विशेष अभियान चलाए जाते हैं।
- शॉर्ट-सर्किट के कारण आग लगने की किसी भी संभावना को रोकने के लिए स्टेशनों पर विद्युत प्रणालियों का नियमित रखरखाव किया जाता है। इलेक्ट्रिकल पैनलों में मिनिएचर सर्किट ब्रेकर (एमसीबी) और मोल्ड्ड केस सर्किट ब्रेकर (एमसीसीबी) का उपयोग किया जाता है। स्टेशनों पर आपातकालीन लाइटें भी उपलब्ध कराई जाती हैं।
- आपात स्थिति के दौरान जनता को बाहर निकलने में मदद करने के लिए स्टेशनों पर निकास द्वारों को अच्छी तरह से चिह्नित किया गया है।
- आग लगने जैसी आपातकालीन स्थितियों में इस्तेमाल के लिए, कोच में पानी भरने की सुविधा वाले बड़े रेलवे स्टेशनों पर जल भंडारण करने की पर्याप्त व्यवस्था उपलब्ध है।
- रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म पर आग जलाकर खाना पकाने की अनुमति नहीं है।
- रेलवे स्टेशनों और कार्यालय भवनों के अंदर और आसपास के सभी इलेक्ट्रिकल इंस्टॉलेशन का नियमित ऑडिट/सुरक्षा अभियान चलाया जा रहा है।

भारतीय रेल के ट्रेनों की अग्नि सुरक्षा में कोच के डिजाइन, निर्माण, रखरखाव और संचालन के सभी चरण शामिल हैं।

- भारतीय रेल के सभी डिब्बों (कोचों) में कम से कम दो अग्निशामक यंत्रों (फायर एक्सटिंग्विशर) की व्यवस्था।
- जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, पावर कारों और पैंट्री कारों के आग लगने की आशंका वाले क्षेत्रों में फायर डिटेक्शन एंड सप्रेशन सिस्टम (आग का पता लगाने और बुझाने की प्रणाली) की व्यवस्था की गई है।
- कोचों में आग और धुएं का पता लगाने वाली प्रणाली (फायर एंड स्मोक डिटेक्शन सिस्टम) की व्यवस्था की गई है।
- चरणबद्ध तरीके से पैंट्री कारों और पावर कारों में वाटर मिस्ट प्रकार के अग्निशामक यंत्र उपलब्ध कराए जा रहे हैं।
- आग लगने की स्थिति में बाहर निकलने के लिए कोचों में आपातकालीन खिड़कियों (इमरजेंसी विंडो) की व्यवस्था।
- बेहतर अग्नि सुरक्षा के लिए कोचों की सीटों/बर्थ, पैनलों, फर्श, इंसुलेशन, शौचालयों आदि में ग्लोबल फायर-रिटार्डेंट मानदंडों के अनुसार अग्नि-रोधी सामग्री का उपयोग।
- कोचों में फायर-रिटार्डेंट ई-बीम केबल्स का उपयोग।
- इलेक्ट्रिकल फॉल्ट्स या सर्ज से होने वाले नुकसान को रोकने के लिए विद्युत सर्किट में फ्यूज, मिनिएचर सर्किट ब्रेकर (एमसीबी) और मोटर प्रोटेक्शन सर्किट ब्रेकर (एमपीसीबी) के रूप में विभिन्न स्तरों की सुरक्षा का उपयोग।
- इलेक्ट्रिकल कैबिनेट में एरोसोल-आधारित अग्नि शमन प्रणाली (एयरोसोल बेस्ड फायर सप्रेशन सिस्टम) की व्यवस्था।
- अमृत भारत और वंदे भारत स्लीपर ट्रेनों में आधुनिक सामग्री की फिटिंग के साथ, वैश्विक मानकों के अनुरूप सामग्री का नियमित रूप से अप-ग्रेडेशन किया जा रहा है।
- आग को रोकने के लिए 'क्या करें' और 'क्या न करें' के बारे में यात्रियों को सूचित करने और सतर्क करने के लिए सभी कोचों में व्यापक जानकारी हेतु 'फायर नोटिस' का प्रदर्शन। इनमें ज्वलनशील सामग्री, विस्फोटक न ले जाने, कोचों के अंदर धूम्रपान पर प्रतिबंध और दंड आदि से संबंधित संदेश शामिल हैं, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है।
- कोच में आग जलाकर खाना पकाने पर रोक।
- वंदे भारत के प्रत्येक कोच में 4 इमरजेंसी टॉक बैक यूनिट का प्रावधान है। यह आपात स्थिति में यात्रियों को ट्रेन मैनेजर (ट्रेन प्रबंधक) / लोको-पायलट से संवाद करने की सुविधा प्रदान करता है। वंदे भारत ट्रेन में पैसेंजर इमरजेंसी अलार्म बटन भी उपलब्ध कराए गए हैं। आपातकालीन उपयोग के लिए प्रत्येक कोच में ऐसे 4 पुश बटन लगाए गए हैं।



यद्यपि उपर्युक्त उपायों से भारतीय रेल को आग की घटनाओं को रोकने में मदद मिली है, फिर भी भारतीय रेल विभिन्न कारकों के कारण संभावित रूप से होने वाली आग जैसी आपात स्थितियों से त्वरित एवं प्रभावी ढंग से प्रतिदिन देने और निपटने के लिए हमेशा तैयार है।

ऐसी किसी भी आपात स्थिति में, पहले प्रतिक्रिया देने वाले (फर्स्ट रिस्पॉन्डर) रेलवे कर्मचारी होते हैं, जिन्हें ऐसी आपात स्थितियों से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। इस तरह की आपात स्थिति की सूचना मिलते ही, भारतीय रेल अपनी व्यवस्था, उपकरणों, डॉक्टरों और कर्मचारियों का उपयोग करते हुए तुरंत कार्रवाई करती है और तुरंत बचाव एवं राहत कार्य शुरू करने के लिए राज्य सरकार तथा जिला प्रशासन के साथ भी तालमेल बिठाती है।

आरंभिक ध्यान जान बचाने, घायलों की देखभाल करने और फंसे हुए यात्रियों को सहायता प्रदान करने पर होता है।

भारतीय रेल के पास पूरे रेल नेटवर्क को कवर करने के लिए चिन्हित स्थानों पर 177 एक्सीडेंट रिलीफ ट्रेनें (एआरटी), 100 उच्च क्षमता वाली 140टी ब्रेकडाउन डीजल-हाइड्रोलिक क्रेन और 170 एक्सीडेंट रिलीफ मेडिकल इक्विपमेंट (एआरएमई) स्केल-I मौजूद हैं। इसके अलावा, तुरंत चिकित्सा सहायता प्रदान करने के लिए चिन्हित स्थानों पर एआरएमई स्केल-II और दुर्घटनाओं के लिए पोर्टेबल मेडिकल किट भी उपलब्ध कराई गई हैं। एआरएमई स्केल-I पहियों पर बने अस्पताल की तरह हैं, जिन्हें चिकित्सा उपकरणों, सामग्री और कर्मियों से पूरी तरह तैयार करके तुरंत दुर्घटना स्थल के लिए रवाना किया जाता है।

ऐसी दुर्घटनाओं से निपटने के लिए सड़क वाहन, अर्थमूवर, एम्बुलेंस आदि जैसे अतिरिक्त उपकरण भी मंगाए जाते हैं। ऐसी आपात स्थितियों में प्रत्येक अधिकारी और कर्मचारी की भूमिका तय होती है और उन्हें अपनी जिम्मेदारियाँ निभाने के लिए आवश्यक ट्रेनिंग और अधिकार दिए जाते हैं। साथ ही, आग लगने जैसी किसी भी बड़ी असामान्य घटना की सूचना मिलने पर, भारतीय रेल स्थिति से तुरंत और प्रभावी ढंग से निपटने में सहायता के लिए आवश्यकतानुसार जिला अधिकारियों, दमकल विभाग (फायर ब्रिगेड), चिकित्सा सुविधाओं, पुलिस बलों आदि सहित स्थानीय नागरिक प्रशासन को तुरंत सूचित करती है। रेलवे और इन अन्य एजेंसियों दोनों द्वारा समन्वित प्रतिक्रिया के लिए पूरे भारतीय रेल में प्रणालियाँ और प्रोटोकॉल स्थापित किए गए हैं।

आग जैसी आपात स्थितियों से निपटने के लिए प्रक्रियाएं और दिशा-निर्देश क्षेत्रीय रेलवे और मंडलों की आपदा प्रबंधन योजनाओं, सामान्य एवं सहायक नियमों, दुर्घटना नियमावली और संचालन नियमावली में निर्धारित किए गए हैं। रेलवे स्टेशन तत्काल आपातकालीन प्रतिक्रिया के लिए अपने टेलीफोन नंबरों के साथ-साथ नजदीकी अग्निशामक केंद्रों की सूची और आसपास उपलब्ध सभी रेलवे तथा गैर-रेलवे चिकित्सा संस्थानों, निजी चिकित्सकों और फर्स्ट-एइडर्स की सूची को बनाए रखते हैं और प्रदर्शित करते हैं।

मंडलों द्वारा भारतीय रेल के भीतर की सभी बचाव एजेंसियों के साथ-साथ दमकल विभाग, पुलिस, जिला अधिकारियों, चिकित्सा प्रणालियों एवं सुविधाओं और आपदा प्रतिक्रिया बलों को शामिल करते हुए फुल-स्केल मॉक ड्रिल आयोजित की जाती हैं।■

ट्रेनों के सुरक्षित संचालन हेतु 19700 कि.मी. रेलवे ट्रैक पर लगाई गई सुरक्षा बाड़

भारतीय रेल द्वारा पत्थरबाजी करने वालों के खिलाफ कानून के संबंधित प्रावधानों के तहत कानूनी कार्रवाई की जाती है। रेलवे द्वारा यात्रियों के जीवन की सुरक्षा और रेल संपत्ति को क्षति से बचाने के लिए निम्नलिखित निवारक उपाय किए जाते हैं :

- प्रभावित क्षेत्रों/ब्लैक स्पॉट में शराबियों, उपद्रवियों आदि जैसे असामाजिक तत्वों के खिलाफ नियमित रूप से अभियान चलाए जाते हैं और पकड़े गए व्यक्तियों पर कानूनी प्रावधानों के तहत मुकदमा चलाया जाता है।
- ट्रेनों के साथ चलने वाले दल को संवेदनशील क्षेत्रों/स्थानों पर अधिक सतर्क रहने के लिए जागरूक किया गया है, जहाँ ट्रेनों में तोड़फोड़ की घटनाएं अक्सर सामने आती हैं।
- रेलवे ट्रैक के निकट स्थित आबादी वाले क्षेत्रों में पत्थरबाजी के खतरे और उसके परिणामों के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए ऑपरेशन साथी सहित विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं।
- चलती ट्रेनों पर पत्थरबाजी की घटनाओं को नियंत्रित करने के लिए उठाए जाने वाले कदमों के संबंध में विस्तृत दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं। इन घटनाओं का विश्लेषण करने के बाद इन्हें रोकने के लिए ठोस कार्रवाई की जाती है।
- आरपीएफ द्वारा जीआरपी/स्थानीय पुलिस के साथ नियमित समन्वय बनाए रखा जाता है और ट्रेनों पर पत्थर फेंकने की समस्या को नियंत्रित करने के लिए महत्त्वपूर्ण जानकारी साझा की जाती है।
- रेलवे की सुरक्षा व्यवस्था की नियमित निगरानी और समीक्षा के लिए सभी राज्य केंद्र शासित प्रदेशों के लिए संबंधित राज्य/केंद्र शासित प्रदेशों के पुलिस महानिदेशक और आयुक्तों की अध्यक्षता में राज्य स्तरीय रेलवे सुरक्षा समिति (एसएलएससीआर) का गठन किया गया है।

भारतीय रेल में रेल संचालन की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती है। पैदल यात्रियों के लिए बने सबवे में भी सुरक्षा बाड़ लगाई जा रही है ताकि मवेशियों, पैदल यात्रियों और छोटे वाहनों को रेलवे ट्रैक पार करने में सुविधा हो।

भारतीय रेल में अब तक रेलवे ट्रैक के किनारे लगभग 19,700 कि.मी. की बाड़ लगाई जा चुकी है, जिसमें बिहार, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश और उत्तर प्रदेश में स्थित खंड शामिल हैं।■

रफ्तार और सुविधा का नया तालमेल

भारतीय रेल ने विभिन्न ट्रेन सेवाओं को दी मंजूरी



चित्रकूटधाम कर्वी-कानपुर सेंट्रल और प्रतापगढ़-कानपुर सेंट्रल ट्रेन सेवाओं का विलय

भारतीय रेल ने 14109/14110 चित्रकूटधाम कर्वी-कानपुर सेंट्रल एक्सप्रेस और 14123/14124 मां बेल्हा देवी धाम प्रतापगढ़-कानपुर सेंट्रल एक्सप्रेस के विलय को मंजूरी दी है। विलय के बाद यह सेवा 14123/14124 मां बेल्हा देवी धाम प्रतापगढ़-चित्रकूटधाम कर्वी एक्सप्रेस के रूप में संचालित होगी।

इस विलय से मां बेल्हा देवी धाम प्रतापगढ़ और चित्रकूटधाम कर्वी के बीच सीधी रेल कनेक्टिविटी बेहतर होगी। साथ ही, कानपुर सेंट्रल, लखनऊ क्षेत्र और चित्रकूट सहित अन्य महत्त्वपूर्ण गंतव्यों के बीच संपर्क भी मजबूत होगा। इस विलय से होने वाले परिचालन लाभों के तहत संयुक्त ट्रेन सेवा की यात्री क्षमता बढ़ाई जाएगी। वर्तमान में 12 कोच वाली ट्रेन को बढ़ाकर 24 कोच किया जाएगा। इससे उपलब्ध सीटों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि होगी और कानपुर-प्रतापगढ़ रेलखंड पर भीड़भाड़ तथा यात्रियों की बढ़ती मांग को पूरा करने में मदद मिलेगी। बढ़ी हुई क्षमता से कानपुर, बांदा, चित्रकूट, प्रतापगढ़ तथा मार्ग के अन्य स्टेशनों के बीच यात्रा करने वाले यात्रियों को अधिक सुविधा मिलेगी।

चित्रकूट और प्रतापगढ़/लखनऊ क्षेत्र के बीच बेहतर सीधी कनेक्टिविटी

विलय के बाद यह सेवा चित्रकूट और लखनऊ-प्रतापगढ़ क्षेत्र के बीच सीधी रेल कनेक्टिविटी को बेहतर बनाएगी। यात्रियों को कानपुर सेंट्रल पर ट्रेन बदलने की आवश्यकता नहीं होगी, जिससे यात्रा अधिक सुविधाजनक होगी।

प्रमुख स्टेशनों के बीच बेहतर संपर्क

विलय की गई सेवा मार्ग में आने वाले महत्त्वपूर्ण स्टेशनों पर अपनी सेवाएँ जारी रखेगी। इनमें मां बेल्हा देवी धाम प्रतापगढ़, चिलबिला, मां चंद्रिका देवी धाम अंतू, अमेठी, गौरीगंज, काशिमपुर, जायस, फुरसतगंज, रायबरेली, हरचंदपुर, बछरावां, निगोहां, लखनऊ, मानक नगर, उन्नाव, कानपुर सेंट्रल, भीमसेन, कठारा रोड, पनारा, घाटमपुर, हमीरपुर रोड, यमुना साउथ बैंक, भरुआ सुमेरपुर, रागौल, बांदा, अतर्रा और चित्रकूटधाम कर्वी शामिल हैं।■

छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस और सावंतवाड़ी रोड के बीच नई दैनिक एक्सप्रेस सेवा को मंजूरी

महाराष्ट्र और कोंकण क्षेत्र में यात्री संपर्क को बढ़ावा देने के लिए भारतीय रेल ने छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस (मुंबई) और सावंतवाड़ी रोड के बीच एक नई दैनिक एक्सप्रेस ट्रेन सेवा शुरू करने की मंजूरी दी है। यह नई सेवा 510 कि.मी. के मार्ग पर सीधी, सुविधाजनक और विश्वसनीय रेल कनेक्टिविटी प्रदान करेगी, जिससे पर्यटन, शिक्षा, रोजगार, व्यापार और सामाजिक उद्देश्यों के लिए यात्रा करने वाले हजारों यात्रियों को लाभ होगा। प्रस्तावित ट्रेन प्रतिदिन ट्रेन संख्या 15087 छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस-सावंतवाड़ी रोड एक्सप्रेस और ट्रेन संख्या 15088 सावंतवाड़ी रोड-छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस एक्सप्रेस के रूप में संचालित होगी।

नई दैनिक एक्सप्रेस सेवा निम्नलिखित स्थानों पर व्यावसायिक ठहराव प्रदान करेगी : दादर, ठाणे, पनवेल, पेण, रोहा, मनगांव, वीर, खेड़, चिपलून, सवार्दा, अरावली रोड, संगमेश्वर रोड, रत्नागिरि, अदावली, वैलिवाडे, राजपुर रोड, वैभववाड़ी रोड, नंदगांव रोड, कांकवाली, सिंधुदुर्ग, कुदाल, सावंतवाड़ी रोड

पर्यटन, अर्थव्यवस्था और यात्रियों की सुविधा को बढ़ावा मिलेगा।

इस नई सेवा के शुरू होने से मुंबई और दक्षिणी कोंकण के बीच रेल संपर्क मजबूत होगा, जिससे इस क्षेत्र के समुद्र तटों, किलों, मंदिरों और पर्यावरण-पर्यटन स्थलों पर आने वाले पर्यटकों के लिए यात्रा आसान हो जाएगी।■

भारतीय रेल ने मध्य प्रदेश को दी सौगात इटारसी-मदन महल के बीच दैनिक पैसेंजर सेवा शुरू करने की स्वीकृति

भारतीय रेल ने दैनिक ट्रेन संख्या 51673/51674 इटारसी-मदन महल पैसेंजर की शुरुआत को स्वीकृति दे दी है। यह नई यात्री सेवा इटारसी और जबलपुर (मदन महल) के बीच रेल संपर्क को मजबूत करेगी और प्रमुख मध्यवर्ती स्टेशनों पर यात्रियों के लिए यात्रा के बेहतर विकल्प भी उपलब्ध कराएगी।

यह दैनिक पैसेंजर सेवा लगभग 5 घंटे 5 मिनट में 242 कि.मी. की दूरी तय करेगी। ट्रेन बागरा तवा, सोहागपुर, पिपरिया, बनखेड़ी, सालीचौका रोड, गाडरवारा, करेली, नरसिंहपुर और श्रीधाम में वाणिज्यिक ठहराव करेगी, जिससे इन स्टेशनों से यात्रा करने वाले यात्रियों को बेहतर रेल कनेक्टिविटी मिलेगी।■

लुधियाना-जाखल यात्री ट्रेन सेवा को जींद तक की मंजूरी

भारतीय रेल ने ट्रेन संख्या 54053/54054 लुधियाना-जाखल दैनिक यात्री सेवा को उत्तर रेलवे के अंतर्गत जींद स्टेशन तक विस्तारित करने की मंजूरी दे दी है। इस निर्णय से लुधियाना और जींद के बीच सीधी रेल कनेक्टिविटी उपलब्ध होगी, जिससे दैनिक यात्रियों, छात्रों, कार्यालय जाने वालों, व्यापारियों और पंजाब-हरियाणा के



बीच यात्रा करने वाले यात्रियों को लाभ मिलेगा। स्वीकृत विस्तार के साथ, ट्रेन संख्या 54054 अब लुधियाना से जींद तक चलेगी, जबकि ट्रेन संख्या 54053 जींद से लुधियाना तक चलेगी, जो पहले चलने वाले लुधियाना-जाखल मार्ग का स्थान लेगी।

ट्रेन की यात्रा दूरी 128 कि.मी. से बढ़कर 200 कि.मी. हो जाएगी जिससे दो महत्त्वपूर्ण शहरों के बीच यात्रियों की निर्बाध कनेक्टिविटी सुनिश्चित होगी। सेवा के विस्तारित हिस्से में जाखल और जींद के बीच सभी स्टेशनों पर वाणिज्यिक ठहराव शामिल होंगे, जिससे मार्ग में स्थित कस्बों और गांवों में रहने वाले यात्रियों के लिए बेहतर पहुँच सुनिश्चित होगी। इस विस्तार से मध्यवर्ती स्टेशनों तक बेहतर रेल संपर्क उपलब्ध कराकर क्षेत्रीय गतिशीलता को मजबूत करने की उम्मीद है, साथ ही रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और वाणिज्यिक केंद्रों तक पहुँच में सुधार होगा।■

रेल, पर्यटन व साहित्य को एक साथ संजोए

रेल मंत्रालय द्वारा विगत 69 वर्षों
से भी अधिक समय से प्रकाशित मासिक पत्रिकाओं

अब ई-पत्रिका भी उपलब्ध

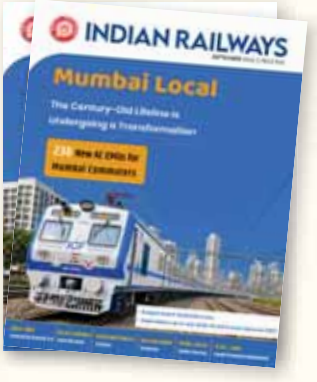
की सदस्यता अब ऑनलाइन भी उपलब्ध



भारतीय रेल
(हिन्दी)

क्यू आर कोड स्कैन करें

विज़िट करें



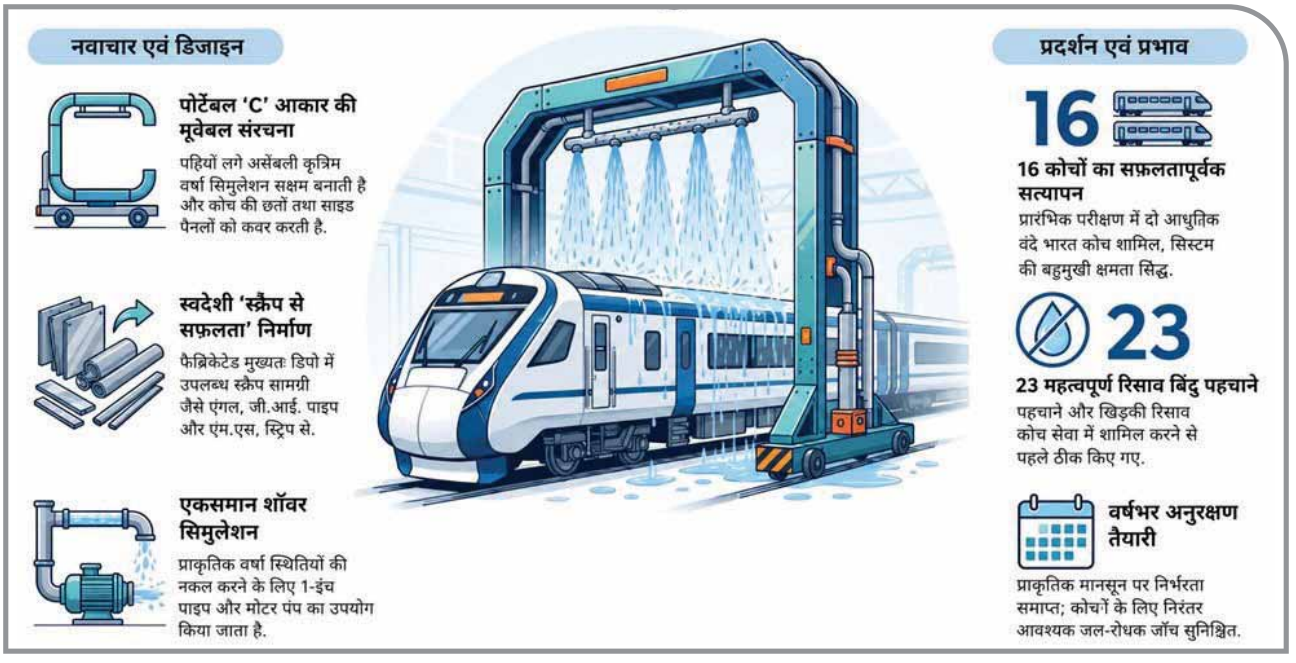
Indian Railways
(English)

वरें एवं शर्तें लागू

www.irctctourism.com/IRBRmag/#/home/hn

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे ने विकसित किया अभिनव

रेन वाटर इन्ग्रेस टेस्ट बेंच

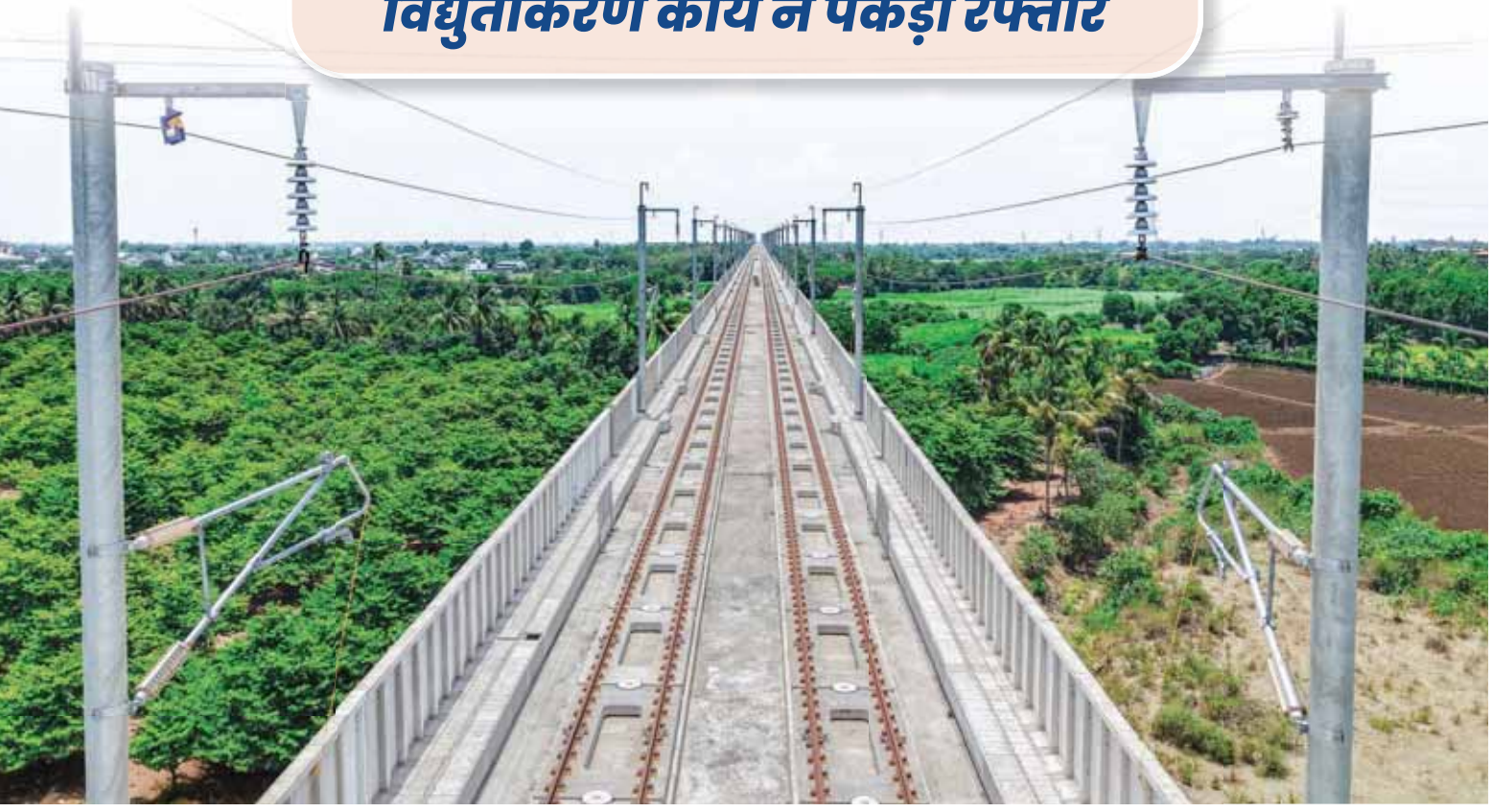


दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के बिलासपुर कोचिंग डिपो ने नवाचार, संरक्षा एवं यात्री सुविधा की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करते हुए रेल कोचों में वर्षा जल के रिसाव (रैन वाटर इंग्रेस) की जाँच के लिए स्वदेशी 'रैन वाटर इन्ग्रेस टेस्ट बेंच' विकसित किया है। इस अभिनव प्रणाली के माध्यम से कृत्रिम वर्षा (आर्टिफिसियल रैन सिमुलेशन) का वातावरण तैयार कर कोचों की छत, खिड़कियों, साइड पैनलों तथा अन्य संवेदनशील जोड़ों से होने वाले संभावित जल रिसाव की प्रभावी जाँच एवं समय रहते उसका निराकरण किया जा सकेगा। अब तक वर्षा जल के रिसाव की पहचान मुख्यतः प्राकृतिक बारिश पर निर्भर रहती थी, जिसके कारण वर्ष भर इसकी जाँच संभव नहीं हो पाती थी। इस चुनौती को ध्यान में रखते हुए बिलासपुर कोचिंग डिपो के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उपलब्ध संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग करते हुए अधिकांशतः स्क्रैप सामग्री से इस टेस्ट बेंच का डिजाइन एवं निर्माण किया। केवल कुछ आवश्यक पुर्जों की ही बाजार से खरीद की गई, जिससे यह प्रणाली अत्यंत किफायती एवं संसाधन-सक्षम सिद्ध हुई है। यह अभिनव टेस्ट बेंच वर्षभर कृत्रिम वर्षा परीक्षण की सुविधा प्रदान करता है, जिससे कोचों में छिपे हुए जल रिसाव की समय रहते पहचान कर उसे सेवा में शामिल करने से पहले ही दूर किया जा सकता है। इससे मानसून के दौरान यात्रियों को जल रिसाव जैसी असुविधाओं से राहत मिलेगी, कोचों की विश्वसनीयता एवं गुणवत्ता में वृद्धि होगी तथा बार-बार होने वाले रखरखाव की आवश्यकता भी कम होगी। इसकी पोर्टेबल डिजाइन के कारण इसका उपयोग पारंपरिक कोचों के साथ-साथ आधुनिक वंदे भारत जैसी अत्याधुनिक ट्रेनों के कोचों में भी किया जा सकता है। यह स्वदेशी नवाचार दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के कर्मचारियों की तकनीकी दक्षता, रचनात्मक सोच एवं संसाधनों के प्रभावी उपयोग का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह पहल न केवल कोच अनुरक्षण की गुणवत्ता को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाएगी, बल्कि यात्रियों को अधिक सुरक्षित, आरामदायक एवं बेहतर यात्रा अनुभव प्रदान करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। विशेष रूप से मानसून के दौरान वर्षा जल रिसाव से संबंधित शिकायतों में उल्लेखनीय कमी आने की उम्मीद है।■



मुंबई–अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना

विद्युतीकरण कार्य ने पकड़ी रफ्तार



508 कि.मी. लंबे मुंबई–अहमदाबाद बुलेट ट्रेन कॉरिडोर पर सिविल निर्माण एवं ट्रैक बिछाने के कार्यों की तीव्र प्रगति के साथ-साथ विद्युतीकरण कार्य भी तेजी से आगे बढ़ रहा है।

भारत में अपनी तरह का पहला हाई-स्पीड रेलवे विद्युतीकरण

MAHSR कॉरिडोर को एक उन्नत 2×25 kV ओवरहेड ट्रैक्शन सिस्टम से लैस किया जा रहा है, जो दुनिया भर में हाई-स्पीड रेल के लिए इस्तेमाल होने वाली सबसे आधुनिक रेलवे विद्युतीकरण तकनीकों में से एक है।

यह तकनीक भारत में पहली बार शुरू की जा रही है और इसे खासतौर पर उन ट्रेनों के लिए स्थिर और निरंतर विद्युत आपूर्ति देने के लिए डिजाइन किया गया है, जो 320 कि.मी./घंटा की गति से चलती हैं।

राष्ट्रीय विद्युत ग्रिड से बिजली की आपूर्ति विशेष रूप से डिजाइन किए गए ग्रिड सबस्टेशनों तक की जाएगी, जहाँ से इसे कॉरिडोर के साथ रणनीतिक रूप से स्थापित 14 ट्रैक्शन सबस्टेशनों तक पहुँचाया जाएगा। पांच (5) ट्रैक्शन सबस्टेशन महाराष्ट्र (मुंबई, ठाणे, विरार, बोइसर और ठाणे डिपो) में स्थित हैं, जबकि शेष नौ (9) गुजरात (वापी, बिलिमोरा, सूरत, भरूच, वडोदरा, आणंद, महेमदाबाद, अहमदाबाद और साबरमती डिपो) में स्थित हैं।

ये सब-स्टेशन रूट के अलग-अलग हिस्सों को बिजली सप्लाई करेंगे। इससे यह पक्का होगा कि जब बुलेट ट्रेन एक हिस्से से दूसरे हिस्से में जाएगी, तो बिजली सप्लाई में बदलाव बिना किसी रुकावट के और यात्रियों को पता चले बिना ही हो जाएगा।

इस कॉरिडोर में 31 स्विचिंग पोस्ट भी होंगे, ताकि बिजली की सप्लाई बिना रुकावट के बनी रहे और जरूरत पड़ने पर फॉल्ट को तुरंत अलग किया जा सके।

बुलेट ट्रेनों को बिजली देने के अलावा, स्टेशनों, सिग्नलिंग सिस्टम, मेंटेनेंस सुविधाओं और दूसरे ऑपरेशनल इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए बिजली सप्लाई करने के लिए 16 डिस्ट्रीब्यूशन सबस्टेशन बनाए जा रहे हैं।

ओवरहेड इलेक्ट्रिकल तारों का सटीक रूप से बनाया गया नेटवर्क

ये ट्रेनें ओवरहेड बिजली के तारों के एक सटीक नेटवर्क पर चलेंगी। यह नेटवर्क लगभग 22,000 स्टील के खंभों और 25,700 से ज्यादा कैंटिलीवर असेंबली के सहारे टिका होगा और 1,125 ट्रैक कि.मी. (डिपो सहित) में फैला होगा।

10.5 से 14.5 मीटर ऊँचे—यानी लगभग तीन से चार मंजिला इमारत जितनी ऊँचाई वाले—ये मास्ट एक एडवांस्ड कंपाउंड

कैटेनरी सिस्टम को सहारा देते हैं; यह एक ऐसी टेक्नोलॉजी है, जिसे भारत में पहली बार इस्तेमाल किया जा रहा है।

320 कि.मी./घंटा तक की गति पाने के लिए, इस सिस्टम में हर तार को बहुत सटीक रूप से कैलकुलेट किए गए मैकेनिकल टेंशन के साथ लगाया गया है। इससे ट्रेन का पैंटोग्राफ बिना किसी स्पार्क, रुकावट या पावर में उतार-चढ़ाव के आसानी से और लगातार बिजली ले पाता है।

'मेक इन इंडिया' को जबरदस्त बढ़ावा

इस परियोजना की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक महत्त्वपूर्ण विद्युत बुनियादी ढाँचे का व्यापक स्वदेशीकरण है।

हाई-स्पीड विद्युतीकरण प्रणाली के कई प्रमुख घटक अब भारत में निर्मित किए जा रहे हैं। इनमें सभी प्रमुख ट्रांसफार्मर, ओएचई मास्ट पर लगे क्रॉस आर्म्स, साथ ही ग्राउंड वायर, प्रोटेक्शन वायर और फीडर वायर शामिल हैं, जो ओवरहेड सिस्टम के शीर्ष विद्युत नेटवर्क का निर्माण करते हैं।

इसके अलावा, ट्रैक्शन पावर सप्लाई सिस्टम, डिस्ट्रीब्यूशन पावर सिस्टम के अन्य उपकरणों और इलेक्ट्रो-मैकेनिकल (E&M) कार्यों से जुड़े कई कंपोनेंट्स का भी देश में ही उत्पादन किया जा रहा है।

यह भारतीय उद्योग को एडवांस्ड हाई-स्पीड रेलवे टेक्नोलॉजी के बड़े पैमाने पर ट्रांसफर को दर्शाता है। देश के भीतर इन सटीक इंजीनियरिंग वाले पुर्जों का निर्माण भारत की औद्योगिक क्षमताओं को मजबूत कर रहा है, खास तरह की नौकरियां पैदा कर रहा है, आयात पर निर्भरता कम कर रहा है और भविष्य के हाई-स्पीड रेल परियोजनाओं के लिए एक मजबूत घरेलू इकोसिस्टम तैयार कर रहा है।

इसलिए मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना न सिर्फ भारत में वर्ल्ड-क्लास टेक्नोलॉजी ला रही है, बल्कि यह भारत को उस टेक्नोलॉजी को अपने देश में बनाने में भी सक्षम बना रही है।

भूकंप की प्रारंभिक पहचान : सुरक्षा के लिए डिजाइन की गई उन्नत प्रणाली

14 ट्रैक्शन सबस्टेशनों में से प्रत्येक में प्रारंभिक भूकंप पता लगाने वाले सिस्मोमीटर लगाए जाएंगे, जो भूकंपीय गतिविधि का पता लगाने और कुछ ही सेकंड में सुरक्षा उपाय शुरू करने में सक्षम होंगे, ताकि भूकंप होने पर तुरंत ट्रेनों को रोका जा सके।

कुल मिलाकर 28 सीस्मोमीटर लगाए जा रहे हैं—इनमें से 22 हाई-स्पीड कॉरिडोर पर ट्रैक्शन सबस्टेशन और स्विचिंग पोस्ट पर और 6 अतिरिक्त सीस्मोमीटर महाराष्ट्र और गुजरात के भूकंप-संभावित इलाकों में लगाए जा रहे हैं।

28 सिस्मोमीटर में से 12 महाराष्ट्र में मुंबई, ठाणे, विरार, बोईसर, खेड़ा, रत्नागिरी, लातूर और पंगरी के पास लगाए जाएंगे, जबकि 16 गुजरात में वापी, बिलिमोरा, सूरत, भरूच, वडोदरा, आणंद, महेमदाबाद, अहमदाबाद, अदेसर और पुराने भुज के पास लगाए जाएंगे।

एक स्मार्ट, लगातार मॉनिटर किया जाने वाला नेटवर्क

पूरे इलेक्ट्रिकल नेटवर्क की निगरानी एक सेंट्रलाइज्ड कंट्रोल सेंटर से रियल-टाइम में की जाएगी।

हाई-स्पीड ट्रेन के सुरक्षित एवं विश्वसनीय परिचालन के लिए ऑटोमेटेड प्रोटेक्शन सिस्टम सेकंड के अंश मात्र में सक्रिय हो जाएँगी।■

वडोदरा बुलेट ट्रेन स्टेशन

वडोदरा बुलेट ट्रेन स्टेशन भारतीय रेल के प्लेटफॉर्म संख्या 7 के ऊपर बनाया जा रहा है, जिससे यात्रियों को बुलेट ट्रेन और भारतीय रेल के बीच आसान कनेक्टिविटी मिलेगी। स्टेशन पश्चिम रेलवे स्टेशन और शहर के बस डिपो से भी जुड़ा होगा।

स्टेशन का डिजाइन वडोदरा के प्रसिद्ध बरगद के पेड़ों से प्रेरित है। यात्रियों के लिए प्रतीक्षालय, बेबी केयर, शौचालय, रिटेल, पार्किंग तथा पिक-अप और ड्रॉप-ऑफ जैसी सुविधाएँ उपलब्ध होंगी।

निर्माण प्रगति : कॉनकोर्स, ट्रैक और प्लेटफॉर्म स्तर पर स्लैब का काम पूरा हो चुका है, जबकि स्ट्रक्चरल स्टील लगाने का काम जारी है।



भारतीय रेल ने हर्षोल्लास के साथ मनाया स्वतंत्रता दिवस

80 वें स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या से ही भारतीय रेल उल्लास के साथ स्वतंत्रता दिवस समारोहों में शामिल हो गई। सभी प्रमुख रेलवे स्टेशनों, रेल कार्यालयों, इमारतों और रेल कॉलोनियों को राष्ट्रीय ध्वज से सुसज्जित किया गया और तिरंगी रोशनी से सजाया गया। रेलवे स्टेशनों की इमारतों और प्रतिष्ठित रेल ब्रिजों को आकर्षक ढंग से सजाया गया और इन पर राष्ट्रीय ध्वज लहराया गया। रेल कर्मियों ने 'हर घर तिरंगा' कार्यक्रम में सहभागिता निभाई गई।



रेलवे बोर्ड, नई दिल्ली



छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस, मुंबई



कानपुर सेंट्रल रेलवे स्टेशन, उत्तर प्रदेश



अगरतला रेलवे स्टेशन, त्रिपुरा



बरपेटा रोड रेलवे स्टेशन, असम


अंजी रेल ब्रिज


हरिद्वार रेलवे स्टेशन, उत्तराखंड


मेंदीपथार रेलवे स्टेशन, मेघालय



नहरलगुन रेलवे स्टेशन, उत्तराखंड



जैसलमेर रेलवे स्टेशन, राजस्थान

अमृत स्टेशन



गोटन रेलवे स्टेशन, राजस्थान

- क्षेत्रीय विरासत को संजोए भव्य स्टेशन भवन
- विशाल सर्कुलेटिंग और पार्किंग
- सुगम आवागमन हेतु फुट ओवर ब्रिज
- आरामदायक वेटिंग एरिया



हल्दीबाड़ी रेलवे स्टेशन, पश्चिम बंगाल

- सुव्यवस्थित एवं पर्याप्त रोशनी वाला स्टेशन भवन
- विशाल सर्कुलेटिंग एरिया एवं पार्किंग क्षेत्र
- प्रवेश एवं निकास के लिए अलग-अलग मार्ग
- फुट ओवर ब्रिज एवं लिफ्ट की सुविधा
- दिव्यांगजन-अनुकूल सुविधाएँ



दौसा रेलवे स्टेशन, राजस्थान

- मॉडर्न स्टेशन बिल्डिंग
- विशाल सर्कुलेटिंग व पार्किंग एरिया
- दिव्यांगजन अनुकूल सुविधाएँ
- फुट ओवर ब्रिज
- आरामदायक वेटिंग एरिया



हर्रावाला रेलवे स्टेशन, उत्तराखंड

- नया स्टेशन भवन
- विस्तारित प्लेटफॉर्म शेल्टर व आरामदायक प्रतीक्षालय
- सुगम आवागमन के लिए साइनेज
- विशाल सर्कुलेटिंग एरिया एवं पार्किंग



फेरोक रेलवे स्टेशन, केरल

- यात्रियों की सुविधा के लिए पार्किंग एवं सर्कुलेटिंग एरिया
- क्षेत्रीय संस्कृति एवं आकर्षक भित्ति चित्रकारी
- फुट ओवर ब्रिज
- उन्नत एवं आकर्षक फ्रंट फैसेड
- एक्जीक्यूटिव लाउंज की सुविधा



परमक्कुडी रेलवे स्टेशन, तमिलनाडु

- नवीनीकृत स्टेशन भवन
- फुट ओवर ब्रिज
- बेहतर पार्किंग एवं सर्कुलेटिंग एरिया
- सुगम आवागमन के लिए लिफ्ट की सुविधा
- दिव्यांगजन-अनुकूल सुविधाएँ



केसिंगा रेलवे स्टेशन, ओडिशा

- आधुनिक एवं आकर्षक स्टेशन भवन
- सुव्यवस्थित सर्कुलेटिंग एरिया और पार्किंग सुविधाएँ
- यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए आरामदायक प्रतीक्षालय
- स्थानीय प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विरासत को दर्शाते कलात्मक आंतरिक सज्जा



तिरूर रेलवे स्टेशन, केरल

- आधुनिकीकृत स्टेशन भवन एवं बाहरी स्वरूप (फसाड)
- फुट ओवर ब्रिज एवं एस्केलेटर की सुविधा
- आरामदायक प्रतीक्षालय
- बेहतर पार्किंग एवं सर्कुलेटिंग एरिया
- बेहतर सतह के साथ विस्तारित प्लेटफॉर्म

मुंबई को रेलवे का बड़ा इंफ्रास्ट्रक्चर बूस्ट

238 एसी लोकल और हाई-डेंसिटी कॉरिडोर पर बढ़ेगी क्षमता

राजेन्द्र बी. आकलेकर
वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक, मुंबई

मुंबई की रेल लाइफलाइन अब क्षमता और तकनीक के क्षेत्र में बड़े बदलाव की ओर आगे बढ़ रही है। केंद्र सरकार ने दो महत्त्वपूर्ण कदम उठाए हैं, जो शहर के रेल नेटवर्क का स्वरूप बदल सकती हैं—मुंबई के लिए 238 नई वातानुकूलित उपनगरीय रेक और देश के 11,000 कि.मी. लंबे उच्च घनत्व वाले रेल नेटवर्क को चार-लाइन वाला बनाने की योजना। इनमें से तीन प्रमुख कॉरिडोर सीधे मुंबई से जुड़े हैं।

हाल ही में हुई इन दोनों घोषणाओं से भारतीय रेल की व्यापक रणनीति स्पष्ट होती है। एक ओर मुंबई की रोजाना लाखों यात्रियों को ढोने वाली उपनगरीय रेल व्यवस्था की क्षमता बढ़ाई जाएगी, वहीं दूसरी ओर महानगर को देश के प्रमुख आर्थिक केंद्रों से जोड़ने वाले लंबी दूरी के रेल कॉरिडोर की क्षमता में भी विस्तार किया जाएगा।

मुंबई के लिए तत्काल पहल के तहत 238 एसी लोकल रेक के निर्माण में तेजी लाने का निर्णय लिया गया है। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि इन ट्रेनों का निर्माण तीन मौजूदा रेलवे उत्पादन इकाइयों—इंटीग्रल कोच फैक्ट्री (आईसीएफ), चेन्नई; रेल कोच फैक्ट्री (आरसीएफ), कपूरथला; और मॉडर्न कोच फैक्ट्री (एमसीएफ), रायबरेली—में एक साथ किया जाएगा। इससे पहले निविदा आधारित उत्पादन प्रक्रिया में हो रही देरी के कारण परियोजना की समयसीमा प्रभावित हो रही थी।

पहली नई एसी रेक 2027 तक तैयार करने का लक्ष्य है, जबकि पूरी 238 रेक का उत्पादन 2030 तक पूरा करने की योजना है।

रणनीति में बदलाव की घोषणा करते हुए रेल मंत्री ने कहा, “मुंबई लोकल, मुंबई की लाइफलाइन है।” पिछली खरीद प्रक्रिया में कई समस्याएं सामने आ रही थीं और उसकी समयसीमा स्वीकार्य नहीं थी। इसी कारण तीन रेलवे उत्पादन इकाइयों के माध्यम से निर्माण में तेजी लाने का निर्णय लिया गया।

तीन कारखाने, एक मुंबई लक्ष्य

238 एसी लोकल रेक का उत्पादन तीन कारखानों में बांटा गया है—इंटीग्रल कोच फैक्ट्री (आईसीएफ) 120, रेल कोच फैक्ट्री (आरसीएफ) 71 और मॉडर्न कोच फैक्ट्री (एमसीएफ) 47 रेक का निर्माण करेगी। रेलवे बोर्ड ने मौजूदा आरडीएसओ/आईसीएफ विनिर्देशों के आधार पर उत्पादन को मंजूरी दी है। इससे इन कारखानों को नई तकनीक विकसित करने के बजाय पहले से स्थापित डिजाइन और तकनीक का उपयोग करते हुए उत्पादन शुरू करने में मदद मिलेगी। तीनों कारखानों को आधुनिक यात्री कोच बनाने का अनुभव है।

इस पहल का महत्त्व केवल एसी ट्रेनों की संख्या बढ़ाने तक सीमित नहीं है। मुंबई की उपनगरीय रेलवे के भौतिक बुनियादी ढाँचे का भी समानांतर विस्तार किया जा रहा है। नए कॉरिडोर, अतिरिक्त रेल





लाइनें, लंबी ट्रेनों के संचालन के लिए प्लेटफॉर्म का विस्तार और यार्ड का पुनर्गठन जैसे कार्य मुंबई अर्बन ट्रांसपोर्ट प्रोजेक्ट के तहत किए जा रहे हैं। रिपोर्टों के अनुसार, क्षमता विस्तार से जुड़े इन कार्यों पर करीब ₹22,000 करोड़ का निवेश किया जा रहा है।

नई उत्पादन रणनीति का उद्देश्य रेलवे की पुरानी चुनौती को दूर करना है—पहले बुनियादी ढाँचा तैयार करना और फिर ट्रेनों की उपलब्धता का इंतजार करना। अब प्रयास दोनों को साथ-साथ आगे बढ़ाने का है।

उच्च घनत्व वाले रेल कॉरिडोर

मुंबई के रेल विस्तार का दूसरा पहलू इसे राष्ट्रीय स्तर की बड़ी क्षमता-वृद्धि से जोड़ता है। भारतीय रेल अपने सात उच्च घनत्व वाले रेल मार्गों में लगभग 11,000 कि.मी. हिस्से को चार-लाइन वाला बनाने की दिशा में आगे बढ़ रही है। ये मार्ग देश के कुल रेल यातायात का करीब 41 प्रतिशत संभालते हैं, जबकि पूरे रेल नेटवर्क में इनकी हिस्सेदारी लगभग 16 प्रतिशत है।

इन सात उच्च घनत्व वाले मार्गों में तीन सीधे मुंबई से जुड़े हैं:

- चेन्नई–मुंबई
- मुंबई–दिल्ली
- मुंबई–हावड़ा

अन्य चार मार्ग हैं—दिल्ली–हावड़ा, हावड़ा–चेन्नई, दिल्ली–चेन्नई और दिल्ली–गुवाहाटी।

इन कॉरिडोरों पर चार लाइनें होने से अधिक ट्रेनों के संचालन की क्षमता बढ़ेगी, यात्री और मालगाड़ियों के बीच परिचालन संबंधी टकराव कम होंगे तथा अत्यधिक व्यस्त मार्गों पर परिचालन में अधिक लचीलापन मिलेगा। इससे बढ़ती यात्री और माल ढुलाई मांग को पूरा करने तथा भविष्य की रेल आवश्यकताओं के लिए क्षमता तैयार करने में मदद मिलेगी।

उपनगरीय ट्रेनों से राष्ट्रीय रेल कॉरिडोर तक

दोनों घोषणाओं को एक साथ देखा जाए तो मुंबई के लिए यह केवल एसी लोकल ट्रेनों के विस्तार की कहानी नहीं है, बल्कि रेलवे क्षमता बढ़ाने की एक व्यापक योजना को दर्शाती है। शहर के स्तर पर 238 नई एसी लोकल रेक के शामिल होने से वातानुकूलित उपनगरीय सेवाओं की उपलब्धता में उल्लेखनीय वृद्धि होगी। साथ ही, मुंबई के उपनगरीय रेल नेटवर्क के भौतिक विस्तार के साथ यात्रियों को आधुनिक ट्रेनों का विकल्प भी मिलेगा।

राष्ट्रीय स्तर पर, उच्च घनत्व वाले रेल नेटवर्क के प्रस्तावित चार-लाइन विस्तार से मुंबई की दिल्ली, चेन्नई और हावड़ा जैसे देश के प्रमुख रेलवे एवं आर्थिक कॉरिडोर से कनेक्टिविटी और मजबूत होगी।

इसे रेलवे क्षमता विस्तार की दोहरी रणनीति कहा जा सकता है—मुंबई के भीतर अधिक ट्रेनें और मुंबई को देश के बाकी हिस्सों से जोड़ने के लिए अधिक रेल क्षमता।

अब एसी होगी मुंबई की 'लाइफलाइन'

मुंबई की उपनगरीय रेलवे केवल परिवहन का साधन नहीं, बल्कि शहर की जीवनरेखा है। 238 नई एसी लोकल रेक का आगमन इस जीवनरेखा को आधुनिक, अधिक आरामदायक और बेहतर यात्री अनुभव से जोड़ने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। इसके साथ राष्ट्रीय रेल कॉरिडोर की क्षमता बढ़ाने की योजना मुंबई को देश के प्रमुख आर्थिक केंद्रों से और मजबूत तरीके से जोड़ेगी।

इस तरह, मुंबई का रेलवे विस्तार केवल नई ट्रेनों या नई पटरियों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि शहर के भीतर बेहतर यात्री सेवाओं और देश के साथ मजबूत रेल संपर्क—दोनों को एक साथ आगे बढ़ाएगा।

एसी लोकल ट्रेन कार्यक्रम विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि मुंबई में वातानुकूलित उपनगरीय ट्रेनों का विस्तार अब तक धीरे-धीरे ही

हुआ है। पहली एसी लोकल सेवा 2017 में शुरू हुई थी, लेकिन मुंबई की विशाल पारंपरिक उपनगरीय रेल व्यवस्था की तुलना में इसका बेड़ा अभी भी काफी छोटा है। ऐसे में 238 नई एसी लोकल रेक शामिल होने से मुंबई में वातानुकूलित उपनगरीय रेल यात्रा का दायरा काफी व्यापक हो जाएगा।

यह घोषणा बुनियादी ढाँचे की योजना से जुड़ा एक महत्त्वपूर्ण सबक भी सामने रखती है।

रेलवे का कोई भी कॉरिडोर उतना ही उपयोगी होता है, जितनी उस पर उपलब्ध ट्रेनों और परिचालन क्षमता होती है। इसी तरह, अतिरिक्त ट्रेनें भी तब तक अपना पूरा लाभ नहीं दे सकतीं, जब तक नेटवर्क में उनके संचालन के लिए पर्याप्त ट्रैक, प्लेटफॉर्म, यार्ड और रखरखाव सुविधाएँ उपलब्ध न हों।

इसलिए मुंबई में रेलवे विस्तार अब अलग-अलग परियोजनाओं तक सीमित न रहकर पूरी व्यवस्था की क्षमता बढ़ाने पर केंद्रित होता जा रहा है।

नई रेल लाइनें, आधुनिक यार्ड, लंबे प्लेटफॉर्म और अतिरिक्त कॉरिडोर तभी प्रभावी होंगे, जब उनके अनुरूप पर्याप्त ट्रेनें उपलब्ध हों। 238 एसी लोकल रेक इस आवश्यकता को पूरा करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम हैं। वहीं, उच्च घनत्व वाले राष्ट्रीय रेल नेटवर्क का चार-लाइन विस्तार मुंबई से जुड़ी लंबी दूरी की यात्री और माल ढुलाई सेवाओं की व्यापक क्षमता संबंधी चुनौतियों का समाधान करेगा।

मुंबई जैसे शहर के लिए, जिसकी अर्थव्यवस्था और रोजमर्रा की जिंदगी रेलवे से गहराई से जुड़ी है, यह वर्षों में सबसे महत्त्वपूर्ण रेलवे क्षमता विस्तारों में से एक साबित हो सकता है। मुंबई का रेलवे उन्नयन अब केवल कुछ अतिरिक्त ट्रेनें चलाने तक सीमित नहीं है, बल्कि स्थानीय प्लेटफॉर्म से लेकर राष्ट्रीय रेल कॉरिडोर तक ट्रैक, ट्रेन और नेटवर्क क्षमता—तीनों को एक साथ विकसित करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

मुंबई रेलवे क्षमता विस्तार

प्रमुख बुनियादी ढाँचा और रोलिंग स्टॉक पहल

उन्नयन	प्रमुख विवरण	मुंबई के लिए महत्त्व
238 नई एसी उपनगरीय रेक	पहली रेक 2027 तक; पूरी फ्लीट 2030 तक	एसी लोकल सेवाओं का बड़े पैमाने पर विस्तार
आईसीएफ, चेन्नई	120 रेक	सबसे बड़ा उत्पादन हिस्सा
आरसीएफ, कपूरथला	71 रेक	रेक उत्पादन में तेजी
एमसीएफ, रायबरेली	47 रेक	अतिरिक्त विनिर्माण क्षमता
मौजूदा विनिर्देश	आरडीएसओ/ आईसीएफ विनिर्देशों पर आधारित	नई तकनीक विकास की आवश्यकता नहीं
उपनगरीय बुनियादी ढाँचा	करीब ₹22,000 करोड़ के क्षमता-विस्तार कार्य	ट्रैक, प्लेटफॉर्म, यार्ड और कॉरिडोर का उन्नयन
पहली एसी लोकल सेवा	2017 में शुरू	238 नई रेक से एसी यात्रा का दायरा काफी बढ़ेगा

उच्च घनत्व वाले रूट	मुंबई से संबंध	योजना
दिल्ली–हावड़ा	—	चार लाइनों का प्रस्ताव
हावड़ा–चेन्नई	—	चार लाइनों का प्रस्ताव
चेन्नई–मुंबई	हाँ	मुंबई से सीधा जुड़ाव
मुंबई–दिल्ली	हाँ	मुंबई से सीधा जुड़ाव
दिल्ली–चेन्नई	हाँ	मुंबई से सीधा जुड़ाव
मुंबई–हावड़ा	—	चार लाइनों का प्रस्ताव
दिल्ली–गुवाहाटी	—	चार लाइनों का प्रस्ताव

राष्ट्रीय स्तर: करीब 11,000 कि.मी. लंबे उच्च घनत्व वाले रेल मार्ग; ये सात मार्ग देश के लगभग 41% रेल यातायात का संचालन करते हैं, जबकि पूरे रेल नेटवर्क में इनकी हिस्सेदारी करीब 16% है।

स्तर	निवेश / हस्तक्षेप	अपेक्षित प्रभाव
मुंबई उपनगरीय रेल	238 नई एसी रेक + बुनियादी ढाँचे की क्षमता में विस्तार	अधिक आधुनिक और अधिक क्षमता वाली लोकल सेवाएँ
राष्ट्रीय रेल कॉरिडोर	उच्च घनत्व वाले रेल मार्गों का चार-लाइन विस्तार	यात्री और माल ढुलाई क्षमता में वृद्धि
एकीकृत रेल प्रणाली	ट्रैक + ट्रेनें + यार्ड + प्लेटफॉर्म	बुनियादी ढाँचे और ट्रेन क्षमता के बीच बेहतर समन्वय

धारवाड

काव्यात्मक स्मृतियों का स्टेशन

नवीन एन नवलगुंड
जनसंपर्क निरीक्षक,
हब्बली मंडल/दक्षिण पश्चिम रेलवे



रेलवे स्टेशन पर कवियों का मनमोहक चित्रण

रेलवे स्टेशनों पर उद्घोषणाओं की गूँज, इंजनों की दूर से आती गड़गड़ाहट, सामान की ट्रॉलियों की खड़खड़ाहट, पोर्टरों की "समालो" (संभालो) की पुकार, 'चाय... कॉफी...' बेचने वालों की आवाजें और देश के एक कोने से दूसरे कोने तक जाने वाले यात्रियों की भीड़—ये किसी भी भारतीय रेल स्टेशन के जाने-पहचाने दृश्य और ध्वनियाँ हैं। डिस्प्ले बोर्ड पर ट्रेनों का समय देखते यात्री, प्रतीक्षालयों में बैठे लोग और बाहर की ओर बढ़ते मुसाफिर एक विशिष्ट रेलवे स्टेशन की तस्वीर पेश करते हैं।

फिर भी, धारवाड़ रेलवे स्टेशन कुछ अलग है। यह लेखकों को कहानियाँ लिखने के लिए प्रेरित करता है, पाठकों को किताबें उठाने के लिए प्रोत्साहित करता है और राष्ट्र की साहित्यिक विरासत का सम्मान करता है।

कर्नाटक को आठ ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेताओं की भूमि होने का गौरव प्राप्त है। धारवाड़ डी.आर. बेन्द्रे, वी.के. गोकाक ,गिरीश कर्नाड और डॉ. चंद्रशेखर कंबार (जैसे दिग्गजों का गौरवशाली स्थान रहा है। भारतीय साहित्य में उनके उल्लेखनीय योगदान को धारवाड़ रेलवे स्टेशन की दीवारों पर भव्य चित्रों के माध्यम से उकेरा गया है, जो यात्रियों को पल भर रुकने और निहारने पर मजबूर कर देते हैं।

अक्सर कर्नाटक की साहित्यिक राजधानी कहे जाने वाले धारवाड़ की विरासत अत्यंत समृद्ध है। यह अविभाजित जिला पहले कन्नड़ कवि आदिकवि पंपा का घर था। 1968 में ज्ञानपीठ विजेता डी.आर. बेन्द्रे ने कन्नड़ साहित्य को गौरवान्वित किया, जिसके बाद 1990 में वी.के. गोकाक, 1998 में गिरीश कर्नाड और डॉ. चंद्रशेखर कंबार को



रेलवे स्टेशन के सामने स्थापित कलात्मक मूर्तियों की झलक



धारवाड़ रेलवे स्टेशन का प्रवेश द्वार

वर्ष 2010-2011 ने इस परंपरा को आगे बढ़ाया। इन साहित्यिक विभूतियों का धारवाड़ से गहरा नाता अब स्टेशन की पहचान का हिस्सा बन चुका है। जीवंत कलाकृतियों के जरिए उन्हें अमर बनाकर रेलवे ने स्टेशन के वातावरण को एक सांस्कृतिक आयाम दिया है।

इसके अलावा, यह स्टेशन नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर की स्मृतियों को भी संजोए हुए है। उनकी एक भव्य प्रतिमा स्टेशन की शोभा बढ़ाती है, जो भारतीय साहित्य और कला में उनके असीम योगदान को श्रद्धांजलि है। साहित्य से इतर, यह स्टेशन 'हस्तमुद्राओं' की स्थापना के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक विरासत का प्रदर्शन भी करता है। ये मुद्राएं न केवल स्मरण शक्ति बढ़ाने और मानसिक शांति के लिए जानी जाती हैं, बल्कि अपनी कलात्मकता के कारण यात्रियों के बीच 'सेल्फी स्पॉट' के रूप में भी बेहद लोकप्रिय हो गई हैं।

रेलवे स्टेशन केवल ट्रेन पकड़ने या उतरने का केंद्र नहीं है; इसे उस भूमि की कला, संस्कृति और आदर्शों का प्रतिबिंब होना चाहिए, जिसका वह प्रतिनिधित्व करता है। धारवाड़ रेलवे स्टेशन इसी दृष्टिकोण का साक्षात उदाहरण है, जो कर्नाटक की गौरवशाली साहित्यिक विरासत और आम यात्रियों के बीच एक सेतु का काम कर रहा है।

धारवाड़ रेलवे स्टेशन पर रवींद्रनाथ टैगोर की ऐतिहासिक यात्रा

वर्ष 1922 में, नोबेल पुरस्कार विजेता और प्रख्यात लेखक रवींद्रनाथ टैगोर ने धारवाड़ रेलवे स्टेशन का दौरा किया था। कर्नाटक की सांस्कृतिक राजधानी और 'विद्याकाशी' (शिक्षा की राजधानी) के रूप में प्रसिद्ध इस शहर से उनका गुजरना एक ऐतिहासिक पल था। टैगोर, सी. एफ. एंड्रयूज के साथ पुणे और बेंगलुरु के रास्ते श्रीलंका जा रहे थे।

जब यह पता चला कि ट्रेन धारवाड़ स्टेशन पर पाँच मिनट के लिए रुकेगी, तो यहाँ का साहित्यिक समुदाय उत्साह से भर गया। इस दुर्लभ अवसर का लाभ उठाते हुए, प्रसिद्ध कवि और ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता डॉ. डी.आर. बेन्द्रे ने अपने साहित्यिक मंडल के सदस्यों के साथ स्टेशन पर रवींद्रनाथ टैगोर से मुलाकात की थी।

इस ऐतिहासिक क्षण को चिरस्थायी बनाने के लिए, रेलवे विभाग ने दिनांक 8 अगस्त, 1989 को स्टेशन पर एक स्मारक का निर्माण किया। इसे 'गुरुदेव स्मारक' नाम दिया गया, जो टैगोर की यात्रा और भारतीय संस्कृति में उनके अमूल्य योगदान के प्रति एक जीवंत सम्मान है।■



कवि रवींद्रनाथ टैगोर की ऐतिहासिक यात्रा की स्मृति में स्मारक

यहाँ इतिहास बोलता है...

प्रधानमंत्री संग्रहालय

तकनीकी क्रांति के सहारे अतीत से संवाद

गरुड़ राहुल दिलीप
आईसीएएस,
वित्तीय नियंत्रक, पीएमएमएल

नई दिल्ली के तीन मूर्ति एस्टेट की एक शांत, मंद प्रकाश से भरी दीर्घा में ऐसा क्षण आता है, जब इतिहास केवल पढ़ी जाने वाली चीज नहीं रह जाता, बल्कि संवाद का विषय बन जाता है। काँच जैसी पारदर्शी संरचना के भीतर एक आदमकद आकृति खड़ी है—साँस लेती हुई, पलकें झपकाती हुई और मानो किसी प्रश्न की प्रतीक्षा करती हुई। आप उससे प्रश्न करते हैं और सरदार वल्लभभाई पटेल—भारत के लौह पुरुष, जिन्हें इस संसार से विदा हुए सात दशक से अधिक समय बीत चुका है—अपने ही शब्दों और अपनी विशिष्ट शैली में उसका उत्तर देते हैं।

यह प्रधानमंत्री संग्रहालय (PMS) है और यह भारत में निर्मित अब तक के अन्य संग्रहालयों से एक अलग अनुभव प्रस्तुत करता है। दिनांक 14 अप्रैल, 2022 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ऐतिहासिक तीन मूर्ति परिसर में इसका उद्घाटन किया। यही परिसर कभी भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू का निवास था। संग्रहालय के सामने एक महत्त्वाकांक्षी उद्देश्य था—भारत के सभी प्रधानमंत्रियों की यात्रा को, उनके अलग-अलग वैचारिक दृष्टिकोणों और ऐतिहासिक कालखंडों के पार, राष्ट्र-निर्माण की एक समेकित कथा के रूप में प्रस्तुत करना।



इस लेख को प्रभावशाली बनाने वाला तत्व केवल उसका शोध और अकादमिक आधार नहीं है। इसकी विशेषता वह व्यापक तकनीकी संसार है, जिसका उपयोग संग्रहालय ने आठ दशकों के राजनीतिक इतिहास को दर्शकों के लिए तात्कालिक, निकट और जीवंत अनुभव में बदलने के लिए किया है।

डिजिटल युग के लिए निर्मित संग्रहालय

तीन मूर्ति परिसर में स्थित दो खंडों और दर्जनों दीर्घाओं में फैला प्रधानमंत्री संग्रहालय ऐतिहासिक शोध को समकालीन संग्रहालय-पद्धति के साथ जोड़ता है। खंड-I स्वतंत्र भारत के निर्माण के आरंभिक वर्षों की कथा प्रस्तुत करता है—संविधान-निर्माण, पंडित नेहरू को समर्पित एक विशिष्ट दीर्घा और तोशाखाना, जिसमें विभिन्न प्रधानमंत्रियों को विश्व के नेताओं और विशिष्ट अतिथियों से प्राप्त उपहार प्रदर्शित किए गए हैं। खंड-II इस कथा को कालक्रम के अनुसार आगे बढ़ाता है। इसमें लाल बहादुर शास्त्री से लेकर वर्तमान समय तक पद पर रहे प्रत्येक प्रधानमंत्री की पहलों, चुनौतियों और राष्ट्र-निर्माण में उनके योगदान को प्रस्तुत किया गया है।

पारंपरिक संग्रहालय से प्रधानमंत्री संग्रहालय को अलग पहचान देने वाला उसका क्यूरेटोरियल उपकरण-संसार है। इसकी दीर्घाओं में होलोग्राम, आभासी और संवर्धित वास्तविकता, मल्टी-टच तथा मल्टीमीडिया डिस्प्ले, इंटरैक्टिव कियोस्क, कंप्यूटरीकृत गतिशील मूर्तियाँ, रोबोटिक इंस्टॉलेशन और स्मार्टफोन से जुड़ी अनुभवात्मक तकनीकों का प्रयोग किया गया है। इनमें से अधिकांश तकनीकें सामान्यतः मनोरंजन और गेमिंग से जुड़ी होती हैं, न कि सार्वजनिक इतिहास के किसी संग्रहालय से। इसका उद्देश्य स्पष्ट है—जो सामग्री कभी काँच के पीछे स्थिर और दूर दिखाई देती थी, वह अब ऐसी अनुभवात्मक सामग्री में बदल गई है, जिसके बीच दर्शक चल सकता है, उसे सक्रिय कर सकता है और कई मामलों में उससे संवाद भी कर सकता है।

एआई होलोबॉक्स : जब इतिहास जवाब देता है

संग्रहालय में सबसे अधिक चर्चा में रहने वाला तकनीकी नवाचार एआई होलोबॉक्स है। यह भारत के कुछ प्रमुख नेताओं के आदमकद, अत्यंत यथार्थपरक 3डी होलोग्राफिक अवतारों की एक शृंखला है, जिन्हें संग्रहालय के विशेष अनुभूति क्षेत्र में स्थापित किया गया है। यह किसी स्क्रीन या पहले से रिकॉर्ड किए गए वीडियो जैसा नहीं है। होलोबॉक्स एक पारदर्शी संरचना के भीतर त्रि-आयामी आकृति का ऐसा प्रक्षेपण करता है, जो स्थिर या पूर्व-रिकॉर्डेड प्रस्तुति के बजाय जीवंत और प्रतिक्रियाशील प्रतीत होता है।

यह तकनीक आदमकद होलोग्राफिक प्रक्षेपण को वॉयस रिकग्निशन और जनरेटिव आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के साथ जोड़कर काम करती है। दर्शक अपनी आवाज में कोई प्रश्न पूछता है और प्रणाली उस प्रश्न को संसाधित करके वास्तविक समय में उत्तर देती है। इसके लिए नेता के भाषणों, लेखों, साक्षात्कारों और प्रमाणित ऐतिहासिक अभिलेखों से तैयार किए गए एक सुव्यवस्थित ज्ञान-आधार का उपयोग किया जाता है। इसलिए दो अलग-अलग संवाद बिल्कुल एक जैसे नहीं होते।

संग्रहालय ने सबसे पहले भारत के प्रथम गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल का होलोबॉक्स प्रस्तुत किया। इसके बाद डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का होलोबॉक्स स्थापित किया गया और फिर महात्मा गांधी का तीसरा होलोबॉक्स प्रस्तुत किया गया। संग्रहालय के अनुसार, गांधी का यह "अत्यंत यथार्थपरक" अवतार दर्शकों को राष्ट्रपिता के दर्शन और सार्वजनिक जीवन पर उनके साथ जीवन्त संवाद करने का अवसर देता है।

हाल ही में, जुलाई 2026 में कारगिल विजय दिवस के अवसर पर, संग्रहालय ने चौथा होलोबॉक्स पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को समर्पित किया। इसे अनुभूति क्षेत्र में स्थापित किया गया और वाजपेयी परिवार के सदस्यों की उपस्थिति में इसका लोकार्पण किया गया। अब दर्शक उनके नेतृत्व, कविता, विदेश नीति और उनके कार्यकाल की महत्त्वपूर्ण घटनाओं, जिनमें 1999 का कारगिल युद्ध भी शामिल है, के बारे में इस अवतार से प्रश्न पूछ सकते हैं और उनके अपने दर्ज अभिलेखों पर आधारित उत्तर प्राप्त कर सकते हैं।





अनुभूति क्षेत्र : जहाँ दर्शक सहभागी बन जाते हैं

होलोबॉक्स संग्रहालय के व्यापक अनुभवात्मक खंड—अनुभूति क्षेत्र—का प्रमुख आकर्षण है। यहाँ संवर्धित वास्तविकता, आभासी वास्तविकता और रोबोटिक्स को एक साथ प्रयोग किया गया है, ताकि दर्शक ऐतिहासिक घटनाओं को केवल देखें नहीं, बल्कि उनमें प्रवेश करने का अनुभव प्राप्त करें। आभासी वास्तविकता पर आधारित एक हेलीकॉप्टर यात्रा दर्शकों को भारत के बुनियादी ढाँचे और विकास परियोजनाओं के कृत्रिम रूप से निर्मित परिदृश्य के ऊपर ले जाती है और तेजी से आधुनिक होते भारत का विहंगम दृश्य प्रस्तुत करती है। इसी प्रकार, एक रोबोटिक भुजा प्रधानमंत्रियों द्वारा लिखे गए हस्तलिखित पत्रों को एक-एक स्ट्रोक के साथ पुनः लिखती है। 'प्रधानमंत्री के साथ चलें' और 'प्रधानमंत्री के साथ सेल्फी' जैसी स्थापनाओं में संवर्धित वास्तविकता का प्रयोग किया गया है, जिसके माध्यम से दर्शक सचमुच उन नेताओं के साथ स्वयं को उपस्थित अनुभव कर सकते हैं, जिनके निर्णयों ने देश की दिशा को प्रभावित किया।

अनुभूति क्षेत्र में कुछ विशिष्ट ऐतिहासिक घटनाओं का भी अत्यंत प्रभावशाली ढंग से पुनर्निर्माण किया गया है। एक अनुभवात्मक परमाणु परीक्षण केंद्र दर्शकों को पोखरण परमाणु परीक्षणों को पुनः अनुभव करने का अवसर देता है। इसी प्रकार, अन्य केंद्रों पर हरित क्रांति और 1990 के दशक के प्रारंभिक वर्षों के आर्थिक सुधारों जैसे निर्णायक घटनाक्रमों का पुनर्निर्माण किया गया है। 'राष्ट्रीय सुरक्षा' से जुड़ा एक अनुभव दर्शकों को देश की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक निर्णय-प्रक्रिया के दबावों का अनुकरणात्मक अनुभव कराता है।

समग्र रूप से, इन स्थापनाओं को स्थिर प्रदर्शों के रूप में नहीं, बल्कि संक्षिप्त और निर्देशित अनुभवों के रूप में विकसित किया गया है— वस्तुतः यह भारत के आधुनिक इतिहास के निर्णायक मोड़ों से तकनीक के माध्यम से सीधे जुड़ने के छोटे, केंद्रित और अनुभवात्मक अवसर है।

प्रकाश, ध्वनि और आगे की यात्रा

दीर्घाओं से आगे बढ़कर प्रधानमंत्री संग्रहालय ने बड़े स्तर की कथात्मक प्रस्तुतियों में भी तकनीक का विस्तार किया है। इसका लाइट एंड साउंड शो, 'नव्या की उड़ान', भारत की अंतरिक्ष यात्रा की कथा प्रस्तुत करता है, जबकि एक अन्य प्रस्तुति, 'वीरांगनाओं की महागाथा', विभिन्न कालखंडों में भारत की वीरांगनाओं के शौर्य और योगदान को सामने लाती है।

इन सभी प्रयासों के पीछे एक सरल संस्थागत दृष्टिकोण है— सार्वजनिक स्मृति सबसे अधिक प्रभावी ढंग से तभी स्थायी होती है, जब उसे लोगों के लिए सहज और सुलभ बनाया जाए। इक्कीसवीं सदी में सुलभता का अर्थ अब यह भी है कि दर्शकों से उसी तकनीकी माध्यम पर संवाद किया जाए, जिसके वे पहले से अभ्यस्त हैं। जिस किशोर का बचपन वॉयस असिस्टेंट और वर्चुअल रियलिटी हेडसेट के बीच बीता है, उसके लिए महात्मा गांधी के होलोबॉक्स से हुई बातचीत किसी तस्वीर के नीचे लिखे परिचय की तुलना में कहीं अधिक स्मरणीय हो सकती है और ऐसी बातचीत के बाद वह उन वास्तविक भाषणों और लेखों को भी खोजने के लिए प्रेरित हो सकता है, जिन पर वह संवाद आधारित है।

दर्शकों के लिए इसका निष्कर्ष स्पष्ट है: यह ऐसा संग्रहालय नहीं है, जहाँ केवल निष्क्रिय रूप से घूमते हुए प्रदर्शनों को देखा जाए। यह ऐसा संग्रहालय है, जहाँ प्रश्न पूछे जा सकते हैं, इतिहास में प्रवेश किया जा सकता है और—इसके होलोग्राफिक नेताओं के मामले में बिल्कुल शाब्दिक अर्थ में—उनसे संवाद भी किया जा सकता है।■

नवाचार का नया ट्रैक

दक्षिण रेलवे में स्वदेशी तकनीक का दम

आर. एन. सिंह
पूर्व महाप्रबंधक, दक्षिण रेलवे

बढ़ता यातायात, उच्च गति की ट्रेनें और ग्राहकों की बढ़ती उम्मीदों के इस दौर में, रेल संरक्षा अब पुराने उपायों और मानवशक्ति मात्र पर निर्भर नहीं रह सकती है। आधुनिक रेलवे के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकी, संभाव्यताओं का विश्लेषण, ऑटोमेशन और मानव-आधारित नवोन्मेषी उपायों के सम्मिश्रण की आवश्यकता है।

दक्षिण रेलवे ने परिचालन और संरक्षा संबंधी चुनौतियों का सामना करने के साथ-साथ परिचालन में सुरक्षा, विश्वसनीयता, उत्पादकता और कर्मचारियों की सुरक्षा व कल्याण कार्यों को बेहतर बनाने के लिए कई स्वदेशी नवोन्मेषी उपाय विकसित करने की रणनीति अपनाई है। इस लेख में ऐसी पहलों का उल्लेख है, जो बताते हैं कि उपलब्ध दक्षता के द्वारा विकसित किए गए फील्ड-आधारित समाधान किस तरह से कम लागत में बड़े बदलाव ला सकते हैं।

इलेक्ट्रॉनिक ट्रेन सिग्नल रजिस्टर (e-TSR) : स्टेशन के कामकाज का स्वचालित रिकॉर्ड रखना

एक सदी से भी ज्यादा समय से, स्टेशन मास्टर ट्रेन सिग्नल रजिस्टर (TSR) हाथ से लिखा करते थे, जिसमें बहुत ज्यादा कागजी काम होता है और इसमें जानकारी के छूट जाने या लिखने में गलतियाँ होने की संभावनाएं बनी रहती हैं।

दक्षिण रेलवे ने इलेक्ट्रॉनिक ट्रेन सिग्नल रजिस्टर (e-TSR) विकसित किया है। यह एक सॉफ्टवेयर-आधारित सिस्टम है, जो सिग्नलिंग डेटा लॉगर से ट्रेन की आवाजाही की जानकारी अपने आप रिकॉर्ड करती है। यह सिस्टम स्टेशन मास्टर के डेस्कटॉप पर ही यार्ड में ट्रेनों की उपस्थिति, ट्रेनों की आवाजाही, ब्लॉक सेक्शन की स्थिति और ऑपरेशन से जुड़ी घटनाओं का वास्तविक दृश्य उपलब्ध कराती है।

यह प्रणाली स्टेशन मास्टर के लगभग 70% कागजी काम को समाप्त करती है, डेटा की प्रमाणिकता में सुधार लाती है, यातायात या पॉवर ब्लॉक के दौरान असुरक्षित लाइन-क्लियर परिचालन को रोकती है और प्रबंधन सूचना रिपोर्ट तत्काल तैयार करती है।

रेलवे ब्लॉक प्रबंधन प्रणाली (आरबीएमएस) ब्लॉक के लिए कागजी कार्य के बिना ही साइट में अनुमति

परिसंपत्ति के अनुरक्षण के लिए अनुरक्षण ब्लॉक अत्यधिक आवश्यक हैं, लेकिन इनके लिए परिचालन, इंजीनियरी, बिजली और सिग्नलिंग विभागों के बीच समन्वय की आवश्यकता होती है।



मैनुअल ट्रेन सिग्नल रजिस्टर, जिसमें हाथ से लिखी गई बहुत सारी प्रविष्टियाँ हैं,जो मैन्युअल रिकॉर्डिंग पर निर्भर हैं।



लाइव e-TSR डेशबोर्ड, जो ट्रेन की आवाजाही की रिकॉर्डिंग और वास्तविक स्थिति दिखाता है। (रंगीन बॉर व्यस्त ब्लॉक सेक्शन/यार्ड को दिखाते हैं)

RBMS ऐप ने ब्लॉक की मंजूरी, साइट पर निष्पादन/पूरा करने, मॉनिटरिंग और MIS रिपोर्ट की पूरी प्रक्रिया को डिजिटलीकरण के माध्यम से बदल दिया है।

यह प्रणाली, फील्ड पर्यवेक्षक, यातायात नियंत्रक और स्टेशन मास्टर जैसे विभिन्न उपयोगकर्ताओं के लिए उपयोगकर्ता अनुकूल, अनुकूलित डैशबोर्ड प्रदान करती है और अनुरक्षण स्लॉट, कंपोजिट ब्लॉक, शैडो ब्लॉक के स्वचालित आवंटन और व्यापक विश्लेषण/प्रबंधन सूचना प्रणाली को सक्षम बनाती है।

गेट के बंद होने की इलेक्ट्रॉनिक पुष्टि के माध्यम से नॉन-इंटरलॉक्ड समपारों की संरक्षा बढ़ाना

नॉन-इंटरलॉक समपारों पर (NILC) सामान्यतः पारंपरिक रूप से

स्टेशन मास्टर और गेट कीपर के बीच मौखिक बातचीत के आधार पर संरक्षा सुनिश्चित की जाती है।

इस कमी को दूर करने के लिए, दक्षिण रेलवे ने गेट बूम और लॉकिंग लीवर पर लगे गायरोस्कोपिक सेंसर का उपयोग करके गेट बंद होने की पुष्टि करने वाली एक सेंसर-आधारित प्रणाली विकसित की है और इसे 100% लागू भी किया है।

यह नवोन्मेषी उपाय यह सुनिश्चित करता है कि प्राइवेट नंबर तभी जेनरेट हों, जब इलेक्ट्रॉनिक रूप से यह पुष्टि हो जाए कि गेट वास्तव में बंद और लॉक हो गया है; इस तरह संरक्षा की एक अतिरिक्त और स्वतंत्र परत सुदृढ़ हो जाती है।



RBMS होम स्क्रीन, जिसमें अनुमोदन, साइट पर ब्लॉक के लिए अनुमति और MIS रिपोर्ट के लिए मेन्यू विकल्प दिखाए गए हैं।



पर्यवेक्षक डैशबोर्ड (मोबाइल और डेस्कटॉप) जो स्वीकृत, चल रहे और पूरे हो चुके ब्लॉक की वास्तविक-समय जानकारी देते हैं।

DOST (रेलपथ पर काम करने वालों की कार्य संबंधी संरक्षा): आनेवाली ट्रेनों के लिए अग्रिम चेतावनी प्रणाली

दुनिया भर के रेलवे कर्मचारियों में से रेलपथ पर काम करने वाले लोग सबसे ज्यादा जोखिम वाली श्रेणी में आते हैं। पारंपरिक चेतावनी प्रणालियाँ अक्सर मैन्युअल अलर्ट या 'रक्षक' जैसे सिस्टम पर निर्भर करती हैं, जो बहुत मुश्किल और बोझिल होते हैं (हर स्टेशन पर भारी उपकरण की जरूरत होती है) जो या तो बहुत पहले चेतावनी दे देते हैं या फिर उनमें सटीक जानकारी का अभाव होता है।

दक्षिण रेलवे ने DOST नाम की एक GPS-आधारित प्रोन्नत चेतावनी प्रणाली विकसित की है, जो रेलपथ पर काम करने वाले कर्मचारियों को चेतावनी देती है।

यह प्रणाली ट्रेन के आने से लगभग डेढ़ मिनट पहले लोकेशन-विशिष्ट



गेट के बंद होने की इलेक्ट्रॉनिक पुष्टि के लिए गेट बूम और लॉकिंग लीवर पर लगाए गए गायरो-सेंसर।



स्टेशन मास्टर और गेटकीपर को वास्तविक गेट स्थिति प्रदर्शन उपलब्ध है।

अलर्ट देती है, जिससे कर्मचारियों की सुरक्षा सुनिश्चित होती है।

प्रोन्नत फॉग सेफ उपकरण : इंटेलिजेंट ड्राइवर असिस्टेंस

कम दृश्यता की स्थिति में ट्रेनों का सुरक्षित संचालन एक बड़ी चुनौती है।

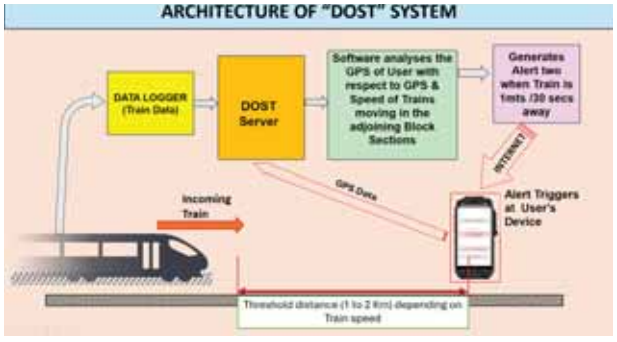
दक्षिण रेलवे ने इंटरनेट सुविधा युक्त टैबलेट आधारित इलेक्ट्रॉनिक फॉग सेफ उपकरण (e-FSD) विकसित किया है, जो अपने आप सतर्कता आदेश (caution orders), गति प्रतिबंध, आने वाले सिग्नल की दूरी और रूट डेटा प्राप्त कर लेता है।

यह प्रणाली ट्रेन के कर्मीदल को स्थिति से अवगत कराती है और सिग्नल के "डबल येलो" और "येलो" संकेतों को पार करते समय और लूप में प्रवेश करते या उससे बाहर निकलते समय ट्रेन की गति की निगरानी करने में मदद करती है।

प्वाइंट स्विच डिटेक्शन उपकरण : रूट इंटरलॉकिंग की पुष्टि करने का एक अतिरिक्त कदम

स्विचों के साथ हस्तक्षेप के मामले और स्विच की असामान्य स्थितियों को लेकर जताई गई चिंताओं के बाद, दक्षिण रेलवे ने स्विच की स्थिति (N या R या गैपिंग) की पुनः जाँच करने के लिए एक स्वदेशी 'पॉइंट स्विच डिटेक्शन' (PSD) उपकरण डिजाइन और विकसित किया है।

यह उपकरण मुक्त रूप से स्विच की स्थिति (सामान्य / रिवर्स) की



DOST प्रणाली योजना चित्र, जो GPS और ट्रेन डेटा के एकीकरण को दिखाता है।



रेलपथ पर काम करने वालों को चेतावनी देने के लिए स्मार्टफोन अलर्ट इंटरफेस

पुष्टि करता है और गैपिंग स्विच जैसी असामान्य स्थितियों का भी पता लगाता है, जिससे इंटरलॉकिंग की विश्वसनीयता और सुदृढ़ होती है।

लोको डिस्प्ले स्क्रीन के नमूने



लोकोमोटिव पर लगाया गया टैबलेट -आधारित प्रोन्नत FSD

HABD+ के जरिए हॉट एक्सल और फ्लैट टायर का पता लगाना

आजकल रेलवे संरक्षा आवधिक निरीक्षणों से ज्यादा 'संभाव्य अनुरक्षण' पर निर्भर करती है। दक्षिण रेलवे ने इन्फ्रारेड सेंसर, स्ट्रेन गेज और क्लाउड-आधारित विश्लेषिकी का उपयोग करते हुए HABD+ (हॉट एक्सल बॉक्स डिटेक्टर प्लस फ्लैट टायर डिटेक्शन) प्रणाली विकसित की है।

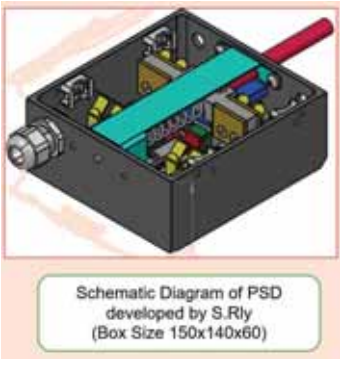


गति प्रतिबंध/सतर्कता आदेश का प्रदर्शन

यह प्रणाली चल स्टॉक की कमियों को पहले ही पहचानने में मदद करती है, ताकि कार्य के समय कोई विफलता न हो।

बायो-टॉयलेट डिस्चार्ज शूट में परिवर्तनः सरल इंजीनियरी, बृहद प्रभाव

सभी नवोन्मेषी उपायों के लिए प्रोन्नत प्रौद्योगिकी की आवश्यकता नहीं होती। कभी-कभी इंजीनियरी में व्यावहारिक सुधारों से भी समुचित लाभ मिलते हैं।



पॉइंट स्विच डिटेक्शन उपकरण का स्कीमैटिक डायग्राम।

इस परिवर्तन के कारण बायो-टॉयलेट से निकलने वाले अपशिष्ट के कारण रेलपथ के घटक, सिग्नलिंग परिसंपत्तियां, ब्रिजों और चल स्टॉक के अंडरफ्रेम में जंग होना बंद हो जाता है।

मेन लाइन इरुगूर जं. यार्ड, प्वाइंट 133बी में लगा PSD (वर्शन-4) (दिनांक 12.06.2025 को संस्थापित)



कार्य करने की स्थिति में इंस्टॉल किया गया वर्शन-4 PSD

ऑटोमेटेड ऑसिलेशन मॉनिटरिंग सिस्टम (AOMS)

दक्षिण रेलवे ने वंदे भारत ट्रेनों में ऑटोमेटेड ऑसिलेशन मॉनिटरिंग सिस्टम (AOMS) लगाने की पहल की है।

यह प्रणाली सामान्य ट्रेन संचालन के दौरान रेलपथ की गुणवत्ता की सतत निगरानी करती है, जिससे अनुरक्षण में होनेवाली बाधाओं का पूर्वानुमान लगाया जा सकता है।



HABD+ सेंसर का सेटअप, जिसमें इन्फ्रारेड सेंसर, प्रॉक्सिमिटी सेंसर और स्ट्रेन गेज देखे जा सकते हैं।



हॉट एक्सल और फ्लैट टायर से जुड़ी जानकारी का प्रदर्शन मॉनीटरिंग डैशबोर्ड में।

एनालिटिक्स के माध्यम से क्रू लिंक अनुकूलन

मानव संसाधन का उपयोग संरक्षा और दक्षता दोनों को महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है।

दक्षिण रेलवे ने IIIT बंगलूरु के सहयोग से सॉफ्टवेयर-आधारित क्रू लिंक अनुकूलन उपकरण विकसित किया है।



वर्तमान डिस्चार्ज व्यवस्था, जिससे रेलपथ में जंग लगने की समस्या हो सकती है

इस पहल से क्रू आवश्यकताएं कम हुईं, काम के घंटों का सही उपयोग हुआ, मुख्यालय में आराम का समय बढ़ा और उत्पादकता में सुधार हुआ।

टेलीमेडिसिन : रेलवे नेटवर्क पर विशेष हेल्थकेयर का विस्तार

कर्मचारियों की भलाई रेलवे संरक्षा का एक प्रमुख मुद्दा है।



में डिस्चार्ज पाइप की संशोधित व्यवस्था देखी जा सकती है, जो अपशिष्ट (effluent) को रेलपथ की अवसंरचना से बाहर गिराती है।

दक्षिण रेलवे ने क्षेत्र भर में केंद्रीय अस्पताल, मंडल अस्पतालों और स्वास्थ्य यूनिटों को जोड़ने वाला एक टेलीमेडिसिन नेटवर्क बनाया है।



वंदे भारत ट्रेन के कैब में लगा AOMS उपकरण।

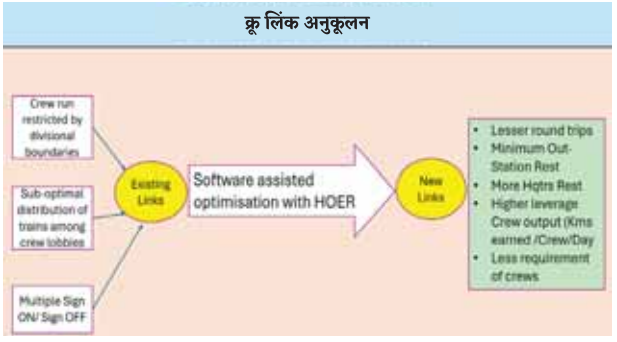


AOMS द्वारा जनरेट किया गया सैंपल डैशबोर्ड और SMS अलर्ट।

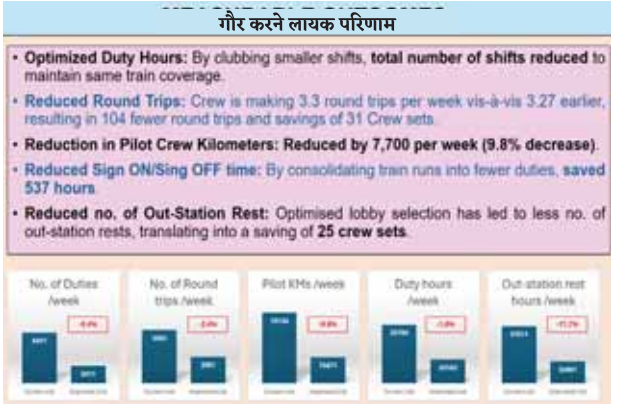
यह पहल 2.3 लाख से ज्यादा लाभार्थियों को विशेषज्ञ और सुपर-विशेषज्ञ स्वास्थ्य केयर सेवाएँ उपलब्ध कराने के साथ-साथ यात्रा का समय कम करती है और कार्यबल की उपलब्धता को बेहतर बनाती है।

निष्कर्ष

दक्षिण रेलवे का नवोन्मेषी कार्यक्रम यह दर्शाता है कि रेलवे की संरक्षा और कार्यक्षमता में परिवर्तन युक्त सुधार लाने के लिए सदैव महंगी आयातित तकनीकों पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं है। परिचालन अनुभव को स्वदेशी इंजीनियरी, डिजिटल प्रौद्योगिकी और



मौजूदा बनाम अनुकूलित क्रू लिंक संरचना।

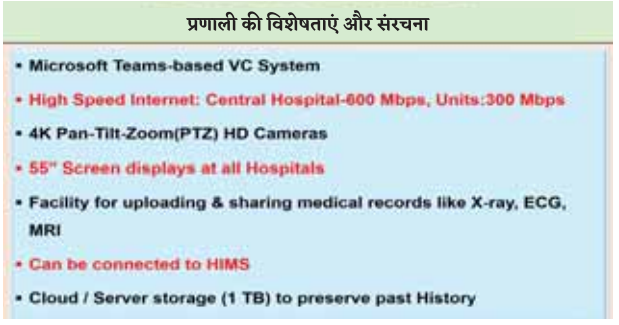


ऑप्टिमाइजेशन से प्राप्त उत्पादकता लाभ।

डेटा-आधारित निर्णय प्रक्रिया के साथ मिलाकर, दक्षिण रेलवे ने ऐसे समाधान तैयार किए हैं जिन्हें बड़े स्तर पर लागू किया जा सकता जो परिचालनिक संरक्षा, कर्मचारियों की सुरक्षा, परिसंपत्तियों की विश्वसनीयता और कर्मचारियों के कल्याण से जुड़े मुद्दों को संभाल सकते हैं।



दूर-दराज के स्वास्थ्य केंद्र पर विशेषज्ञ डॉक्टर और मरीज के बीच टेली-कन्सल्टेशन



टेलीमेडिसिन प्रक्रिया और डिजिटल स्वास्थ्यकेयर अवसंरचना।

समग्र रूप से देखा जाए तो, ये नवोन्मेषी उपाय प्रतिक्रियात्मक संरक्षा प्रबंधन से एक पूर्वानुमानित, डिजिटल रूप से सक्षम और निरंतर उन्नति कर रहे रेलवे तंत्र की ओर एक परिवर्तन के द्योतक हैं। ये न केवल भारतीय रेल के लिए बल्कि सुरक्षित और अधिक कुशल संचालन के लिए व्यावहारिक और लागत प्रभावी उपायों की तलाश कर रहे विश्व भर के रेल प्रशासनों के लिए भी एक अनुकरणीय और विस्तार योग्य उदाहरण प्रदान करते हैं।■

भारतीय रेल / Indian Railways
पत्रिका की सदस्यता एवं पत्रिका नहीं मिलने की शिकायत हेतु
फोन या व्हाट्सएप करें
92205 05349
सोमवार से शुक्रवार (सुबह 10 से 5 बजे तक)
Email: bmpr310rb@gmail.com, irbrhelp@gmail.com

फिल्म संगीत के स्वर्ण काल की अंतिम पुरोधा

आशा भोसले

प्रदीप सरदाना
वरिष्ठ पत्रकार एवं फिल्म समीक्षक

सुप्रसिद्ध दिग्गज गायिका आशा भोसले के निधन से सिर्फ आशा भोसले का ही नहीं, भारतीय सिनेमा के संगीत के 'स्वर्ण काल' का भी अंत हो गया है। आशा ताई इस स्वर्ण काल की अंतिम पुरोधा थीं। कुछ समय पहले आशा भोसले ने स्वयं कहा था "पुराने दौर के सभी गायक-गायिका चले गए। रफी, मुकेश, किशोर, शमशाद बेगम, हेमंत कुमार, मन्ना डे जैसे कई पुराने गायक पहले ही चले गए। मैं और लता दीदी बचे थे। लेकिन लता दीदी के जाने के बाद अब मैं ही अंतिम मुगल बची हूँ।" लेकिन अफसोस अब आशा भोसले भी नहीं रहीं।



राष्ट्रपति जी की फरमाइस पर गीत सुनातीं आशा भोसले

गत 11 अप्रैल, 2026 क देर शाम जब आशा ताई को दिल का गंभीर दौरा पड़ने का समाचार मिला तो पहले तो विश्वास ही नहीं हुआ कि एक दम चुस्त-दुरुस्त दिखने वाली आशा भोसले को दिल का दौरा कैसे पड़ गया। लेकिन जब उनकी पोती गायिका जनाई भोसले और ब्रीच कैंडी अस्पताल के सूत्रों ने उनके अस्पताल में भर्ती होने की पुष्टि की तो विश्वास हुआ कि यह कोई अफवाह नहीं, सच है। फिर अगले ही दिन 12 अप्रैल दोपहर होते-होते उनके निधन के समाचार ने झकझोर कर रख दिया।

आशा भोसले से जब भी मिलता या उन्हें लाइव सुनता तो मन प्रफुल्लित हो जाता। अपनी बढ़ती उम्र के बावजूद वह जिस उत्साह, जिस उमंग और जिस खूबसूरती से गा रहीं थीं, इससे वह सबके लिए एक प्रेरणा बन चुकी थीं। उनको देखकर सभी को अद्‌भुत ऊर्जा मिलती थी।

जब राष्ट्रपति मुर्मु ने किया गीत सुनाने का अनुरोध

अभी अगस्त 2023 की बात है जब आशा भोसले नारी शक्ति का एक पुरस्कार लेने दिल्ली आईं थीं। यहाँ ताज पैलेस में आयोजित उस समारोह में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु मुख्य अतिथि थीं। पुरस्कार समारोह के दौरान अचानक एक ऐसा बड़ा मोड़ आया कि सभी चकित रह गए। हुआ यह कि मंच पर आसीन राष्ट्रपति मुर्मु प्रोटोकॉल तोड़कर माइक तक गईं और उन्होंने आशा जी से एक गीत सुनाने का आग्रह कर दिया। यह देख पूरा सभागार तालियों से गूंज उठा। आशा ताई ने अपने मधुर स्वरों में, राष्ट्रपति की पसंद के फिल्म 'लगान' के गीत- 'राधा कैसे न जले' के कुछ बोल सुना दिए। वह सुन राष्ट्रपति के साथ उपस्थित जनसमूह भी मंत्रमुग्ध हो गया। इस पर राष्ट्रपति ने आशा भोसले से कहा- "आपने मेरी पसंद का गीत सुनाया, अब आप अपनी पसंद का कोई गीत सुनाइए।" इस पर आशा जी ने –'चुरा लिया है तुमने जो दिल को' गाया तो वातावरण और भी आनंदमय हो गया। इसके बाद राष्ट्रपति मुर्मु स्वयं आशा ताई का हाथ पकड़ कर उन्हें मंच के अंतिम छोर तक छोड़ने गईं।

यह सब दर्शाता है कि आशा भोसले ने अपनी अनुपम प्रतिभा से अपना कद इतना बड़ा कर लिया था कि देश के सर्वोच्च पद पर आसीन व्यक्तित्व ने भी उन्हें इतना सम्मान दिया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी आशा भोसले के साथ अपनी यादें सँजोये हुए हैं। आशा जी के निधन पर प्रधानमंत्री मोदी ने कहा – "दिल को छू लेने वाली मधुर धुनें हों या जोशीली रचनाएं, उनकी आवाज में सदा एक बेमिसाल चमक रही है। उनकी संगीत यात्रा ने दशकों तक भारतीय संस्कृति को ऊँचाइयों पर पहुँचाया। उनके साथ हुई मुलाकातों और बातचीत को मैं हमेशा सँजोकर रखूँगा।"

8 दशकों की भव्य संगीतमय यात्रा

देखिए न जितनी लोगों की उम्र भी मुश्किल से होती है वह उतने बरसों से गा रही थीं। पिछले 8 दशक से अपनी खनकती सुरीली आवाज से सभी को सम्मोहित कर आशा भोसले ने एक ऐसा आयाम बनाया, जहाँ शायद ही कभी कोई और पहुँच सके। आशा ने वर्ष 1943 में सिर्फ 10 बरस की आयु में पहली बार मराठी फिल्म 'माझ्या बाला' में गीत 'नीज नीज माझ्या बाला' गाकर गायन संसार में पहला कदम रखा था। जबकि उनका अंतिम गीत 'आओ ना' जून 2025 में अदनान सामी के साथ आया। जबकि, इससे पूर्व दिसंबर 2024 में आशा भोसले ने अपना एक संगीत एलबम 'सैंया बिना जग सूना' इतनी खूबसूरती से गाया कि सभी दंग रह गए। इसमें आशा ताई पुरानी यादों में जाते हुए अपने पिता दीना नाथ मंगेशकर और कुछ पुराने संगीतकारों को तो याद करती ही हैं साथ ही, उनकी प्रिय पोती गायिका जनाई भोसले का कमाल का कथक नृत्य भी इसमें है। लेकिन मंच पर तो वह अभी भी गा रही थीं। वर्ष 1943 से 1926 तक कुल 83 वर्ष तक वह मंच पर लगातार गाती रहीं। आशा भोसले ने करीब ढाई वर्ष पहले दिनांक 8 सितंबर, 1923 को दुबई में अपने 90 वें जन्मदिन पर घंटों अपना 'लाइव कॉन्सर्ट' करके पूरे विश्व को चकित कर दिया था।

अपने लंबे करियर में आशा ने 10 हजार से अधिक गीत गाए। बड़ी बात यह भी रही कि उनके गीतों में इतनी विविधता थी कि शास्त्रीय संगीत में रचे गीत हों या गजल, पॉप, भजन, प्रेम गीत, विरह गीत सभी में वह कमाल कर देती थीं।

16 बरस की उम्र में पहली शादी

आशा भोसले की इस बेहद शानदार संगीत यात्रा में शुरू में कई मुश्किलें भी आईं। बहन लता मंगेशकर के सचिव और अपने से 16 साल बड़े गणपतराव भोसले से शादी के बाद इनकी ज़िंदगी तूफ़ानों से घिर गई। अंततः तीन बच्चों की माँ बनने के बाद आशा पति से अलग हो गईं। तब पुरी तरह संगीत को समर्पित होकर आशा ने अपनी नई दुनिया शुरू की।

इससे एक दौर ऐसा आया कि सभी संगीतकार इनके सुरों के दीवाने हो गए। सबसे बड़ी पहली सफलता इन्हें ओ पी नय्यर के संगीत निर्देशन में फिल्म 'सीआईडी' से मिली। बाद में नय्यर के साथ ही फिल्म 'नया दौर' में पहली बार फिल्म की किसी नायिका (वैजयंतीमाला) पर इनके गाए गीत फिल्मांकित हुए तो वह एक सफल गायिका बन गईं।

गायकों में इनकी जोड़ी किशोर कुमार और रफी के साथ खूब जमी। तो रवि, एस डी बर्मन, रोशन, मदन मोहन, जयदेव, सी रामचन्द्र, लक्ष्मीकान्त प्यारेलाल, शंकर जयकिशन, कल्याणजी आनंदजी, खय्याम, बप्पी लहरी, अनु मलिक, इलाईराजा और ए आर रहमान के साथ इस महान गायिका ने एक से एक अविस्मरणीय गीत दिए। सर्वाधिक गीत (कुल 840) आशा ने आर डी बर्मन के साथ गाए। आशा ने दूसरी शादी भी आर डी बर्मन के साथ की।

जो गीत कोई न गा सके वह आशा गा सकती हैं

ध्यान से देखें तो आशा भोसले ने चाहे लगभग सभी संगीतकारों के साथ गीत गाए, लेकिन आशा की प्रतिभा को सबसे ज्यादा परखा और तराशा ओ पी नय्यर, रवि और आर डी बर्मन ने। दूसरा यह कि जब हम देश स्वतंत्र होने के बाद की दो शिखर की गायिकाओं की बात करते हैं तो लता मंगेशकर और आशा भोसले का नाम सर्वोपरि आता है। यह सच है सभी ने लता को आशा से ऊपर माना। यहाँ तक लता मंगेशकर को देश का सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न भी मिला। लेकिन इस सबके बावजूद कुछ अर्थों में आशा भोसले अपनी बहन लता मंगेशकर से आगे निकल गई थीं। एक तो यह कि लता मंगेशकर ने जहाँ कुल अधिकतम 7 हजार गीत गाए, वहीं आशा भोसले ने 10 हजार से अधिक गीत गाए। इसका एक कारण तो यह रहा कि आशा 90 बरस की होने पर भी गीत गाती रहीं, लेकिन लता जी की अंतिम प्रमुख फिल्में में 'वीर जारा' और 'रंग दे बसंती' रहीं जो 2004 और 2006 में रिलीज हुईं थीं।

इसके बाद वह फिल्म संगीत से दूर होती चली गईं। हालांकि लता जी ने बाद में वर्ष 2019 में एक गीत 'सौगंध मुझे इस मिट्टी की' भी गाया, जो उनका अंतिम गीत माना जाता है। आशा भोसले को अपने जीवन के अंतिम 15 वर्षों में भी बहुत से गीत गाने को मिलते रहे। साथ ही यह भी कि आशा भोसले के सुरों में इतनी विविधता रही कि उन्हें किस्म-किस्म के गीत गाने को मिलते रहे। उनके बारे में कहा जाता था- "जो गीत कोई न गा सके वह आशा गा सकती हैं।"

एक से एक गीत और अनेक सम्मान

आशा भोसले को अपनी संगीत यात्रा में सम्मान भी बहुत मिले। सन 2000 में आशा को जहाँ फिल्म जगत का सर्वोच्च सम्मान 'दादा साहब फाल्के' मिला, वहीं भारत सरकार ने वर्ष 2008 में पदमविभूषण भी प्रदान किया। साथ ही वर्ष 1981 में फिल्म 'उमरावजान' के गीत 'दिल चीज क्या है' के लिए और वर्ष 1987 में फिल्म 'इजाजत' के गीत 'मेरा कुछ सामान' के लिए आशा को सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायिका का राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला। फिल्मफेयर तो उन्हें कुल 9 बार मिला। साथ ही वह ग्रेमी पुरस्कार से नामित होने वाली पहली भारतीय गायिका रहीं। उन्हें एक बार वर्ष 1997 और दूसरी बार वर्ष 2006 में ग्रेमी के लिए नामांकित किया गया।

आश भोसले यूं तो सैंकड़ों गीत बेहद लोकप्रिय हुए, जिनमें गरीबों की सुनो वह तुम्हारी सुनेगा, आगे भी जाने न तू, पर्दे में रहने दो, सजना है मुझे सजना के लिए, मांग के साथ तुम्हारा, दीवाना हुआ बादल, चुरा लिया है तुमने, दम मारो दम, ये मेरा दिल, झुमका गिरा रे, पिया तू अब तो आजा, दो लफ्जों की है ये कहानी, आओ हुजूर तुमको, दिल चीज़ क्या है, रात बाकी, जब छाए मेरा जादू, हो जा रंगीला रे और शरारा-शरारा जैसे उनके कितने ही गीत, संगीत के स्वर्ग में ले जाते हैं। देखा जाए तो आशा भोसले अपनी संगीत विरासत में हजारों ऐसे गीत छोड़ गई हैं, जो दुनियाभर में उनको सदियों तक अमर बनाए रखेंगे।■

वर्ष - 2027

राजपत्रित और प्रतिबंधित अवकाश

राजपत्रित अवकाश

छुट्टी	तारीख	दिन
गणतंत्र दिवस	26 जनवरी	मंगलवार
ईद-उल-फितर	10 मार्च	बुधवार
होली	23 मार्च	मंगलवार
गुड फ्राइडे	26 मार्च	शुक्रवार
राम नवमी	15 अप्रैल	गुरुवार
महावीर जयंती	19 अप्रैल	सोमवार
ईद-उल-जुहा (बकरीद)	17 मई	सोमवार
बुद्ध पूर्णिमा	20 मई	गुरुवार
मोहर्रम	16 जून	बुधवार

छुट्टी	तारीख	दिन
स्वतंत्रता दिवस	15 अगस्त	रविवार
मिलाद-उन-नबी / ईद-ए-मिलाद	15 अगस्त	रविवार
जन्माष्टमी	25 अगस्त	बुधवार
महात्मा गांधी जयंती	02 अक्टूबर	शनिवार
दशहरा	09 अक्टूबर	शनिवार
दिवाली / दीपावली	29 अक्टूबर	शुक्रवार
गुरुनानक जयंती	14 नवंबर	रविवार
क्रिसमस दिवस	25 दिसंबर	शनिवार

प्रतिबंधित अवकाश

छुट्टी	तारीख	दिन
नववर्ष दिवस	01 जनवरी	शुक्रवार
मकर संक्रांति	14 जनवरी	गुरुवार
पोंगल / गुरु गोबिंद सिंह जयंती	15 जनवरी	शुक्रवार
बसंत पंचमी	11 फरवरी	गुरुवार
शिवाजी जयंती	19 फरवरी	शुक्रवार
गुरु रविदास जयंती	20 फरवरी	शनिवार
स्वामी दयानन्द सरस्वती जयंती	02 मार्च	मंगलवार
जमात-उल-विदा	05 मार्च	शुक्रवार
महा शिवरात्रि	06 मार्च	शनिवार
होलिका दहन	22 मार्च	सोमवार
ईस्टर रविवार	28 मार्च	रविवार
चैत्र शुक्लादि / गुड़ी पड़वा / उगादि / चेटी चंद	07 अप्रैल	बुधवार
वैसाखी	14 अप्रैल	बुधवार
वैशाखड़ी (बंगाल) / बाहाग बिहू (असम)	15 अप्रैल	गुरुवार
गुरु रवींद्र नाथ टैगोर जयंती	09 मई	रविवार

छुट्टी	तारीख	दिन
रथ यात्रा	05 जुलाई	सोमवार
पारसी नववर्ष	15 अगस्त	रविवार
रक्षाबंधन	17 अगस्त	मंगलवार
गणेश चतुर्थी	04 सितम्बर	शनिवार
ओणम या थिरुओणम दिवस	12 सितम्बर	रविवार
दशहरा (सप्तमी)	06 अक्टूबर	बुधवार
दशहरा (महा अष्टमी)	07 अक्टूबर	मंगलवार
दशहरा (महा नवमी)	08 अक्टूबर	शुक्रवार
महर्षि वाल्मीकि जयंती	15 अक्टूबर	शुक्रवार
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	18 अक्टूबर	सोमवार
नरक चतुर्दशी	28 अक्टूबर	गुरुवार
गोवर्धन पूजा	30 अक्टूबर	शनिवार
भाई दूज	31 अक्टूबर	रविवार
छठ पूजा	04 नवंबर	गुरुवार
गुरु तेग बहादुर शहीदी दिवस	24 नवंबर	बुधवार
हजरत अली जयंती	12 दिसंबर	रविवार
क्रिसमस पूर्व संध्या	24 दिसंबर	शुक्रवार

अपना ज्ञान टटोलें

1. हाल ही में रेल मंत्री ने मुंबईकरों के लिए कितनी नई एसी ईएमयू रेक के निर्माण की घोषणा की है?

(क) 235 (ख) 237

(ग) 236 (घ) 238

2. बांग्लादेश के लिए रेलवे की किस उत्पादन इकाई ने एलएचबी कोचों की रेक तैयार कर भेजी है?

(क) RCF (ख) ICF

(ग) MCF (घ) RWF

3. हाल ही में सूरत-अहमदाबाद के बीच किस ट्रेन से जीवित हृदय का सफल परिवहन किया गया?

(क) अमृत भारत (ख) वंदे भारत

(ग) शताब्दी (घ) तेजस

4. सराहनीय सेवा के लिए कितने RPF/RPSF जवानों को राष्ट्रपति पदक से सम्मानित किया गया है?

(क) 13 (ख) 14

(ग) 15 (घ) 16

5. वित्त वर्ष 2026-27 में जुलाई 2026 तक कितने प्रतिशत बजट का उपयोग किया जा चुका है?

(क) 37% (ख) 39%

(ग) 35% (घ) 36%

6. ट्रेनों के सुरक्षित संचालन के लिए कितने कि.मी. रेल ट्रैक पर सुरक्षा बाड़ लगाई गई है?

(क) 17,600 km (ख) 15,500 km

(ग) 13,400 km (घ) 19,700 km



7. अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत जम्मू-कश्मीर के कितने स्टेशनों को शामिल किया गया है?

(क) 4 (ख) 5

(ग) 6 (घ) 3

8. भारतीय रेल के पास कितनी एक्सीडेंट रिलीफ ट्रेनें (ARTs) हैं?

(क) 176 (ख) 177

(ग) 175 (घ) 174

9. देश भर में कितने स्थानों पर रेल नीर संयंत्र कार्यरत हैं?

(क) 18 (ख) 20

(ग) 19 (घ) 21

10. ट्रेनों की लगभग वास्तविक समय की जानकारी किस ऐप से प्राप्त की जा सकती है?

(क) NTES (ख) RailMadad

(ग) RailOne (घ) HRMS

सही उत्तर

1. (घ) 2. (क) 3. (ख) 4. (ग) 5. (ख) 6. (घ) 7. (क) 8. (ख) 9. (ग) 10. (क)

रेल, पर्यटन व साहित्य को एक साथ संजोए
रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एकमात्र हिंदी मासिक पत्रिका



भारतीय रेल

अब ई-पत्रिका भी उपलब्ध

की सदस्यता
अब ऑनलाइन भी उपलब्ध

www.irctctourism.com/IRBRmag/#/home/hn

क्यू आर कोड स्कैन करें

सदस्यता शुल्क

मद		ऑफलाइन सदस्यता शुल्क (₹)	ऑनलाइन सदस्यता शुल्क (₹)	ई-पत्रिका सदस्यता शुल्क (₹)
एक प्रति (मासिक अंक)		20	-	-
एक प्रति (विशेषांक)		70	-	-
वार्षिक सदस्यता (सर्व साधारण)	एक वर्ष	250	263	130
	दो वर्ष	460	483	230
	तीन वर्ष	675	709	340
वार्षिक सदस्यता (रेलकर्मी)	एक वर्ष	200	210	100
	दो वर्ष	370	389	190
	तीन वर्ष	540	567	270
वार्षिक सदस्यता (विदेशी) सी-मेल द्वारा		1, 250	1, 313	----
वार्षिक सदस्यता (विदेशी) एयर-मेल द्वारा		2, 500	2, 625	----

(सदस्यता शुल्क में वार्षिक विशेषांक भी शामिल है।)

सदस्यता फॉर्म

नाम .....

पता .....

..... पिन कोड .....

मोबाइल ..... ई-मेल .....

पहचान पत्र संख्या (यदि रेल कर्मचारी है तो): ..... वैधता की तारीख .....

ऑफलाइन भुगतान का माध्यम

I) एम.ओ./आई.पी.ओ/डी.डी. व्यापार प्रबंधक के पक्ष में कमरा नं0 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली-110001
II) नगद जमा कराने हेतु : कमरा नं0 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली-110001

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: व्यापार प्रबंधक, कमरा नं. 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली-110 001,
टेलीफोन: 011-47845089, 45089 (रेल) **bmpr310rb@gmail.com**



विज्ञापन दरें

विवरण	सामान्य अंक (मासिक दरें)		विशेष अंक (वार्षिक अंक)
	सामान्य दरें	अनुबंधित दरें*	
बैक कवर	₹22,000	₹20,000	₹25,000
सेकेण्ड कवर	₹19,000	₹17,000	₹22,000
थर्ड कवर	₹19,000	₹17,000	₹22,000
पूरा पृष्ठ (विशेष स्थिति, जैसे टेक्स्ट के बाद में)	₹16,000	₹15,000	₹18,000
पूरा पृष्ठ	₹15,000	₹14,000	₹17,000
आधा पृष्ठ	₹9,000	₹8,000	₹11,000
सेंटर स्प्रेड (दो पेज इकट्ठे)	₹28,000	₹25,000	₹32,000

* तीन महीने या इससे अधिक अवधि के लिए विज्ञापन प्रकाशित करवाने का अनुबंध करने पर लागू।

- उपरोक्त दरों के साथ 5% जीएसटी, आइजीएसटी प्राप्य होगी।

भुगतान का माध्यम

'व्यापार प्रबंधक, भारतीय रेल, नई दिल्ली'
के पक्ष में डिमाण्ड ड्राफ्ट, चेक लिखें अथवा एनईएफटी के द्वारा

तकनीकी विवरण

पत्रिका का आकार : 28X20.5 सेमी, छपाई क्षेत्र : 23X16.5 सेमी

अधिक जानकारी केलिए संपर्क करें

संजीव गुप्ता, व्यापार प्रबंधक
310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली-110001
टेलीफोन : 011- 47845378, 23382531, email : bmpr310rb@gmail.com, **92205 05349**


पीढ़ियों का भरोसा, भविष्य के लिए तैयार
हर पीढ़ी के लिए भरोसेमंद सुरक्षा
1884 से विश्वसनीय, डाक जीवन बीमा परंपरा के विश्वास को आधुनिक परिवारों की आवश्यकताओं के साथ जोड़ता है। जीवन सुरक्षा, दीर्घकालिक बचत और भरोसेमंद बोनस लाभों के माध्यम से, PLI आप के आज को आर्थिक रूप से सुरक्षित रखते हुए कल की बेहतर योजना बनाने का विश्वास देता है।
पीएलआई के तहत पॉलिसी
» संपूर्ण लाइफ अश्योरेन्स (सुरक्षा)
» एंडोमेंट अश्योरेन्स (संतोष)
» ज्वाइंट लाइफ अश्योरेन्स (युगल सुरक्षा)
» चिल्ड्रन पॉलिसी (बाल जीवन बीमा)
» कनवर्टिबल संपूर्ण लाइफ अश्योरेन्स (सुविधा)
» एंटीसिपेटेड एंडोमेंट अश्योरेन्स (सुमंगल)
लाभ और विशेषताएँ: बीमा सीमा ₹50 लाख तक। ऋण सुविधा उपलब्ध। आयकर में छूट
भुगतान करने के विकल्प: ऑनलाइन: www.indiapost.gov.in। भारत के किसी भी डाक घर में। किसी भी यूपीआई ऐप के द्वारा
पीएलआई – कम प्रीमियम. ज्यादा बोनस. इससे बेहतर कुछ नहीं
www.indiapost.gov.in
पॉलिसी लेने के लिए अपने नजदीकी डाकघर से संपर्क करें या हमारे टोल-फ्री नंबर - 18002666868 पर कॉल करें।
PLI

IRIS Certification
AAR M-1003
Daulat Ram ENGINEERING



Driver Cab
Passenger Coaches

ROOF MOUNTED AIR CONDITIONERS FOR VANDE BHARAT

10/2, NH-12, Simrai, District Raisen, 464993, Near Bhopal, India
+91 7480 350001
+91 8889983336
info@daulatram.org
www.daulatram.com



देश-विदेश के हर क्षेत्र में फैले प्रवासी राजस्थानियों तक ई पेपर के माध्यम से सर्वाधिक पहुंचने वाला राजस्थान का अपना अखबार ई-पेपर लिंक Epaper.dainikjaltedeep.com से नि:शुल्क प्राप्त करें।

दैनिक
जलते दीप
जोधपुर-जयपुर से प्रकाशित

सकारात्मक खबरों के साथ आपका अपना अखबार

-56वर्षों से विश्वसनीयता की कसौटी पर खरा अखबार
-प्रतिदिन विषय विशेष पर ज्ञानवर्द्धक, पठनीय सामग्री
-राजस्थान के सभी संभागों से जुड़े जिलों के समाचार
-देश-विदेश में फैले प्रवासी राजस्थानियों के समाचार
-धर्म-आध्यात्म, खेल, वाणिज्य सहित और भी बहुत कुछ

नहीं छापते हैं इस तरह के विज्ञापन

'दैनिक जलते दीप' एवं 'माणक' में जनवरी 1997 से जर्दा, गुटखा, तम्बाकू, पान मसाला, पजल्स, ऑफसीन अभद्र, अपसंस्कृति सूचक एवं पाठकों को भ्रमित करने वाले विज्ञापन नहीं छापते हैं।

देस रा खूणा-खूणा में फैल्योड़ा राजस्थानियां सारू मातृभाषा राजस्थानी मांय

अेकमात्र पारिवारिक राजस्थानी मासिक

माणक

आपरा नजदीकी बुक स्टॉल सूं ताजो अंक खरीदो सा या म्हाणी वेबसाईट सूं ऑनलाईन सबस्क्राइब करावो सा

हरेक अंक राजस्थानी भाषा, साहित्य, संस्कृति नै समर्पित, रंगरंगीला चितरामां, ज्ञानवर्धक, रोचक रचनावां रौ संग्रै

विद्यादान/महादान
राजस्थान रै किणी ई स्कूल रा पुस्तकालय में 'माणक' रा ३३ सजिल्द सेट भेंट कर'र विद्यादान रौ लाभ उठावो सा!
कीमत मात्र ११ हजार रु.

'माणक' री हर अंक आप डिजिटल रूप में आखै संसार रा किणी ई छेत्र में विराजेड़ा इंटरनेट माथै खरीद सकी हो सा। अबै Magzter.com माथै 'माणक' सर्च करावो अर आपरी पसंदीदी अंक सबस्क्राइब कर'र घरै बैठां माणक बांची अर बंचावो सा। आप आपरा, किणी मित्र, रिस्तेदार नै ई 'माणक' भेंट कर सकी हो।

संपर्क करें

माणक प्रकासण जलते दीप भवन, मानजी का हत्था, पावटा, जोधपुर-342006 (फोन 0291-2546896, 2556900)
ईमेल- : info@manak.org jaltedeep.mdoffice@gmail.com वेबसाइट : www. manak.org dainikjaltedeep.com

आवश्यकता 'दैनिक जलते दीप' एवं 'माणक' के लिए सभी प्रान्तों के अप्रतिनिधित्व क्षेत्रों में मार्केटिंग प्रतिनिधि के लिए आकर्षक कमीशन एवं मानदेय पर आवेदन करें। 'दैनिक जलते दीप' मानजी का हत्था, पावटा, जोधपुर-342006

पंजीयन संख्या : दिल्ली पोस्टल नं. डी.एल. (एन.डी.)-11/6031/2024-25-2026
आर.एन.आई नं. 14427/1960
ISSN 2457-0001
दिनांक 3-4 को प्रकाशित तथा दिनांक 6-7 को प्रेषित

Megger

Keeping railway cables on track

When cable faults stop trains,
every minute counts.



The STX40 is the most powerful portable fault location system in its class – giving railway engineers van-level performance without the van

- Industry-leading accuracy with integrated TDR and ARM®, ICE, DECAY methods
- Surging up to 32 kV / 2,000 J for fast, decisive pinpointing
- High-frequency burn mode ensures success, even on PILC cables
- Lightweight yet tough: IP43 protection and proven reliability in the field

Scan the QR code to book a demo and see how STX40 keeps your network moving.

मुद्रक व प्रकाशक : **संजीव गुप्ता** द्वारा रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) के लिए मैसर्स विबा प्रेस प्रा. लि., सी-66/3, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-2, नई दिल्ली-110020 में मुद्रित व 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। संपादक : **योगेश अवस्थी**